

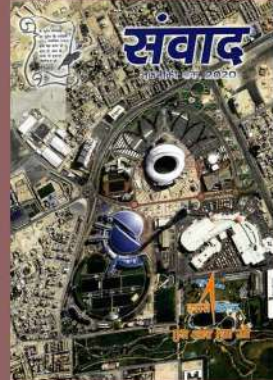
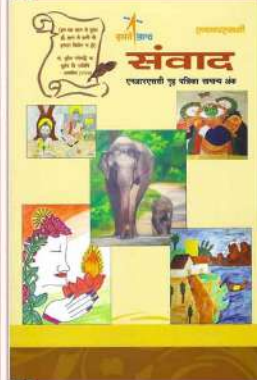
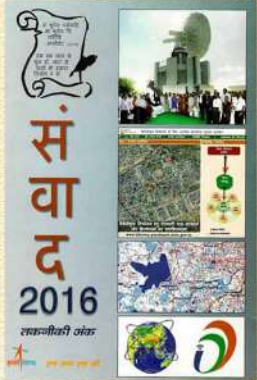
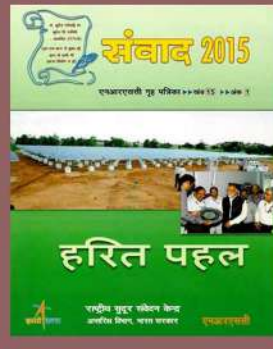
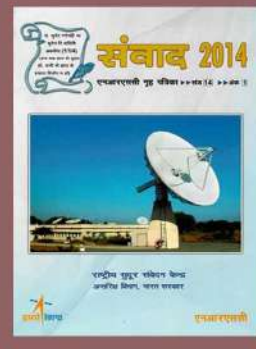
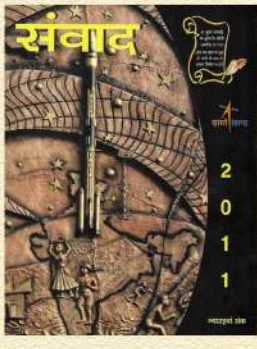
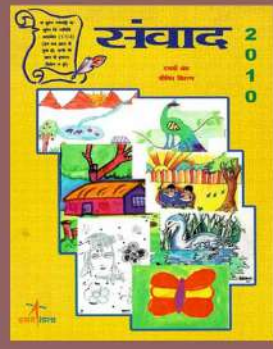
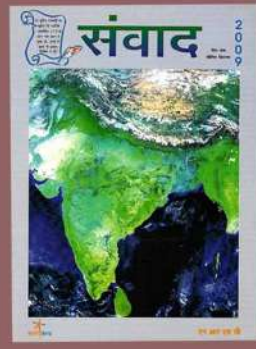
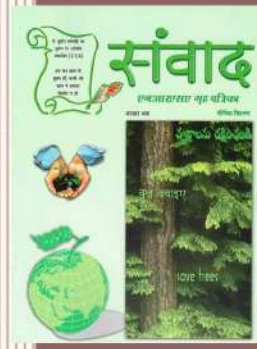
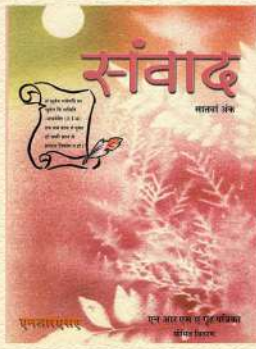
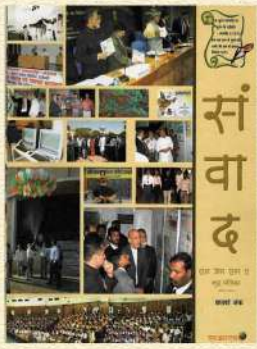
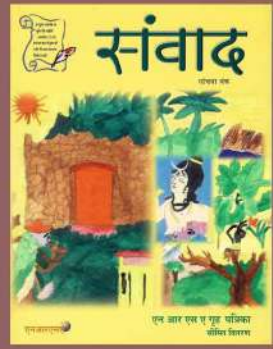
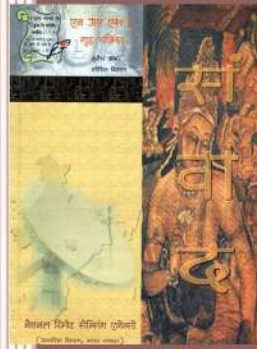
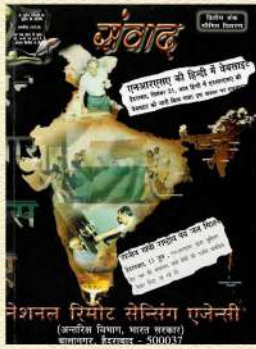
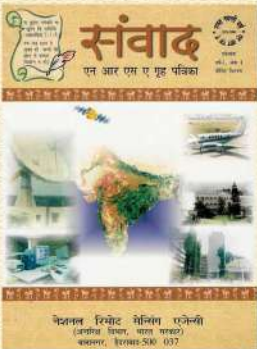


इसरो **इसरो**

20 वर्ष

संवाद

अंक - 2, वर्ष - 2020



एन आर एस सी



20 वर्ष

संवाद

अंक - 2. वर्ष - 2020

संरक्षक

श्री शांतनु चौधुरी
निदेशक व अध्यक्ष, राकास

सलाहकार

विंग कमांडर (से.नि.) विभास सिंह गुप्ता
नियंत्रक

मुख्य संपादक

श्री विनोद एम बोथले

संपादक

श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना

संपादक मंडल

डॉ. एन. अपर्णा
श्रीमती भावना सहाय
श्रीमती जया सक्सेना
श्री घेटिया सत्येशकुमार जी.
श्री ओझा अनिल कुमार
श्री रामराज रेड्डी

आवरण एवं पत्रिका डिज़ाइन

श्री रामराज रेड्डी

आवरण पृष्ठ में संवाद के पहले अंक से लेकर सभी अंक समायोजित है एवं पार्श्व पृष्ठ पर विविध अवसरों पर बच्चों द्वारा की गई कलाकृतियां हैं।

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद-500037

इस अंक में...

विषय	पृष्ठ सं.
1. आमुख	3
2. संदेश	4
3. संपादकीय	5
4. महत्वपूर्ण घटनाएं	6
5. उपलब्धियां	12
6. सोलिस विजेता	13
7. सायोनारा	14
8. शैशव काल से यौवन की दहलीज पर संवाद	17
9. क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण परिसर में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के अभिनव प्रयास	19
6. कहां गए बचपन के वो दिन	24
7. भारत भाग्यविधाता-मानसून	25
8. जज़बाती अल्फाज	27
9. विचित्र परीक्षा	28
10. मैं कौन हूं	34
11. मेरी हिंदी	34
12. विक्रम साराभाई कार्यक्रम-अजमेर-एक अविस्मरणीय अनुभव	35
13. भारत की महान संस्कृति की एक छोटी सी झलक	40
14. बेसन के लड्डू	43
15. कभी सोचा न था	43
16. पूर्णिमा का महत्व	44
17. भारत चीन द्विपक्षीय संबंध -भारत की सुरक्षा परिषद	46
18. अनुभव कुछ खट्टे कुछ मीठे	48
19. दुनिया के 10 खतरनाक वायरस	51
20. मां का दूध	54
21. अंडमान—एक अद्भुत यात्रा	55
22. मेरा शौक	59
23. सपनों का मूल्य	60

*प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो। संवाद के प्रकाशन में संपादक मंडल के साथ-साथ एनआरएससी की मुद्रण सुविधा, फोटो संसाधन समूह का भी विशेष योगदान है। वर्ष के दौरान एनआरएससी की गतिविधियों का फोटो संग्रह फोटो संसाधन समूह द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अतः संवाद, मुद्रण सुविधा एवं फोटो संसाधन के प्रति आभारी है। पत्रिका पूर्ण रूप से हिंदी अनुभाग द्वारा तैयार कर आंतरिक रूप से मुद्रित की गई है।



श्री शांतनु चौधरी
निदेशक व अध्यक्ष
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संवाद का यह बीसवां अंक अपने आप में अनूठा है। कोविड-19 की इन विषम परिस्थितियों में भी हम राजभाषा के प्रचार-प्रसार को उसी गति के साथ आगे बढ़ाना चाहते हैं जैसे अब तक करते आए हैं। आपको यह बताते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है कि संवाद ने 2001 से निरंतर अपनी यात्रा का हर चरण पार करते हुए सफलतापूर्वक दो दशकों की अपनी यात्रा पूरी की है। हर वर्ष संवाद के साथ जुड़ने वाले लेखकों की रूचि को देखते हुए हमने इसे दो अंकों में तैयार करना आरंभ किया। "सामान्य अंक" एवं "तकनीकी अंक" जिससे संवाद की उपादेयता और भी बढ़ जाती है। अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत कार्यरत एनआरएससी अपने उत्तरदायित्वों के प्रति कटिबद्ध है। हमें आंकड़ा अर्जन, आंकड़ा संसाधन एवं आंकड़ा वितरण संबंधित गतिविधियां सफलतापूर्वक पूर्ण करने में खुशी होती है। हम सदैव जनता तक अपेक्षित सेवाएं पहुंचाने के लिए अग्रसर रहते हैं। वर्तमान परिस्थितियों में भी देश में जहां कहीं वर्षा के कारण बाढ़ जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हुईं वहां के आंकड़े वांछित क्षेत्रों व एजेंसियों तक पहुंचा कर आम जनता की सुविधा व उनकी सेवा करने का प्रयास किया है।

यदि आप दो दशक पहले के एनआरएसए और वर्तमान एनआरएससी को देखें तो अभूतपूर्व परिवर्तन नजर आएगा। खासकर, हमारी कार्यक्षमता, ढांचागत सुविधाओं और उत्पादों की गुणवत्ता में काफी परिवर्तन आया है। हमारी कार्य क्षमता में विस्तार के साथ-साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती जा रही है। आज देश के प्रमुख संस्थान प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण शेष संसाधनों के संवर्धन की ओर ध्यान देना चाहते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से हमारे बदलते पर्यावरण में मौसम का मिजाज भांपने और इसके साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के मानचित्रण, शहरी एवं ग्रामीण नियोजन, भूजल परीक्षण, भूकंपीय क्षेत्र का निर्धारण, बंजर भूमि संवर्धन, भू-संपदा मानचित्रण, सूखा, बाढ़, अकाल आकलन, कृषि संसाधन प्रबंधन, जलाशयों का आकलन, पेयजल नियोजन, आपदा प्रबंधन में सहायता, मानसून, बाढ़ आदि का पूर्वानुमान और सुदूर संवेदन के अन्य उपयोगों के लिए हमारी ओर विश्वसनीय दृष्टि से देख रहे हैं। उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए हमें किसी प्रहरी की तरह हर परिस्थिति में अपनी कर्मभूमि पर तैनात रहना होगा। यह तो हम सभी जानते हैं कि इस वैश्विक महामारी ने हम सभी के जीवन का तरीका ही बदल कर रख दिया है। आज इन वर्तमान परिस्थितियों में भी हम हर संभव प्रयास करते हैं कि हम आम जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकें।

हम एनआरएससी में शोध व टेक्नोलॉजी के साथ-साथ राजभाषा को सदैव जोड़ने का प्रयास करते हैं। लोगों के मन से यह बात निकाल देना चाहते हैं कि हिन्दी को टेक्नोलॉजी के साथ-साथ आगे नहीं ले जाया जा सकता है। अपने हर परिसर में हम समान स्तर पर हिन्दी के प्रयोग को आगे बढ़ाते हैं। मुझे आशा है कि हम सब मिलकर समर्पित एवं संयुक्त प्रयासों से आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए राजभाषा के प्रयोग को नए आयाम दे सकेंगे। मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से यह पत्रिका जीवंत है।

संभवतः संपादक मंडल और भी नए अंकों के साथ संवाद को नए स्तर पर ले जाएगा।

शुभकामनाओं सहित।

शांतनु

(शांतनु चौधरी)

निदेशक एवं अध्यक्ष, राकास (एनआरएससी)

दिनांक-14.09.2020



विग कमांडर (से.नि.)
विभास सिंह गुप्ता
नियंत्रक

संदेश

संवाद एनआरएससी की गृह पत्रिका ही नहीं बल्कि हमारी पहचान है। हमारे कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गंभीरता से लेते हुए एनआरएससी के सभी परिसरों में चाहे वे हैदराबाद में हों या उसके बाहर देश के किसी अन्य क्षेत्र में हों, सभी जगह राजभाषा कार्यान्वयन को सुचारू रूप से सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाते हैं। राजभाषा नियमों के आधार पर प्रशासनिक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्रों में भी राजभाषा कार्यान्वयन पर ध्यान दिया जाता है। वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोग भी यथासंभव अपने कार्यस्थलों में इसके प्रयोग पर ध्यान देते हैं। इसी का परिणाम है कि हमारे आंकड़ा संसाधन क्षेत्र से जारी होने वाली मासिक प्रगति रिपोर्ट द्विभाषी रूप में तैयार कर प्रस्तुत की जाती है।

हमारे पांच क्षेत्रीय कार्यालय क, ख एवं ग तीनों क्षेत्रों में आते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक रिपोर्ट में हर क्षेत्र के लिए विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। हमारा यह प्रयास होता है कि हम हर क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्यों को शत प्रतिशत अर्जित करें। जहां कहीं हमें लगता है कि हम लक्ष्य से थोड़ा पीछे रह गए हैं, वहां भी सुधार करने से पीछे नहीं हटते हैं। मुझे यह कहते हुए अतिशयोक्ति नहीं लगती है कि एनआरएससी की पत्रिका गत 20 वर्षों से निरंतर निर्धारित समय पर ही जारी की जाती रही है।

आरंभ में इसका एक ही अंक तैयार किया जाता था लेकिन लेखों की भरमार और पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने के उद्देश्य से इसके दो अंक जारी किए जाने लगे। सामान्य अंक सभी को अपनी कलाएं दर्शाने के लिए एक बड़ा ही विचित्र मंच प्रदान करता है तो तकनीकी अंक में कर्मचारियों व उनके परिवार के सदस्य अपनी तकनीकी प्रतिभा दिखाने से पीछे नहीं हटते हैं। आगे भी हमारा प्रयास यही होगा कि हम निरंतर संवाद की गुणवत्ता को बढ़ाते हुए उसके स्तर में सुधार लाने का प्रयास करें। लेकिन यह एक मिले-जुले प्रयास से ही संभव है। पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि जहां कहीं आपको लगता है कि संवाद की गुणवत्ता को और सुधारने के लिए कुछ विशेष उपाय किए जा सकते हैं, तो आपके सुझावों का स्वागत है।

संवाद हर वर्ष ऐसे ही अपने पाठकों तक पहुंचती रहे, इसी आशा के साथ संपादक मंडल को मेरी शुभकामनाएं...

विभास सिंह गुप्ता

(विभास सिंह गुप्ता)

नियंत्रक, एनआरएससी

दिनांक-14.09.2020

20 वर्ष
संवाद
अंक - 2. वर्ष - 2020



श्री विनोद एम. बोथले
मुख्य संपादक

मुख्य संपादक की कलम से....

एनआरएससी की गृहपत्रिका संवाद का बीसवां अंक आप को सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को सृजनात्मक मंच प्रदान कर राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है। इस वर्ष संवाद अपने अस्तित्व के 20 वर्ष पूरे कर रहा है। इन बीस वर्षों में संवाद के हर अंक को नया रूप देने का प्रयास किया जाता रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में जहां विश्व और भारत डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है, हमने भी पत्रिका को इस बार ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह तो सर्वविदित है कि कोरोना वायरस ने लोगों के जीने का तरीका ही बदल दिया है। इन दिनों कार्यालय में काम करने के तरीके का भी कायापलट हो चुका है। डिजिटल ऑफिस के कारण वर्क फ्रॉम होम कल्चर अब सरकारी कार्यालयों में भी आ चुका है। हर कार्यस्थल डिजिटल होता जा रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि हमारी पत्रिका का डिजिटलीकरण भी इसे असीमित पाठकों तक पहुँचाएगा।

हर अंक की तरह इस अंक में भी साहित्य की विविध विधाओं को शामिल किया गया है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि वर्तमान परिस्थितियों में भी लोग साहित्य की रचना में रुचि रखते हैं।

मेरा विश्वास है कि आप सभी डिजिटल अंक से आनंदित होंगे और इसे पढ़ने में रुचि दिखाएंगे। आप सभी से अनुरोध है कि अपने बहुमूल्य सुझावों से पत्रिका को और भी ज्ञानवर्धक बनाएं। मैं पत्रिका के सभी लेखकों को बधाई देता हूँ।

विनोद बोथले

(विनोद एम. बोथले)

दिनांक-14.09.2020

अध्यक्ष, संपादक समिति, संवाद

20 वर्ष
संवाद
अंक - 2, वर्ष - 2020



राष्ट्रीय सदर संवेदन केन्द्र
हिन्दी दिवस -2019 के अवसर पर संवाद का विमोचन



डॉ. राजश्री बोथले द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन



श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत जनसंपर्क प्रभाग



श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत स्थापना प्रभाग



राजभाषा समारोह-2019 के दौरान सभी कार्मिकों को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय



प्रयोक्ता संपर्क बैठक के दौरान संवाद के तकनीकी अंक का विमोचन



प्रयोक्ता संपर्क बैठक के दौरान भूमि निग्रीकरण एटलस का विमोचन

सहस्रपूर्ण घटनाएं



विक्रम साराभाई शताब्दी समारोह



विक्रम साराभाई शताब्दी समारोह प्रदर्शनी



सतर्कता जागरूकता सप्ताह



स्वच्छता कार्यक्रम



विश्व हिन्दी दिवस 2020



विश्व हिन्दी दिवस 2020 - जनसंपर्क कार्यक्रम

सहत्वपूर्ण घटनाएं



जीडिमेट्ला परिसर—स्वतंत्रता दिवस



बालानगर परिसर—स्वतंत्रता दिवस



शादनगर परिसर—स्वतंत्रता दिवस-2020



विश्व हिन्दी दिवस-2020—जनसंपर्क कार्यक्रम



विश्व हिन्दी दिवस 2020—समापन समारोह



पूर्व अध्यक्ष, इसरो द्वारा एनआरएससी का दौरा



राजभाषा कार्यगोष्ठी जिसमें सभी आरआरएससी वीसी में शामिल हुए



राजभाषा समारोह—2019
एनआरएससी में राजभाषा समारोह के अंतर्गत आयोजित विविध प्रतियोगिताएं, कवि सम्मेलन एवं बच्चों व परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित कार्यक्रम की झलक दर्शायी गई है। पेंटिंग करते बच्चे, टंकण प्रतियोगिता, कविता पाठ, गायन प्रतियोगिता, समाचार पाठन आदि।

आरआरएससी - दक्षिण, बेंगलुरु

सहत्वपूर्ण घटनाएं



आरआरएससी (दक्षिण) में योग दिवस



1 नवंबर 2019 को कन्नड़ राज्योंसव



सतर्कता दिवस



कन्नड़ राज्योंसव



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रंगोली



गणतंत्र दिवस



महिला दिवस

"संवाद"- एनआरएससी गृह-पत्रिका

आरआरएससी-पश्चिम, जोधपुर



आरआरएससी (पश्चिम) में स्वतंत्रता दिवस



गणतंत्र दिवस

अहत्त्वपूर्ण घटनाएं



आरआरएससी (पश्चिम) में सतर्कता जागरूकता सप्ताह



आरआरएससी (पश्चिम) में आयोजित हिंदी पखवाड़ा, विश्व हिंदी दिवस एवं हिंदी कार्यशाला की झलकियां

उपलब्धियां



डॉ. चिदानंदप्पा

वैज्ञानिक/अभियंता-एसई

क्षेत्र-टीएसडी/एसआईएसजी/एमएसए

जेएनटीयू हैदराबाद से यांत्रिकी अभियांत्रिकी में पीएचडी प्राप्त करने के लिए आपको हार्दिक बधाई। आपने उच्च शुद्ध क्रिस्टलीय GaSb और InSb सामग्री और उनके अभिलक्षण की तैयारी के लिए संसाधन प्रणाली का विकास विषय पर पीएचडी अर्जित की।



मास्टर शिवाजय सक्सेना

माता -श्रीमती जया सक्सेना

पिता - डॉ. आशुतोष सक्सेना

कक्षा-10 , केंद्रीय विद्यालय-2, डुंडीगल

आपको एवं आपके माता-पिता को अर्जित उपलब्धियों पर हार्दिक बधाई।



मास्टर श्रेयान सक्सेना

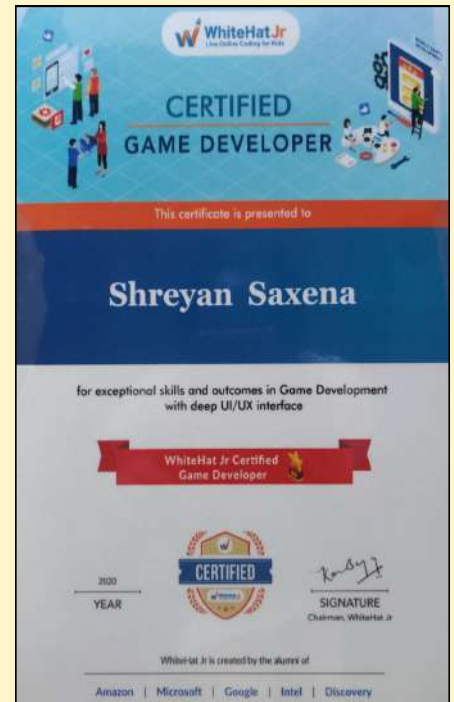
माता -श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना

पिता - श्री पंकज सक्सेना

कक्षा-5 , फॉस्टर बिल्लाबाँग हाई

इंटरनेशनल स्कूल, साकेत

आपको एवं आपके माता-पिता को अर्जित उपलब्धियों पर हार्दिक बधाई।



सोलिस (अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना) विजेता



डॉ.राजश्री विनोद बोथले
विशेष पुरस्कार



श्री संतोष पोलोजु
प्रथम पुरस्कार



श्री एस. पद्मानाभा
प्रथम पुरस्कार



श्री डाला राम चौधरी
द्वितीय पुरस्कार



श्री सुदीप कुमार सिंह
द्वितीय पुरस्कार



श्री शेख इंतियाज
द्वितीय पुरस्कार



श्री के कार्तिक
द्वितीय पुरस्कार



श्री सी एच श्रीकांत
द्वितीय पुरस्कार



श्री कानू राय
तृतीय पुरस्कार



श्रीमती सविता ए
तृतीय पुरस्कार



श्रीमती संध्या पी
तृतीय पुरस्कार



केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयो/विभागों में कार्यरत कर्मचारियों को अपना मूल कार्य हिंदी में करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू है। अंतरिक्ष विभाग/इसरो के सभी केन्द्रों में इसी प्रकार की प्रोत्साहन योजना सोलिस (अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना) के नाम से लागू है। इस योजना का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। उपरोक्त कर्मचारियों के योगदान से परिसर में राजभाषा कार्यान्वयन सुदृढ़ हो रहा है। सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई तथा अन्य कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे भी अपने कार्य स्थल में राजभाषा का प्रयोग करते हुए एनआरएससी एवं आरआरएससी के सभी परिसरों में राजभाषा कार्यान्वयन को और सशक्त बनाएं।



“भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।”

- श्री. नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)

साथीनाथा



जनार्धन रेड्डी पी
30.09.2019



विजया कुमारी वाई
30.09.2019



ललिता एस
30.09.2019



चंद्रय्या बी
31.10.2019



शशिधरन एम
30.11.2019



नागुलु जी एन
30.11.2019



रामचंद्र एमएल
30.11.2019



सुब्बाराव टी
31.12.2019



श्रीनिवास राव सीएच
31.01.2020



रामुलू के
31.01.2020



राजा मोहन आचारी पी
31.01.2020



नीलवेणी आर
29.02.2020



करुणाकर जी
29.02.2020



पद्मावती ए
31.03.2020



रामुलू के
31.03.2020



वाई एम एस रवि
31.03.2020



प्रेमा एस
31.03.2020



वसंतन टी आर
31.03.2020



लिंगम टी
30.04.2020



पेरुमल्ला स्वामी जी
30.04.2020



आर राजकुमार
30.04.2020



कृष्णराव पी वी
30.04.2020



जय चंद्रय्या बी
31.05.2020



शिव रामा शेटी
31.05.2020



उदय राज
31.05.2020

साथीनाथा



सासमल एस के
31.05.2020



सतय्या के
30.06.2020



विजयन डी
30.06.2020



स्वामी जी
30.06.2020



दुर्गम्मा बी
30.06.2020



विश्वनाथम ए
31.07.2020



रंगनाथ टीएनसी
31.07.2020



भानुमूर्ति वी
31.07.2020



शास्त्री सीएपी
31.08.2020



साईद्वनाथ जोत्रा
31.08.2020



रामलिंगेश्वर राव टी
31.08.2020

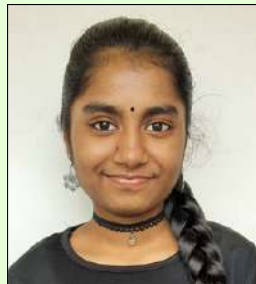
उपर्युक्त पदाधिकारियों ने दीर्घ काल तक एनआरएससी को अपनी समर्पित सेवाएं उपलब्ध कराईं। इन में से कई अधिकारी एनआरएससी की कायापलट के साक्षी बने तो कई अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा के प्रसार को आगे बढ़ाने वाले प्रहरी बने। इन सभी को स्वस्थ, आनंद दायक भावी दिनों की हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं



सुश्री टी. सुचित्रा

सुपुत्री श्री. टी. सुधाकर राव ने 10 वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप भाष्यम हाई स्कूल, एस आर नगर की छात्रा हैं।



सुश्री टी. श्रीवल्ली उमा

सुपुत्री श्री. टी. एस. विश्वनाथम ने 10 वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप लोटस लैप हाई स्कूल, सरूर नगर की छात्रा हैं।



सुश्री ए. शाहिदा

सुपुत्री श्री. के. अब्दुल हकीम ने 10 वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में 99 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप पल्लवी मॉडल स्कूल, मनोविकास नगर की छात्रा हैं।

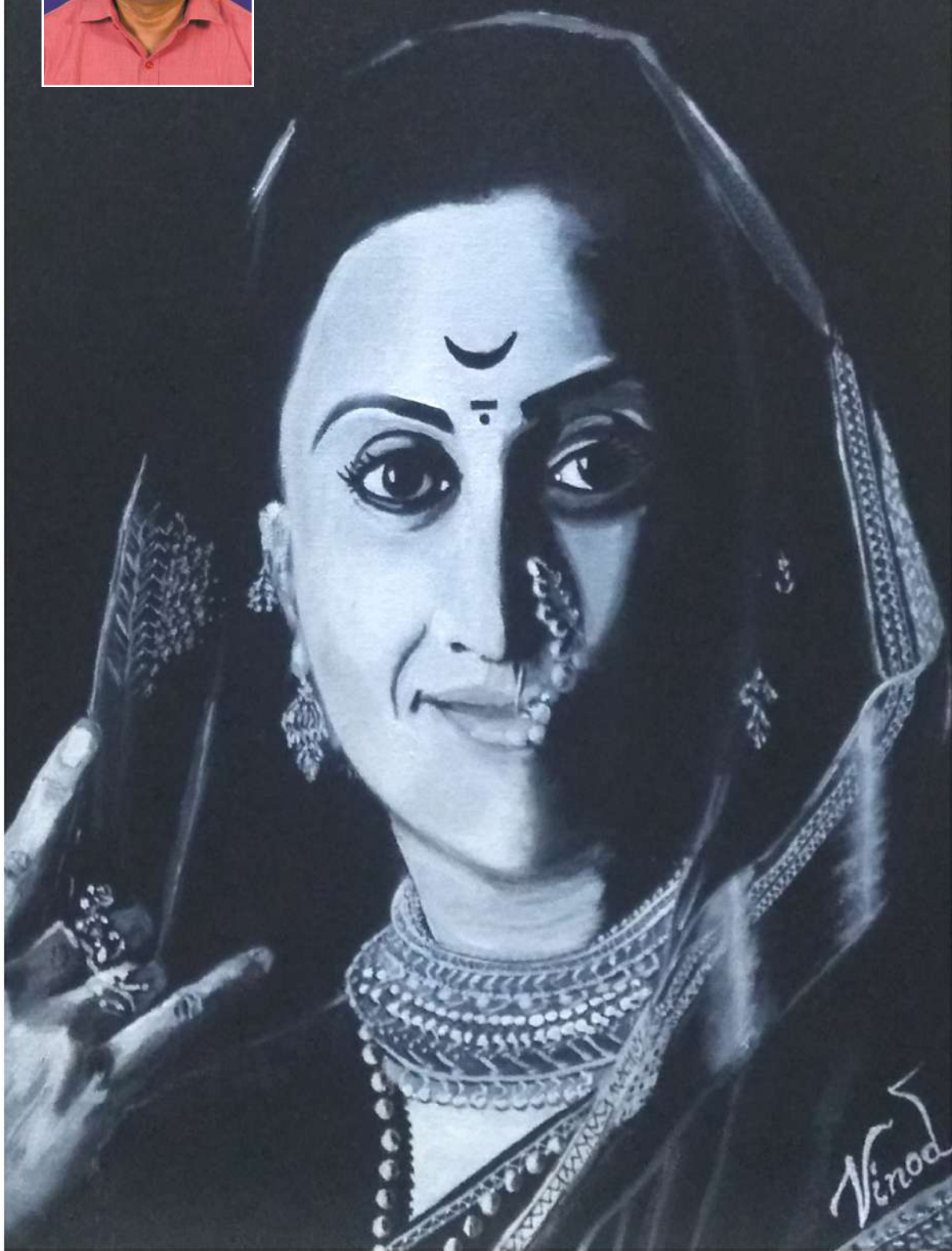


मास्टर शिवाजय सक्सेना

सुपुत्र-श्रीमती जया सक्सेना ने 10 वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप केंद्रीय विद्यालय—2, डुंडीगल के छात्र हैं।



विनोद एम बोथले, उप-निदेशक, डीपीए



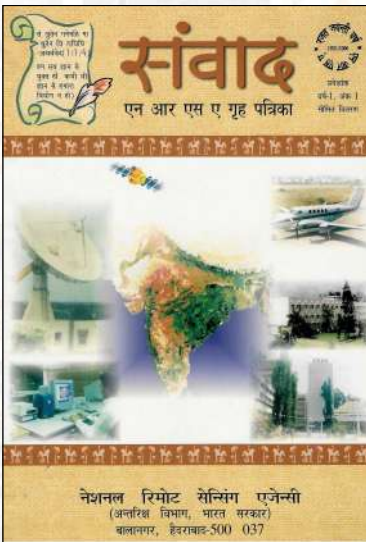
शैशवकाल से यौवन की दहलीज तक "संवाद"

✍ राजेंद्र सिंह कंडारी, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, (सेवानिवृत्त)

वर्ष 2001 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एन.आर.एस.सी. गृह पत्रिका "संवाद" के प्रवेशांक का विमोचन एक अभूतपूर्व आयोजन था। उस समय एन.आर.एस.सी. इसरो/अंतरिक्ष विभाग का एक मात्र केन्द्र था जिसने न केवल पूर्ण रूपेण हिन्दी में गृह पत्रिका "संवाद" शुभारंभ किया बल्कि उसके राजभाषा प्रकोष्ठ ने आंतरिक संसाधनों के प्रयोग द्वारा गृह पत्रिका "संवाद" को इमेज रेडी रूप में मुद्रण के लिए उपलब्ध भी कराया। अन्तरिक्ष विभाग की राजभाषा समिति की बैठक में एन.आर.एस.सी. की इस पहल की भूरि- भूरि सराहना हुई और सभी केन्द्रों में "संवाद" का जबरदस्त स्वागत हुआ।



लगभग उन्नीस वर्ष पूर्व जन्मा "संवाद", आज शैशव और तरुणाई को पार कर बीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मेरे करीब यह घटना "संवाद" की सफलता में एक मील के पत्थर समान है। "संवाद" की इस उपलब्धि पर मुझे जो अनुभूति हो रही है वह 'गूंगे का गुड़' जैसी है। अपनी खुशी के आवेग को जाहिर करने के लिए मेरे शब्द.... मेरी लेखनी पूर्णतः असमर्थ है। अपने आनंद के उत्कर्ष को मापने या व्यक्त करने में मुझे 'बेहद' या 'अनंत' जैसे शब्द बिल्कुल हल्के और अनुपयुक्त लग रहे हैं। प्रसन्नता और गौरव का यह अद्भुत संगम है।



सभी प्रबंधन गुरु मानव संसाधन को महत्व को सर्वोपरि मानते हैं। यह महत्वपूर्ण संसाधन किसी भवन अथवा मशीनरी की भांति निर्जीव नहीं बल्कि अपनी अपेक्षाओं व आकांक्षाओं से प्रभावित होता है। उसे अपने संस्थान के अलावा भी अन्य कई भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। उसके उत्तरदायित्व का क्षेत्र उसके संस्थान के साथ साथ उसके परिवार व सगे संबंधियों से भी बाबस्ता होता है। अतः, यदि कर्मचारी का परिवार भी संस्थान से लगाव रखे लगे और स्वयं को संस्थान का भाग समझ कर गौरव का अनुभव करने लगे तो कर्मचारी और संस्थान दोनों को लाभ होता है। परिवार का पूर्ण समर्थन मिलने से कर्मचारी की कार्य क्षमता बढ़ जाती है और वह पूरी लगन के साथ संस्थान के लक्ष्यों को हासिल करने में जुट जाता है।

इसी अवधारणा को लेकर हमने आंतरिक जन संपर्क (इन्टरनल पब्लिक रिलेशन) के रूप में पहले साप्ताहिक ई-पत्रिका "गुरुवार बुलेटिन" और फिर वार्षिक गृह पत्रिका "संवाद" का प्रकाशन आरंभ किया। हमारी मंशा कर्मचारियों को हिन्दी के प्रति आकर्षित करने की भी थी इसलिए इनका माध्यम हिन्दी रखा गया।

राजभाषाकर्म के रूप में राजभाषा हिन्दी की स्वीकार्यता को प्रोत्साहित करना हमारा दायित्व होता है और अपने अहिन्दी भाषी सहकर्मियों में हिन्दी के प्रति रुचि जगाना हमारी जिम्मेदारी। आपको मालूम है कि सफल सेल्समैन वही हो सकता है जो अपने माल (प्रोडैक्ट) की उपयोगिता के प्रति ग्राहक (कस्टमर) को आकर्षित करने का हुनर जानता हो। आपको यह भी पता है कि हाल ही में हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक नई सोच "वोकल फॉर लोकल" का आह्वान किया है। ठीक "वोकल फॉर लोकल" की तरह ही हमारा माल भी एक सोच "हिन्दी में काम करना आसान है, आप शुरूआत तो करें" था। इसी सोच को बल देने के लिए हमने *पुल योर कस्टमर एंड पुश योर प्रोडैक्ट* की नीति को अपनाया। इस प्रयास में हमें साप्ताहिक ई-पत्रिका "गुरुवार बुलेटिन" और वार्षिक पत्रिका "संवाद" का भरपूर सहयोग मिला।

साप्ताहिक ई-पत्रिका "गुरुवार बुलेटिन" में अन्तरिक्ष विज्ञान व स्वास्थ्य संबंधित लोकरूचि के लेखों और एन.आर.एस.सी. की महत्वपूर्ण गतिविधियों के अलावा कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति तथा जन्मदिन की शुभकामना संदेशों का भी



उल्लेख होता था। एन.आर.एस.सी. की ओर से शुभकामना संदेश पाने वाले कर्मचारियों के अलावा अन्य पाठक भी संस्थान में अपने महत्व को अनुभव करते थे। इस प्रकार हिन्दी न केवल चर्चा का विषय बनी बल्कि शुभकामना संदेशों के आदान प्रदान व आपसी भाईचारे का भी माध्यम बन गई।

एन.आर.एस.सी. की वार्षिक गृह पत्रिका "संवाद" में हमने वर्ष के दौरान एन.आर.एस.सी. द्वारा अर्जित उपलब्धियों के साथ-साथ कर्मचारियों और उनके परिवार की उपलब्धियों का भी उल्लेख किया। "संवाद" ने कर्मचारियों व उनके इष्टजनों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को धार देने का काम भी किया। उनके द्वारा लिखी गई कविताएं, कहानियां, चुटकुले व अन्य लेख "संवाद" का प्रमुख आकर्षण थे। कई उदयमान नन्हें चित्रकारों ने अपनी कला से "संवाद" को और भी अधिक दिलचस्प बनाया। संक्षेप में कहा जाए तो एन.आर.एस.सी. ने "संवाद" के रूप में हर कर्मचारी और उनके परिवारों के साथ एक सुन्दर रिश्ता कायम कर लिया।

उदाहरण के लिए कुछ वर्ष पूर्व हमारी दो महिला सहकर्मियों ने एक वर्ष से भी अधिक समय निर्जन व कठिन पर्यावरण वाले अंटार्कटिका में एन.आर.एस.सी. वैज्ञानिक दल का नेतृत्व संभाला। इस दौरान उन्होंने अपनी अद्वितीय मानसिक व शारीरिक सामर्थ्य का परिचय तो दिया ही, अपनी अद्भुत बौद्धिक क्षमताओं को भी सिद्ध किया। "संवाद" के पाठक जानते हैं कि ये दो असाधारण महिला वैज्ञानिक; डॉ. राजश्री बोथले और श्रीमती मंगलमणि हैं। ये दोनों सुपर महिलाएं हमारे एनआरएससी परिवार से हैं, क्या यह भावना हमारा मस्तक शान से ऊंचा नहीं करती? करती है ना? यह "संवाद" का ही एक करिश्मा है।

हमारे तत्कालीन निदेशक पद्मश्री डॉ. डी पी राव और तत्पश्चात डॉ. आर रंगनाथ नवलगुंद और तत्कालीन नियंत्रक श्री चेतन संघी ने हमारे इस विचार को पूरा समर्थन दिया और "संवाद" का प्रकाशन संभव हुआ। "संवाद" का रूप निखारने में श्री अनिल कुमार, डॉ. राजेन्द्र कुमार गुप्ता, डॉ. एम एल मित्तल, डॉ. बाजपेयी, डॉ. एन. सी. गौतम, डॉ. आर एस द्विवेदी, डॉ. दिलसुख जैन, डॉ. चन्द्रशेखर झा, डॉ. एन अपर्णा और श्रीमती पद्मा वेंकटेश्वरन आदि ने बड़ा सहयोग दिया। "संवाद" के मुख पृष्ठ के डिजाइन के लिए मैं सदैव श्रीमती भावना सहाय की कलात्मक प्रस्तुति का प्रशंसक रहा और मुझे उनका सहर्ष सहयोग भी मिला। मुद्रण सुविधा के तात्कालीन प्रभारी श्री शंकर तथा श्री विजयशेखर रेड्डी ने हमें पेजमेकर सॉफ्टवेयर पर काम करना सिखाया। यदि प्रकाशन के दौरान हमारी तरफ से कुछ देरी भी हुई तो उनकी टीम ने अपनी असाधारण कार्य क्षमता का परिचय देते हुए प्रकाशन का कार्य समय पर पूरा किया।

उस समय श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना और श्री जी नरसय्या मेरे दाएं बाएं हाथ के समान थे। यह सच है कि उनका काम होता था और मेरा नाम होता था। हम तीनों के लिए हिन्दी प्रकोष्ठ में काम करना सप्ताह में पांच दिन, नौ से साढ़े पांच वाली नौकरी नहीं थी। वह हमारे लिए राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हमारी प्रतिबद्धता, हमारा दायित्व और हमारा समर्पण था। "संवाद" के प्रकाशन के दौरान हम तीनों ने मिलजुल कर हर तनाव, हर दबाव को सहन किया और एक दूसरे का संबल बने। वो दिन भी क्या दिन थे.....आज भी याद आने पर मन का कोई कोना भीग जाता है।

मैं "संवाद" के 20वें अंक के विमोचन पर "संवाद" के ही माध्यम से एन.आर.एस.सी. परिवार के सभी सदस्यों, राजभाषा समिति और श्रीमती मीनाक्षी की टीम के साथ-साथ इस प्रयास में संलग्न सभी व्यक्तियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

-शुभकामनाओं सहित सदैव आपका, राजेन्द्र सिंह कण्डारी



"हिंदी एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है"

-- मदन मोहन मालवीय

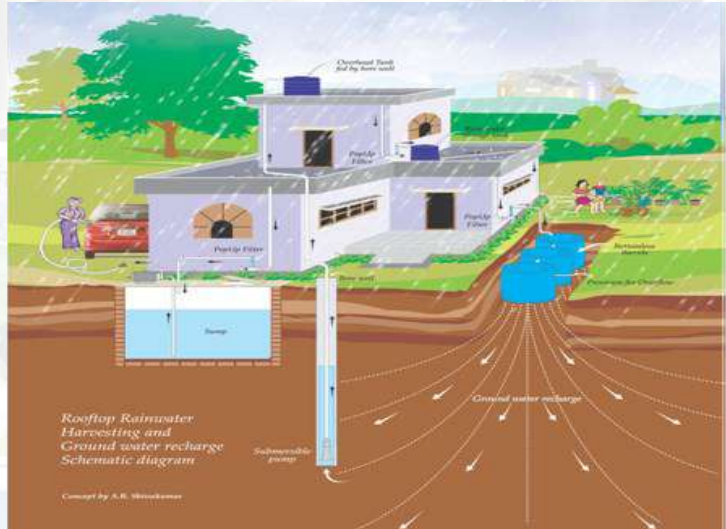
क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण, बेंगलूरु परिसर में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के अभिनव प्रयास ...

✍ राधेश्याम यादव एवं डॉ. के. गणेश राज, क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण, बेंगलूरु

कोविड-19 विश्वव्यापी महामारी ने औद्योगिक विकास की आत्मघाती अंधी दौड़ की पोल खोल दी है। अविवेकपूर्ण रहन-सहन एवं अप्राकृतिक जीवनचर्या के तौर-तरीकों के परिणामस्वरूप सर्वत्र अनवरत प्रदूषण बढ़ रहा है जिससे पृथ्वी पर मौजूद सभी जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर खतरा बढ़ता जा रहा है। औद्योगिक विकास की आत्मघाती अंधी दौड़ एवं अविवेकपूर्ण तौर-तरीकों के परिणामस्वरूप हर तरफ अनवरत प्रदूषण बढ़ रहा है जिससे पृथ्वी पर मौजूद सभी जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर खतरा बढ़ता जा रहा है। दरअसल पृथ्वी पर जीवन का संरक्षण पर्यावरण के संरक्षण के बिना संभव नहीं है। पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझते हुए क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-बेंगलूरु (आर.आर.एस.सी.-एस.), एन.आर.एस.सी., इसरो देश की विकासात्मक आवश्यकतानुसार सुदूर संवेदन आधारित राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय परियोजनाओं के निष्पादन में जितनी प्रतिबद्धता से लगा हुआ है उतनी ही तत्परता के साथ अपने परिसर में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के लिए अभिनव प्रयोग एवं प्रयास करता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

वर्षा जल-संग्रहण एवं संचयन

सर्वविदित है कि इसरो के विभिन्न केंद्रों में बहुआयामी गतिविधियों के विस्तार से जल की बढ़ती मांगों को भूजल-दोहन से पूरा कर पाना दिनों-दिन मुश्किल होता जा रहा है। अपितु वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसरो परिसरों में भू-सतह एवं भू-जल दोनों का आकलन करके व्यापक जल संसाधन के विकास व प्रबंधन के साथ-साथ पानी के वैकल्पिक स्रोतों का निर्माण करना आवश्यक हो गया है। विविध शोध रिपोर्टों के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण सन 2050 तक पानी की उपलब्धता में होने वाली कमी की भरपाई वर्षा जल संचयन (कुल कमी का 1.2%), अपशिष्ट जल शोधन (कुल कमी का 6.1%) एवं समुद्री जल में उपस्थित लवण की मात्रा को कम करने की प्रक्रिया (विलवणीकरण) (कमी का लगभग 50%) के माध्यम से की जा सकती है। बाकी 42% जल की कमी को मांग संबंधित साधनों जैसे जल बचतकारी उपकरणों तथा जल प्रबंधन तकनीकों से पूरा करना पड़ेगा। शेष कमी की आपूर्ति संबंधित उपायों जैसे जलाशयों को कृत्रिम तरीके से भरकर, जल की कम खपत (रिड्यूस), पुनर्प्रयोग (रीयूज), पुनर्चक्रण (रिसाइकिल) प्रविधियों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।



चित्र-1. वर्षा-जल संग्रहण की विधि

शहरी क्षेत्रों में पक्के रास्तों एवं इमारतों की छतों आदि का वर्षा जल भू-सतह अपवाह के रूप में बह जाता है। छत के पानी की पाइपों को जोड़कर वर्षा-जल को एक पाइप द्वारा एकत्र कर कंकड़-गिट्टी, लकड़ी के कोयले, रेत या अन्य विधियों से बने फिल्टर बेड से छानने के बाद पुनः उपयोग फ्लशिंग, बागवानी, साफ-सफाई एवं नल-कूपों (बोरवेल) को रिचार्ज आदि करने के लिए ड्रम/ टैंक/ सम्प/जलाशयों में संचित किया जा सकता है। छत के अधिकतम वर्षा-जल को इकट्ठा करने और फिर उसे छानने के बाद नजदीकी सम्प या नल-कूप तक ले जाने की समुचित योजना छत के क्षेत्रफल, आकार, ढलान एवं अनुमानित वर्षा की मात्रा के अनुसार नई इमारत के निर्माण के समय ही बना लेना लाभकारी होता है।

1.1 क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण, बेंगलूरु में छत के वर्षा जल(रूफ-टॉपरेन-वाटर हार्वेस्टिंग) का उपयोग करते हुए नल-कूप पुनर्भरण (बोरवेल रिचार्जिंग)

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण एवं आईसाइट, बेंगलूरु के परिसर में जल की तत्कालिक और दीर्घकालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उच्च विभेदन युक्त उपग्रह डेटा तथा जमीन आधारित जल-भूवैज्ञानिक अध्ययनों का उपयोग करते हुए अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण, वर्षा-जल के संरक्षण, भंडारण तथा आपूर्ति प्रणालियों के संवर्द्धन हेतु विशेष उपाय किए गये हैं। परिसर के बोरवेल की रिचार्जिंग के लिए सितम्बर 2017 में पुनर्निर्माण किया गया। इसके तहत केंद्र के कंप्यूटर लैब की छत (लगभग 800 वर्ग फुट) के वर्षा-जल को एकत्र करके 200 लीटर की क्षमता वाले ड्रम में जेली, चारकोल, रेत और जेली से बने फिल्टर बेड से छानने की



चित्र-2 वर्षा-जल संग्रहण क्षे.सु.सं.कें.-द.



चित्र-3.क्षे.सु.सं.कें.-द. में वर्षा-जल संचयन हेतु विकसित संरचनाएं ड्रम में फिल्टर बेड



चित्र-4 क्षे.सु.सं.कें.-द. में संग्रहित वर्षा जल से बोरवेल पुनर्भरण (रिचार्जिंग)

व्यवस्था की गई। यह ड्रम फिल्टर बेड बोरवेल से लगभग 30 फीट की दूरी पर है। फिल्टर बेड द्वारा छाने हुए वर्षाजल को बोरवेल के चतुर्दिक बनाये गये लगभग 4 फीट व्यास के 6 फुट गहरे गड्ढे में पहुंचाया जाता है। यह जल बोरवेल में सहजता से घुस जाये इसके लिए बाहरी पाइप में ऊर्ध्वाधर छेद (2-3 मि.मी. चौड़े और 25 -30 मि.मी. लंबे) किए गए हैं। अतिरिक्त पानी को नजदीकी रिचार्ज पिट तक ले जाने के लिए एक निकास नली (आउटलेट) का निर्माण किया गया है। बोरवेल के चतुर्दिक बनाये गये गड्ढे में छाना हुआ वर्षा-जल एवं केसिंग पाइप के रेखा-छिद्र (स्लिट-होल) को निम्नांकित चित्र-3 में दर्शाया गया है।

इस बोरवेल की कुल गहराई 308 फीट, औसत जल स्तर 50 से 60 मीटर (लगभग 150 फीट) और औसत जल उत्पाद 5980 लीटर / घंटा है। यह विधि कम खर्चीली एवं बहुत प्रभावी है जो सितम्बर 2017 से बहुत अच्छी तरह से काम कर रही है। बोरवेल के आसपास के गड्ढे एक बार भी ओवरफ्लो नहीं हुए हैं। फिल्टर किये गये संग्रहित वर्षा-जल से बोरवेल को सीधे रिचार्ज करने से परिसर के भूजल स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

1.2. जल संचयन/ पुनर्भरण हेतु आईसाइट परिसर में 6 फीट लीटर भंडारण क्षमता वाला 7 फीट गहरा तालाब खोदा गया है जिसे निम्नलिखित चित्र-4 में देखा जा सकता है।

वर्षा जल संचयन हेतु आईसाइट परिसर में एक अन्य छोटा तालाब भी खोदा गया है, जो निम्नलिखित चित्र में दर्शाया गया है।

2. क्षे. सु. सं. के. (दक्षिण) की मनोरम वाटिका

कार्यालय परिसर प्रदूषण-मुक्त, प्राणवायु-युक्त, स्वच्छ-सुखद हो तो कार्मिकों की कार्य-निष्पादन क्षमता, उत्पादकता एवं गुणवत्ता में स्वतः वृद्धि हो जाती है। क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण वर्ष 2010 में आईसाइट/यू.आर.एस.सी. के वर्तमान परिसर में स्थानांतरित हुआ। उस समय परिसर में



चित्र-5. आईसाइट परिसर, यू.आर.एस.सी. में संग्रहित वर्षा - जल

मूलतः बहुत ही कम पेड़-पौधे थे। लेकिन धीरे-धीरे 0.6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैले केंद्र के परिसर में विभिन्न प्रकार के देशी एवं विदेशी पौधों की प्रजातियां उगाई गईं। आज इस परिसर में 64 परिवारों के 170 पौधों की प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। अप्रैल 2018 में इन पौधों के संक्षिप्त विवरण, उनके सामान्य हिंदी नाम, वैज्ञानिक नाम एवं प्रजाति के नाम के साथ 'फ्लोरा ऑफ आर.आर.एस.सी.-एस.' नामक एक संग्रह प्रकाशित किया गया। इनमें से 37 प्रजातियों के पेड़/पौधों पर उनके प्रचलित नामों का त्रिभाषी नामपट्ट लगाया गया है। उत्तम रख-रखाव के लिए इस मनोरम लघु उद्यान को बागबानी शो-2014 में मैसूर हार्दिकलचर सोसाइटी, लालबाग, बेंगलूरु द्वारा विशिष्ट उत्कृष्टता पुरस्कार एवं सर्वोत्तम अलंकारिक बाग (बेस्ट आर्नामेंटल गार्डन) से पुरस्कृत किया गया। पिछले कई वर्षों से केंद्र में '5 जून' को 'पर्यावरण दिवस' के रूप में

मनाया जाता है और प्रतिवर्ष इस दिन विशेष रूप से वृक्षारोपण किया जाता है। इस उद्यान में ड्रिप इरिगेशन (स्थानीय सिंचाई) के जरिये जरूरत के हिसाब से सही मात्रा में पानी सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाया जाता है, जिससे बहुमूल्य पानी की बचत होती है।



चित्र-6. आईसाइट परिसर, यू.आर.एस.सी. में संग्रहित वर्षा - जल

3. सौर ऊर्जा संयंत्र

यह एक प्रदूषण-मुक्त अपरंपरागत अक्षुण्ण नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। सम्पूर्ण भारतीय भू-भाग पर 5000 लाख करोड़ किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मी. के बराबर सौर ऊर्जा आती है जो कि विश्व की सम्पूर्ण विद्युत खपत से कई गुना अधिक है। 'हैंडबुक ऑन सोलर रेडिएशन ओवर इंडिया' के अनुसार भारत के अधिकांश भाग में वर्ष में लगभग 250-300 दिन साफ धूप उपलब्ध रहती है और प्रतिदिन प्रति वर्गमीटर औसत 4-7KWh सौर विकिरण प्राप्त होता है। हलांकि देश में 30-50 मेगावाट/ प्रतिवर्ग किलोमीटर छाया रहित खुला क्षेत्र होने के बावजूद उपलब्ध क्षमता की तुलना में सौर ऊर्जा का दोहन काफी कम है। भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट हरित ऊर्जा के उत्पादन का लक्ष्य तय किया है, जिसमें सौर ऊर्जा का हिस्सा 100 गीगावाट है। अंतर्राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी (IRENA) के सर्वेक्षण के अनुसार भारत पूरे विश्व में सबसे सस्ती सौर ऊर्जा का उत्पादन करने वाला देश बन गया है। वर्ष 2035 तक देश में सौर ऊर्जा की मांग सात गुना बढ़ने का

अनुमान है। इस संयंत्र से कार्बन डाइ-ऑक्साइड का उत्सर्जन न होने के कारण यह पर्यावरण संरक्षण में भी प्रभावी योगदान देता है। एक अध्ययन के अनुसार लालबाग बेंगलूर में स्थापित 20KWp क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र प्रतिवर्ष लगभग 29 टन कार्बन-डाइ-ऑक्साइड बचाते हुए कार्बन फुट प्रिंट में भारी कमी लाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

सौर ऊर्जा के समुचित दोहन एवं सदुपयोग के लिए दिनांक 15.02.2018 से आर.आर.एस.सी.-बेंगलूर की इमारत के



ऊपरी छत पर 20KWp क्षमता का ऑन-ग्रीड संपर्कित सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है जिससे प्रतिदिन औसतन 80KWh सौर ऊर्जा का उत्पादन होता है जो केंद्र के प्रतिदिन औसत खपत (60KWh) से कहीं ज्यादा है। आवश्यकता से अतिरिक्त उत्पादित सौर ऊर्जा आईसाइट के पावर-ग्रीड को सप्लाई कर दी जाती है। दिनांक 03.01.2020 तक इस सौर ऊर्जा संयंत्र से 7940 घंटे (लाइफ रन-टाइम) में कुल 59849KWh ऊर्जा उत्पादित हुई है। यह संयंत्र वातावरण में कार्बन फुट-प्रिंट कम करने में भी प्रभावी योगदान देता है।

चित्र-6. क्षे.सु.सं.कें.-द., गार्डन को प्राप्त उत्कृष्टता स्मृति-विह्व

4. स्वचालित मौसम स्टेशन (ए.डब्ल्यू.एस.)

नाइसेस कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा स्वचालित मौसम स्टेशन (ए.डब्ल्यू.एस.) का प्रचालन किया जा रहा है। यह अंशांकित डिस्ट्रे सेवेदकों का समूह है जो 24X7 के आधार पर आईसाइट परिसर क्षेत्र में तापमान, वृष्टि, वायुवेग, वायुदिशा, मृदानमी, मृदा तापमान, सौर विकीरण संबंधित सूचनाएं प्रदर्शित करता है। ये आंकड़े विश्लेषणात्मक अध्ययनों के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं।



5. पॉलिथीन/ प्लास्टिक बोटल प्रतिबंधित



चित्र-7. क्षे.सु.सं.कें.-द. का सौर ऊर्जा संयंत्र

प्लास्टिक मानव को जितनी सहूलियत प्रदान करता है उतनी ही बीमारियां भी फैलाता है। यह मानव जाति के साथ-साथ पृथ्वी के समस्त जीव जंतु के अस्तित्व जल-थल-वायु एवं पर्यावरण के लिए भी गंभीर खतरा पैदा कर रहा है। हमारे भारत देश में की एक रिपोर्ट के 2016 मुताबिक प्रतिदिन 15000 टन प्लास्टिक अपशिष्ट निकलता है जो कि दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। प्लास्टिक से निर्मित ज्यादातर वस्तुएं जैसे पानी की बोटलें, पैकिंग सामग्री, पॉलिथीन बैग, बॉक्स, खिलौने आदि मानव द्वारा प्रायः एक बार इस्तेमाल किए जाने के बाद कचरे में फेक दिए जाते हैं। इनमें मिली खाद्य-सामग्री के साथ इन्हें गायें तथा आवारा पशु खा लेते हैं। ये प्लास्टिक/ पॉलिथीन के कचरे जीव-जंतुओं के फेफड़ों एवं आंतों में फँस जाते हैं, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। सर्वविदित है कि प्लास्टिक की विघटन प्रक्रिया में से हजारों साल लग जाते हैं। इसलिए 500 प्लास्टिक को भूमि के अंदर गाड़ देने के बाद भी यह विघटित नहीं हो पाता है और जहरीली गैसें और

विषाक्त पदार्थ छोड़ता रहता है। जिसके कारण वहां की भूमि बंजर हो जाती है और अगर कोई फसल पैदा भी होती है तो उसमें जहरीले पदार्थ मिले होने के कारण वह मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। प्लास्टिक नदियों और नालों में बहने वाले पानी के साथ बहकर समुद्र तक पहुंच जाता है जिसे खाने से समुद्री जीवों की भी मृत्यु हो जाती है। जिसके कारण आए दिन समुद्री जीवों की जनसंख्या कम हो रही है। प्लास्टिक भविष्य में मानव जीवन के पतन का कारण भी बन सकता है। इसलिए प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने की पहल में हाथ बंटाने के उद्देश्य से क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण को प्लास्टिक/ पोलिथिन मुक्त परिसर घोषित कर दिया गया है। यहाँ पर पोलिथिन बैग में खाद्य-सामग्री आदि ले आना एवं प्लास्टिक के बोतल आदि का प्रयोग करना प्रतिबंधित है। यहाँ होने वाली कार्यालयीन बैठकों में भी प्लास्टिक के बोतल बंद पानी के बजाय शीशे की गिलास में पेयजल सर्व किया जाता है। केंद्र के महा प्रबंधक की इस अनूठी पहल से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ कार्यालयीन बैठकों में पानी की बोतलों पर प्रतिमाह खर्च होने वाले औसतन 3000 हजार रुपये के राजस्व की बचत भी हो रही है।



चित्र-8. क्ष.कें.-द. की कार्यालयीन बैठकों में प्लास्टिक बोतल के बजाय शीशे के गिलास में पेयजल

संदर्भ:

क्ष.सु.सं.कें.-द. एवं आईसाइट परिसर में जल संसाधन विकास व प्रबंधन- रिपोर्ट 'फ्लोरा ऑफ आर.एस-आर.एस.सी..' क्ष.द.कें.सौर संयंत्र ऊर्जा उत्पादन लॉग बुक एवं मल्टीमीटर डिस्प्ले

आभार:

यह आलेख लिखने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सुअवसर देने के लिए लेखक द्वय राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र के हमारे निदेशक श्री शांतनु चौधुरी, मुख्य महाप्रबंधक श्री उदय राज एवं केंद्र के सभी सहकर्मियों से प्राप्त स्नेहिल सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। विशेषकर वर्षा जल संग्रहण एवं नल-कूप पुनर्भरण, फ्लोरा ऑफ आर.आर.एस.सी.-एस., स्वचालित मौसम स्टेशन (ए.डब्ल्यू.एस.) संबंधित विस्तृत आँकड़े प्रदान करने के लिए केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक क्रमशः डॉ. राम सुब्रामणियम एस., श्रीमती शिवम त्रिवेदी एवं मो. अहमद जिलानी और फोटोग्राफी के लिए डॉ. वी. पूंपवै तथा श्री रामचंद्रा एम.एल. (से.नि.) के प्रति लेखक द्वय तहेदिल से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

“उम्मीद वक्त का सबसे बड़ा सहारा है, जो हौसला हो तो हर मौज में किनारा है।”

कहां गए बचपन के वो दिन

डॉ. एन अपर्णा, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

किसी से भी पूछिए, आपके सबसे अच्छे दिन क्या हैं? हर कोई यही जवाब देगा बचपन। जी हां, सभी को यही दिन मिठाई से भी ज्यादा मीठे और सुनहरे लगते हैं।



कभी सोचा है क्यों? मेरी समझ में तो यही आता है कि वो दिन बेफिक्री के दिन थे, न चिंता थी खाने की, न कपड़े की, न मकान और गाड़ी की। केवल मन हमेशा खेल-कूद की राह देखता रहता था। जब अलमारी खोलते थे तो केवल दो या तीन जोड़ी कपड़े होते, साथ में दो स्कूल की ड्रेस। कम चीजें होती थीं मगर फिर भी बड़े खुश रहते थे और वह दो तीन जोड़ी संभाल-संभाल कर रखते थे और खुशी से पहनते थे। आज अलमारी भर के कपड़े हैं, एक नहीं दो-दो अलमारियां कपड़ों से भरी हैं, मगर क्या पहने पता नहीं। ऐसी उलझन रहती है कि बता नहीं सकते। जब भी कहीं जाने का ख्याल आए तो ऐसा लगता है कि कपड़े हैं ही नहीं, क्या पहना जाए। शायद हम कम चीजों में खुशियां पाकर जिस तरह खुश हो जाया करते थे, अब वैसा नहीं रह पाते हैं।

मुझे याद है कि स्कूल से आते ही करीब 2.50 बजे नहा धो कर तरो-ताजा होकर कुछ खाते, पहले होमवर्क करते और फिर खेलने भाग जाते। फिर माँ निर्देश देती कि पिताजी के ऑफिस से घर पहुंचने के पहले वापिस आ जाना। हां, आ जाएंगे कहकर लापरवाही से हम खेलने भाग जाते फिर पिताजी साइकिल पर बिठाकर आईस क्रीम खिलाने ले जाते। उन दिनों आइसक्रीम की कीमत भी 10 पैसा या 25 पैसा हुआ करती थी। आज दो-दो कार हैं पर खुशी कहीं जैसे गुम हो गई है। पहले खुशियों का ठिकाना नहीं होता था और आज खुशी की खोज करनी पड़ती है। पता नहीं ये खुशियां कहीं गुम हो गई हैं या हमने इन्हें खो दिया है। छोटी-छोटी बातें खुशी देती थीं। जब बिस्तर पर पहुंचते तो बेफिक्री से सोते। कभी भी नींद न आने के कारण सोचने की जरूरत नहीं पड़ती थी। लेकिन हां परीक्षा के समय जरूर हमें सोने नहीं दिया जाता था क्योंकि परीक्षा का डर तो होता था पर इतना नहीं कि रातों की नींद उड़ जाए। हम तो तीन भाई बहन हैं और सब साथ रहते, खाते-पीते और सोते थे कभी तंगी महसूस नहीं हुई अब न जाने क्या हो गया है, कहां उड़ गई नींद..... ठीक से सोकर पता नहीं जमाना हो गया। ऐसा नहीं कि आराम नहीं है पर नींद नहीं आती है।

पापा स्कूल जाते हुए एक रूपए का सिक्का देते, हमें इतनी खुशी होती कि ऐसा लगता पूरी दुनिया खरीद लेंगे। पर अब महंगी-महंगी चीजें भी बच्चों के चेहरे पर वो खुशी लेकर नहीं आ पाती हैं। सबसे बड़ी बात हमारी पढ़ाई लिखाई। हम सब ने पढ़ना लिखना पढ़ी पर शुरू किया। हम पढ़ी पर लिखकर याद करते व मिटाते थे। एक बार गलती होती तो मिटाकर फिर लिखते थे। हम तो दसवीं तक घर पर पढ़ी रखते ताकि रफ वर्क उसी पर किया जा सके और कागज बर्बाद न हो। आजकल छोटी कक्षा से ही बच्चों को नोटबुक थमा दी जाती है। जहां बच्चों को लिखना व पढ़ना नहीं आता है। वहीं उन्हें पढ़ी व खड़िया देने के स्थान पर नोटबुक थमा कर कागजों की बर्बादी की जाती है। छोटे बच्चों को ध्वनि व शब्द ज्ञान ही होता है। कागज उनके लिए खेलने का एक माध्यम मात्र ही बन कर रह जाते हैं।

ऐसा नहीं है कि अब बिल्कुल खुशी नहीं है या हर चीज खराब है। बात इतनी सी है कि हमने छोटी छोटी चीजों में खुशियां ढूंढना छोड़ दिया और छोटी छोटी बातों की फिक्र करना शुरू कर दिया। जिन्दगी जीना भूल गए और अधिक पाने की लालसा में खुद तो भाग ही रहे हैं बाकी सभी को भगा रहे हैं। फुर्सत में कभी अपने आप से बात करो और अपने साथ एक कप चाय तो पी के देखो। झांको अपने अन्दर और अपने बाहर का एहसास तो करके देखो.... फिर देखो जिन्दगी कितनी अच्छी है। हमेशा खुश रहोगे और अनचाही चीजों के पीछे भागना बन्द कर दोगे। वापिस बचपन में तो नहीं जा सकते लेकिन खुश होकर जी तो सकते हैं। आनंद जीवन की वह अनुभूति है जो आपको जीने की उमंग देती है। एक खुशमिजाज़ व्यक्ति की आयो सदैव लंबी होती है। चिंतामुक्त जीवन जीने का एक ही मूलमंत्र है.....खुश रहो और खुशियां बांटो.....

भारत भाग्यविधाता -मानसून

✍ ओझा अनिल कुमार, आरआरएससी, पश्चिम, जोधपुर

भारत जैसे कृषि प्रधान देश की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक जीवन में मानसूनी परिघटना का अपना एक विशिष्ट स्थान एवं महत्व है। हमारे देश में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक एवं जलवायु संबंधी विभिन्नताएँ हैं, यथा भारत के भौगोलिक स्वरूप को देखें तो हम पाएंगे कि इसका उत्तर-पूर्वी क्षेत्र हिमालय की पर्वतमालाओं से सुरक्षित है तो इसके पश्चिम-उत्तरी क्षेत्र में अवस्थित विशाल थार मरुस्थल की अपनी रणनीतिक एवं पर्यावरणीय महत्ता है। वहीं इसके प्रायद्वीपीय स्वरूप के कारण दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम में प्राकृतिक संपदाओं से संपन्न सागर व महासागर मौजूद है। इतनी सारी पारिस्थितिकीय एवं जलवायु संबंधी विभिन्नताओं के बावजूद, भारत किसी एक परिघटना विशेष से सबसे अधिक प्रभावित होता है या यूँ कहें कि जिस घटना का देश की आबादी पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है वह मानसूनी परिघटना है अर्थात् मानसून एक ऐसी मौसमी परिघटना है जो इसके संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करती है। भारत जैसे देश में सिंचाई या गैर-सिंचाई वाले कृषि क्षेत्रों में मानसून का अपना एक विशेष महत्व है। देश में कुल बोए जाने वाली भूमि का लगभग 55-60 प्रतिशत क्षेत्र पानी के लिए मानसूनी वर्षा पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त, सिंचाई वाले क्षेत्रों (लगभग 45 प्रतिशत) में भी मानसून का अपना महत्व है क्योंकि मानसूनी वर्षा से भूजल स्तर में वृद्धि होती है।



वास्तव में भारतीय संस्कृति की इन्द्रधनुषी छटा इसी मानसूनी परिघटना के इर्द-गिर्द घूमती है। ग्रीष्मकालीन दिनों में ही मानसून परिघटना विशेषकर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चर्चा का विषय बन जाती है। जहां किसान खरीफ फसलों की बुआई के लिए मानसून की प्रतीक्षा करते हैं, तो शहरी बाशिंदे गरमी से निजात एवं पेय जल समस्या के समाधान हेतु इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं।

मानसूनी परिघटना का महत्व एवं प्रभाव:- भारत के भौगोलिक क्षेत्र में होने वाली वार्षिक वर्षा के 70-80 प्रतिशत हिस्से में मानसूनी बारिश का योगदान होता है। मानसून पर टिकी खेती और खेती पर टिकी आबादी के लिए मानसून का अपना विशेष महत्व है। भारत में बोई जाने वाली खरीफ फसल अधिकांशतः जल हेतु मानसून पर ही निर्भर होती है। कोरोना कालावधि जैसी कठिन परिस्थितियों में भी यदि हमारा राष्ट्र खाद्य पदार्थों के मामलों में आत्मनिर्भर रहा है तो इसके पीछे जिस आर्थिक क्षेत्र (सेक्टर) का महत्वपूर्ण योगदान है वह कृषि सेक्टर अर्थात् प्राथमिक आर्थिक क्षेत्र (Primary Sector) है। इसके अलावा इस समय के दौरान, इस सेक्टर में ट्रेक्टर एवं अन्य कृषि संबद्ध कार्य करने हेतु आवश्यक सहायक साधनों की माँग से अर्थव्यवस्था में निश्चित रूप से नई जान फूँक दी। कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट 2018-19 के मुताबिक देश के कुल कार्यबल (Workforce) का लगभग 55% हिस्सा कृषि एवं इससे संबद्ध गतिविधियों में कार्यरत है और वर्ष 2017-18 के दौरान इस क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 17.1 प्रतिशत योगदान रहा है। देश में खाद्यान्न उत्पादन को मानसून परिघटना सीधे रूप से प्रभावित करती है। मानसून परिघटना में हुए छोटे बदलाव भी किसानों के लिए जीवन और मरण का सवाल बन जाते हैं। अतः यदि हम मानसूनी परिघटना को एक मुख्य आर्थिक घटना कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह परिघटना भारतीयों के जीवन का केंद्र-बिंदु एवं भारत के कृषकों एवं कृषि क्षेत्र का प्राण है।

देश के आर्थिक विकास एवं अर्थव्यवस्था में मानसून के प्रभाव का दायरा बहुत बड़ा है। अच्छे मानसून से कृषि उत्पाद में वृद्धि होती है जिससे ग्रामीण जनसंख्या की आय में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप उपभोक्ता वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है। जिससे मजबूत आर्थिक दृष्टिकोण का निर्माण होता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापार करने वाली एवं सक्रिय कंपनियों के शेयर कीमतों में वृद्धि होती है। जो अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत होता है। मानसून लोगों के जीवन में राहत लेकर आता है, क्योंकि यदि बारिश कम होती है तो अर्थव्यवस्था पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है एवं जिसका सीधा प्रभाव खाद्य पदार्थों के मूल्यों पर पड़ता है अर्थात् मानसून के सामान्य होने या विपरित स्थिति में देश की खाद्य मुद्रास्फीति पर प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, मानसूनी परिघटना से ऊर्जा क्षेत्र, एफएमसीजी आदि जैसे क्षेत्र तो प्रभावित होते ही है यह देश की राजनीति को भी प्रभावित करती है।

पुण्य-भूमि भव भारती पर,
भारत की दैविक धरती पर,
ऋषियों की सशक्त संतति पर,
प्रकृति का पवित्र प्रेम आगाध,
मानसून का मौसम लाता, खुशियों की स्वर्णिम सौगाध।

कृषक-बंधु, श्रमिकगण,
शासन, सत्ता-सिंहासन,
पशु-पक्षी जन-गण-मन,
जीव मात्र होता आबाद,
मानसून का मौसम लाता, खुशियों की स्वर्णिम सौगाध।

हँसते-खिलते चेहरों का,
धरती-पुत्र अधिकारों का,
नूतन दिवस सबेरों का,
मॉनसून ही मूलाधार,
मानसून का मधुर मौसम, प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार।

वृक्ष-लता-पुष्प-पल्लव का,
धरती के सुंदर सौरभ का,
तीज-त्योहार के वैभव का,
आद्योपांत यही आधार,
मानसून का मधुर मौसम, प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार।

मानसून की उत्पत्ति-प्रक्रिया (संक्षेप में) :- भारत में होने वाली वर्षा मुख्य रूप से भू-आकृतियों द्वारा नियंत्रित होती है। मानसून एक वार्षिक मौसमी परिघटना है, जिसकी उत्पत्ति भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित हिंद महासागर में बनने वाले उच्च दबाव वाले क्षेत्र के कारण होती है। मानसून की उत्पत्ति का मुख्य कारण तापमान एवं दबाव है। गर्मी के दिनों में भारत के पश्चिम-उत्तर में स्थित थार मरुस्थल एवं आस-पास के इलाके उत्तरी और मध्य भारतीय महाद्वीप के भू-भाग गर्म हो जाते हैं जिसके चलते, इस तपती भूमि पर कम दबाव का क्षेत्र बनता है, वहीं दूसरी ओर समुद्र भूमि की तुलना में कम गर्म होने से इसकी ऊपरी सतह पर उच्च दबाव वाले क्षेत्र का निर्माण होता है। परिणामस्वरूप नम हवाएँ कम दबाव वाले क्षेत्र की ओर आकर्षित होती हैं। यह नम हवाएँ बाद में हिमालय पर्वतमालाओं से टकराकर ऊपर उठ जाती है जिससे इन हवाओं की धीरे-धीरे सघनता बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप नम हवाएँ पानी की बूंदों के रूप में धरती पर गिरती हैं, और इस प्रकार मॉनसून का आगमन होता है। इस प्रकार दो-तीन महीनों की वर्षा के कारण जमीन ठंडी और समुद्र का सतही तापमान तुलनात्मक रूप से कुछ अधिक होता है जिससे विपरित प्रक्रिया प्रारंभ होती है, जिसके परिणामस्वरूप हवाएँ समुद्र का रूख करती हैं, जिसके कारण सर्दी या ठंड के समय तमिलनाडु एवं देश के अन्य इलाकों में वर्षा होती है जिसे शीत मानसून कहते हैं।

उपसंहार:- यद्यपि मानसूनी परिघटना का भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के जीवन में तथा पारिस्थितिकी तंत्र में विशेष महत्व है, किंतु वर्तमान में, प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन ने इस परिघटना को प्रभावित किया है, जिसके कारण प्रतिवर्ष इस परिघटना से काफी जनसंख्या नकारात्मक रूप से भी प्रभावित हो रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून की कालावधि घट रही है अर्थात् वार्षिक रूप से वर्षा के दिनों की संख्या में कमी आ रही है। वर्षा के दिन कम होना और अतिवृष्टि की घटनाएँ बढ़ना जलवायु परिवर्तन के कई लक्षणों में से एक है। इसके अलावा, वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार भूमंडलीय ऊष्मीकरण (यानि ग्लोबल वॉर्मिंग) के कारण ग्रीष्मकालीन मानसून में पाँच से पन्द्रह दिनों का विलम्ब होना निश्चित है। इसके अतिरिक्त भारतीय उपमहाद्वीप क्षेत्र के बड़े हिस्से में वर्षा का स्तर काफी कम भी हो सकता है। अतः मानसून जो एक प्राकृतिक उपहार है, इसके महत्व एवं प्रभाव को समझते हुए पर्यावरण एवं जलवायु संरक्षण के कार्य को आगे बढ़ाना हम सबका सामाजिक दायित्व है एवं सामूहिक रूप से सभी के लिए हितकर है।

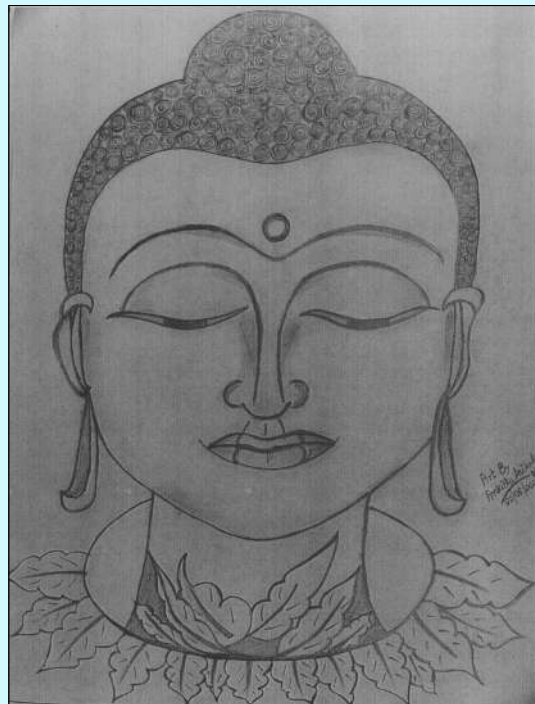
जज़बाती अल्फ़ाज

बी महबूब बाशा, क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, दक्षिण

- माँ एक ऐसी तख्ती है जिसमें औलाद कुछ भी लिख सकती है मगर माँ सिर्फ मोहब्बत लिखती है। जो जिद करते हैं कि सब कुछ तकदीर में लिखा होता है और उसे बदल नहीं सकते, वे लोग भी सड़क पार करते वक्त दाएं-बाएं जरूर देखते हैं।
- जिंदगी हमेशा एक नया मौका देती है, आसान लब्जों में उसे आज कहते हैं।
- तकलीफ और परेशानी का यह मतलब नहीं है कि भगवान आप से नाराज़ है, बल्कि भगवान जब किसी से मोहब्बत करता है तो उसको परेशानी देकर आजमाइश करता है ताकि उसकी बड़ाई सुन सके।
- झूठ का भी एक विशेष स्वाद है, खुद बोलने पर मीठा लगता है और कोई दूसरा बोले तो कड़वा लगता है।
- कभी-कभी हम गलत वक्त पर गलत लोगों के सामने रो पड़ते हैं, असल में लोग गलत नहीं होते वे बस हमारे हक में सही नहीं होते।
- कुछ सवालों का जवाब सिर्फ वक्त देता है और जो जवाब वक्त देता है वह लाजवाब होता है।
- उनकी खामोशी से डरें जिनका आपने दिल दुखाया है क्योंकि उन्होंने कुछ कहा नहीं और कुछ किया नहीं तो बदले में भगवान जरूर कुछ करेगा।
- जंगल में जब सुबह हिरण जागता है तो सोचता है कि अगर आज जीभर नहीं भागा तो मारा जाउंगा। उसी जंगल में एक शेर जागता है तो सोचता है कि आज जीभर नहीं भागा तो भूखा मर जाउंगा। आप शेर हों चाहे हिरण आपको भागना ही पड़ेगा।
- वक्त की कीमत समझना है तो अखबार से समझें जो सुबह दस रुपये में बिकता है वही अखबार शाम को दस रुपये किलो बिकता है।



अंकिता
सुपुत्री श्रीमती आशा सुरेश
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
हैदराबाद



विचित्र परीक्षा

✍ शिवाजय सक्सेना, सुपुत्र श्रीमती जया सक्सेना, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र

"बेटा! थोड़ा खाना खाकर जा ...! दो दिन से तुने कुछ खाया नहीं है।" लाचार माता के शब्द है अपने बेटे को समझाने के लिये।



"देख मम्मी! मैंने मेरी बारहवीं की बोर्ड की परीक्षा के बाद छुट्टियों में सेकेंड हैंड बाइक मांगी थी, और पापा ने वादा किया था। आज मेरे आखरी पेपर के बाद दीदी को कह देना कि जैसे ही मैं परीक्षा खंड से बाहर आऊंगा तब पैसा लेकर बाहर खडी रहे। मेरे दोस्त की पुरानी बाइक आज ही मुझे लेनी है। और हाँ, यदि दीदी वहाँ पैसे लेकर नहीं आयी तो मैं घर वापस नहीं आऊंगा।"

एक गरीब घर में बेटे मोहन की जिद और माता की लाचारी आमने सामने टकरा रही थी।

"बेटा! तेरे पापा तुझे बाइक लेकर देने ही वाले थे, लेकिन पिछले महीने हुए एक्सिडेंट ..

मम्मी कुछ बोले उसके पहले मोहन बोला "मैं कुछ नहीं जानता .. मुझे तो बाइक चाहिये ही चाहिये ...!"

ऐसा बोलकर मोहन अपनी मम्मी को गरीबी एवं लाचारी की मझधार में छोड़ कर घर से बाहर निकल गया।

12वीं बोर्ड की परीक्षा के बाद भागवत 'सर एक अनोखी परीक्षा का आयोजन करते थे।

हालांकि भागवत सर का विषय गणित था, किन्तु विद्यार्थियों को जीवन का गणित भी समझाते थे। और उनके सभी विद्यार्थी विविधता से भरी ये अचूक परीक्षा देने जाते थे।

इस साल परीक्षा का विषय था - मेरी पारिवारिक भूमिका

मोहन परीक्षा खंड में आकर बैठ गया। उसने मन में गांठ बांध ली थी कि यदि मुझे बाइक लेकर नहीं देंगे तो मैं घर नहीं जाऊंगा।

भागवत सर की क्लास में सभी को पेपर वितरित किया गया। पेपर में 10 प्रश्न थे। उत्तर देने के लिये एक घंटे का समय दिया गया था।

मोहन ने पहला प्रश्न पढ़ा और जवाब लिखने की शुरुआत की।

प्रश्न नंबर 1 :- आपके घर में आपके पिताजी, माताजी, बहन, भाई और आप कितने घंटे काम करते हो? सविस्तार बताइये?

मोहन ने तुरंत जवाब लिखना शुरू कर दिया।

जवाब: पापा सुबह छह बजे टिफिन के साथ अपनी ओटोरिक्शा लेकर निकल जाते हैं। और रात को नौ बजे वापस आते हैं। कभी कभार वर्दी में जाना पड़ता है। ऐसे में लगभग पंद्रह घंटे।

मम्मी सुबह चार बजे उठकर पापा का टिफिन तैयार कर, बाद में घर का सारा काम करती हैं। दोपहर को सिलाई का काम करती है। और सभी लोगों के सो जाने के बाद वह सोती हैं। लगभग रोज के सोलह घंटे।

दीदी सुबह कालेज जाती हैं, शाम को 4 से 8 पार्ट टाइम काम करती हैं। और रात्रि को मम्मी को काम में मदद करती हैं। लगभग बारह से तेरह घंटे।

मैं, सुबह छह बजे उठता हूँ, और दोपहर स्कूल से आकर खाना खाकर सो जाता हूँ। शाम को अपने दोस्तों के साथ टहलता हूँ। रात्रि को ग्यारह बजे तक पढ़ता हूँ। लगभग दस घंटे।

(इससे मोहन को मन ही मन लगा, कि उनका कामकाज में औसत सबसे कम है।)

पहले सवाल के जवाब के बाद मोहन ने दूसरा प्रश्न पढ़ा ..

प्रश्न नंबर 2 :- आपके घर की मासिक कुल आमदनी कितनी है?

जवाब: पापा की आमदनी लगभग दस हजार हैं। मम्मी एवं दीदी मिलकर पांच हजार जोड़ते हैं। कुल आमदनी पंद्रह हजार।

प्रश्न नंबर 3 :- मोबाइल रिचार्ज प्लान, आपकी मनपसंद टीवी पर आ रही तीन सीरियल के नाम, शहर के एक सिनेमा हॉल का पता और अभी वहां चल रही मूवी का नाम बताइये?

सभी प्रश्नों के जवाब आसान होने से फटाफट दो मिनट में लिख दिये ..

प्रश्न नंबर 4 :- एक किलो आलू और भिन्डी के अभी हाल की कीमत क्या है? एक किलो गेहूं, चावल और तेल की कीमत बताइये? और जहाँ पर घर का गेहूं पिसाने जाते हो उस चक्की का पता दीजिये।

मोहनभाई को इस सवाल का जवाब नहीं आया। उसे समझ में आया कि हमारी दैनिक आवश्यक जरूरतों की चीजों के बारे में तो उसे लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है। मम्मी जब भी कोई काम बताती थी तो मना कर देता था। आज उसे ज्ञान हुआ कि अनावश्यक चीजें मोबाइल रिचार्ज, मूवी का ज्ञान इतना उपयोगी नहीं है। अपने घर के काम की जवाबदेही लेने से या तो हाथ बटोर कर साथ देने से हम कतराते रहे हैं।

प्रश्न नंबर 5 :- आप अपने घर में भोजन को लेकर कभी तकरार या गुस्सा करते हो?

जवाब: हां, मुझे आलू के सिवा कोई भी सब्जी पसंद नहीं है। यदि मम्मी और कोई सब्जी बनायें तो, मेरे घर में झगड़ा होता है। कभी मैं बगैर खाना खाये उठ खड़ा हो जाता हूँ। (इतना लिखते ही मोहन को याद आया कि आलू की सब्जी से मम्मी को गैस की तकलीफ होती है। पेट में दर्द होता है, अपनी सब्जी में एक बड़ी चम्मच वो अजवाइन डालकर खाती हैं। एक दिन मैंने गलती से मम्मी की सब्जी खा ली, और फिर मैंने थूक दिया था। और फिर पूछा कि मम्मी तुम ऐसा क्यों खाती हो? तब दीदी ने बताया था कि हमारे घर की स्थिति ऐसी अच्छी नहीं है कि हम दो सब्जी बनाकर खायें। तुम्हारी जिद के कारण मम्मी बेचारी क्या करें?) मोहन ने अपनी यादों से बाहर आकर अगला प्रश्न पढ़ा।

प्रश्न नंबर 6 :- अपने घर में की हुई आखरी जिद के बारे में लिखिये ..

मोहन ने जवाब लिखना शुरू किया। मेरी बोर्ड की परीक्षा पूर्ण होने के बाद दूसरे ही दिन बाइक के लिये जिद की थी। पापा ने कोई जवाब नहीं दिया था, मम्मी ने समझाया कि घर में पैसे नहीं है। लेकिन मैं नहीं माना! मैंने दो दिन से घर में खाना खाना भी छोड़ दिया है। जब तक बाइक नहीं लेकर दोगे मैं खाना नहीं खाऊंगा। और आज तो मैं वापस घर नहीं जाऊंगा कह कर निकला हूँ। अपनी जिद का प्रामाणिकता से मोहन ने जवाब लिखा।

प्रश्न नंबर 7 :आपको अपने घर से मिल रही पॉकेट मनी का आप क्या करते हो? आपके भाई-बहन कैसे खर्च करते हैं?

जवाब: हर महीने पापा मुझे सौ रुपये देते हैं। उसमें से मैं, मनपसंद पपफूम, चश्मे लेता हूँ, या अपने दोस्तों की छोटी-मोटी पार्टियों में खर्च करता हूँ।

मेरी दीदी को भी पापा सौ रुपये देते हैं। वो खुद कमाती हैं और पगार के पैसे से मम्मी को आर्थिक मदद करती हैं। हां, उसको दिये गये पॉकेट मनी को वो गल्ले में डालकर बचत करती हैं। उसे कोई मौजशौख नहीं है, क्योंकि वो कंजूस भी हैं।

प्रश्न नंबर 8 :-आप अपनी खुद की पारिवारिक भूमिका को समझते हो?

प्रश्न अटपटा और जटिल होने के बाद भी मोहन ने जवाब लिखा। परिवार के साथ जुड़े रहना, एकदूसरे के प्रति समझदारी से व्यवहार करना एवं मददरूप होना चाहिये। और ऐसे अपनी जवाबदेही निभानी चाहिये। यह लिखते लिखते ही अंतरात्मा से आवाज आयी कि अरे मोहन! तुम खुद अपनी पारिवारिक भूमिका को योग्य रूप से निभा रहे हो? और अंतरात्मा से जवाब आया कि ना बिल्कुल नहीं !

प्रश्न नंबर 9 : आपके परिणाम से आपके माता-पिता खुश हैं? क्या वह अच्छे परिणाम के लिये आपसे जिद करते हैं? आपको डांटते रहते हैं? (इस प्रश्न का जवाब लिखने से पहले हुए मोहन की आंखें भर आयी। अब वह परिवार के प्रति अपनी भूमिका बराबर समझ चुका था।) लिखने की शुरुआत की ..

वैसे तो मैं कभी भी मेरे माता-पिता को आज तक संतोषजनक परिणाम नहीं दे पाया हूँ। लेकिन इसके लिये उन्होंने कभी भी जीद नहीं की है। मैंने बहुत बार अच्छे परिणाम के वादे तोड़े हैं। फिर भी हल्की सी डांट के बाद वही प्रेम और वात्सल्य बना रहता था।

प्रश्न नंबर 10 : पारिवारिक जीवन में असरकारक भूमिका निभाने के लिये इस छुट्टियों में आप कैसे परिवार को मदद करेंगे।

जवाब में मोहन की कलम चली, इससे पहले उनकी आंखों से आंसू बहने लगे, और जवाब लिखने से पहले ही कलम रुक गई .. बेंच के नीचे मुंह रखकर रोने लगा। फिर से कलम उठायी तब भी वो कुछ न लिख पाया। अनुत्तर दसवां प्रश्न छोड़कर पेपर सबमिट कर दिया। स्कूल के दरवाजे पर दीदी को देखकर उसकी ओर दौड़ पड़ा।

"भैया! ये ले आठ हजार रुपये, मम्मी ने कहा है कि बाइक लेकर ही घर आना।" दीदी ने मोहन के सामने पैसे धर दिये। "कहाँ से लायी ये पैसे?" मोहन ने पूछा।

दीदी ने बताया "मैंने मेरी ऑफिस से एक महीने का वेतन एडवांस में ले लिया। मम्मी भी जहां काम करती हैं वहीं से उधार ले लिया, और मेरी पोकैटमनी की बचत से निकाल लिये। ऐसा करके तुम्हारी बाइक के पैसे की व्यवस्था हो गई है। मोहन की दृष्टि पैसे पर स्थिर हो गई।

दीदी फिर बोली " भाई, तुम मम्मी को बोलकर निकले थे कि पैसे नहीं दोगे तो, मैं घर पर नहीं आऊंगा! अब तुम्हें समझना चाहिये कि तुम्हारी भी घर के प्रति जिम्मेदारी है। मुझे भी बहुत से शौक हैं, लेकिन अपने शौक से अपने परिवार को मैं सबसे ज्यादा महत्व देती हूँ। तुम हमारे परिवार के सबसे लाडले हो, पापा को पैर की तकलीफ हैं फिर भी तेरी बाइक के लिये पैसे कमाने और तुम्हें दिये वादे को पूरा करने अपने फ्रैक्चर वाले पैर होने के बावजूद काम किये जा रहे हैं। तेरी बाइक के लिये। यदि तुम समझ सको तो अच्छा है, कल रात को अपने प्रोमिस को पूरा नहीं कर सकने के कारण बहुत दुःखी थे। और इसके पीछे उनकी मजबूरी है। बाकी तुमने तो अनेकों बार अपने वादे तोड़े ही है न? मेरे हाथ में पैसे थमाकर दीदी घर की ओर चल निकली।

उसी समय उनका दोस्त वहां अपनी बाइक लेकर आ गया, अच्छे से चमका कर ले आया था।

"ले .. मोहन आज से ये बाइक तुम्हारी, सब बारह हजार में मांग रहे हैं, मगर ये तुम्हारे लिये आठ हजार ।"

मोहन बाइक की ओर टकटकी लगा कर देख रहा था। और थोड़ी देर के बाद बोला "दोस्त तुम अपनी बाइक उस बारह हजार वाले को ही दे देना! मेरे पास पैसे की व्यवस्था नहीं हो पायी है और होने की हाल में संभावना भी नहीं है।"

और वो सीधा भागवत सर की केबिन में जा पहुंचा।

"अरे मोहन! कैसा लिखा है पेपर ? भागवत सर ने मोहन की ओर देख कर पूछा।

"सर ...!, यह कोई पेपर नहीं था, ये तो मेरे जीवन के लिये दिशानिर्देश था। मैंने एक प्रश्न का जवाब छोड़ दिया है। किन्तु ये जवाब लिखकर नहीं अपने जीवन की जवाबदेही निभाकर दूंगा और भागवत सर को चरणस्पर्श कर अपने घर की ओर निकल पड़ा।

घर पहुंचते ही, मम्मी पापा दीदी सब उसकी राह देखकर खडे थे।

"बेटा! बाइक कहाँ है?" मम्मी ने पूछा।

मोहन ने दीदी के हाथों में पैसे थमा दिये और कहा कि सॉरी! मुझे बाइक नहीं चाहिये। और पापा मुझे ऑटो की चाभी दो, आज से मैं पूरे वेकेशन तक ऑटो चलाऊंगा और आप थोड़े दिन आराम करेंगे, और मम्मी आज मैं मेरी पहली कमाई शुरू होगी। इसलिये तुम अपनी पसंद की मैथी की भाजी और बैगन ले आना, रात को हम सब साथ मिलकर के खाना खायेंगे।

मोहन के स्वभाव में आये परिवर्तन को देखकर मम्मी ने उसको गले से लगा लिया और कहा कि "बेटा! सुबह जो कहकर तुम गये थे वो बात मैंने तुम्हारे पापा को बतायी थी, और इसलिये वो दुःखी हो गये, काम छोड़ कर वापस घर आ गये। भले ही मुझे पेट में दर्द होता हो लेकिन आज तो मैं तेरी पसंद की ही सब्जी बनाऊंगी।"

मोहन ने कहा "नहीं मम्मी! अब मैं समझ गया हूँ कि मेरे घर परिवार में मेरी भूमिका क्या है? मैं रात को बैंगन मैथी की सब्जी ही खाऊंगा, परीक्षा में मैंने आखरी जवाब नहीं लिखा है, वह प्रेक्टिकल करके ही दिखाना है। और हाँ मम्मी हम गेहूँ पिसाने कहां जाते हैं, उस चक्की का नाम और पता भी मुझे दे दो"

और उसी समय भागवत सर ने घर में प्रवेश किया। और बोले "वाह! मोहन जो जवाब तुमने लिखकर नहीं दिये वे प्रेक्टिकल जीवन में जीकर दिखाओगे ..

"सर! आप और यहाँ?" मोहन भागवत सर को देख कर आश्चर्य चकित हो गया।

"मुझे मिलकर तुम चले गये, उसके बाद मैंने तुम्हारा पेपर पढा इसलिये तुम्हारे घर की ओर निकल पडा। मैं बहुत देर से तुम्हारे अंदर आये परिवर्तन को सुन रहा था।

मेरी अनोखी परीक्षा सफल रही और इस परीक्षा में तुमने पहला नंबर पाया है।"

ऐसा बोलकर भागवत सर ने मोहन के सर पर हाथ रखा। मोहन ने तुरंत ही भागवत सर के पैर छुए और ऑटोरिक्शा चलाने के लिये निकल पडा। परिवार नाम का भले ही कोई वार न हो, लेकिन उसके बगैर एक भी त्यौहार नहीं है।

विरोधियों को मौन रह कर पराजित किया जा सकता है—प्रेरक कथा

एक संत कभी भी क्रोध नहीं करते थे, एक व्यक्ति ने संत को क्रोधित करने के लिए उनका अपमान करना शुरू कर दिया, वह व्यक्ति संत के घर परिवार वालों के लिए भी बुरी बातें कहने लगा। क्रोध एक ऐसी बुराई है, जिसकी वजह से कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। क्रोध में बोले गए शब्दों की वजह से घर-परिवार के साथ ही समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। अगर कोई हमारी बुराई भी करता है तो हमें शांत रहना चाहिए। हम मौन से भी विरोधियों को पराजित कर सकते हैं। इस संबंध में लोक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार पुराने समय में एक संत हमेशा शांत रहते थे। कभी किसी पर क्रोध नहीं करते, दूसरों को भी यही सलाह देते थे। काफी लोग रोज उनके प्रवचन सुनने पहुंचते थे। कभी-कभी कुछ लोग उन्हें झूठा और पाखंडी भी कहते थे। लेकिन, संत उन्हें कुछ नहीं कहते। संत के अच्छे और शांत व्यवहार की वजह से उनकी ख्याति आसपास के क्षेत्रों में भी फैल रही थी।

एक व्यक्ति ने सोचा कि वह संत को क्रोधित कर सकता है। उसने गांव के लोगों से कहा कि वह संत को झूठा साबित कर देगा। वह संत के आश्रम में पहुंचा और संत को बुरा भला कहने लगा। कुछ ही देर में गांव के लोग भी वहां इकट्ठा हो गए। वह व्यक्ति बोलने लगा कि ये संत नहीं चोर है। रोज रात में चोरी करता है और सुबह साधु बनने का ढोंग करता है। मैं इसे और इसके परिवार को अच्छी तरह जानता हूँ। इसके परिवार में भी सभी चोर हैं। व्यक्ति बार-बार संत को बुरी बातें कह रहा था, लेकिन संत चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे।

काफी देर बार जब वह व्यक्ति बोलते-बोलते थक गया तो संत ने उसे एक गिलास पीने का पानी दिया और कहा कि बोलते-बोलते तुम थक गए हो, तुम्हें प्यास भी लगी है। ये पानी पी लो।

संत का व्यवहार देखकर वह व्यक्ति शर्मिंदा हो गया। वह संत से क्षमा मांगने लगा। संत ने उससे कहा कि भाई तुम जो भी बातें बोल रहे थे, मैंने उन पर ध्यान दिया नहीं, मैंने वो बातें ग्रहण ही नहीं की, जो तुम बोल रहे थे। संत की बातें सुनकर वह व्यक्ति समझ गया कि संत ने सच में क्रोध को जीत लिया है। ये सच्चे संत हैं।

-संकलित



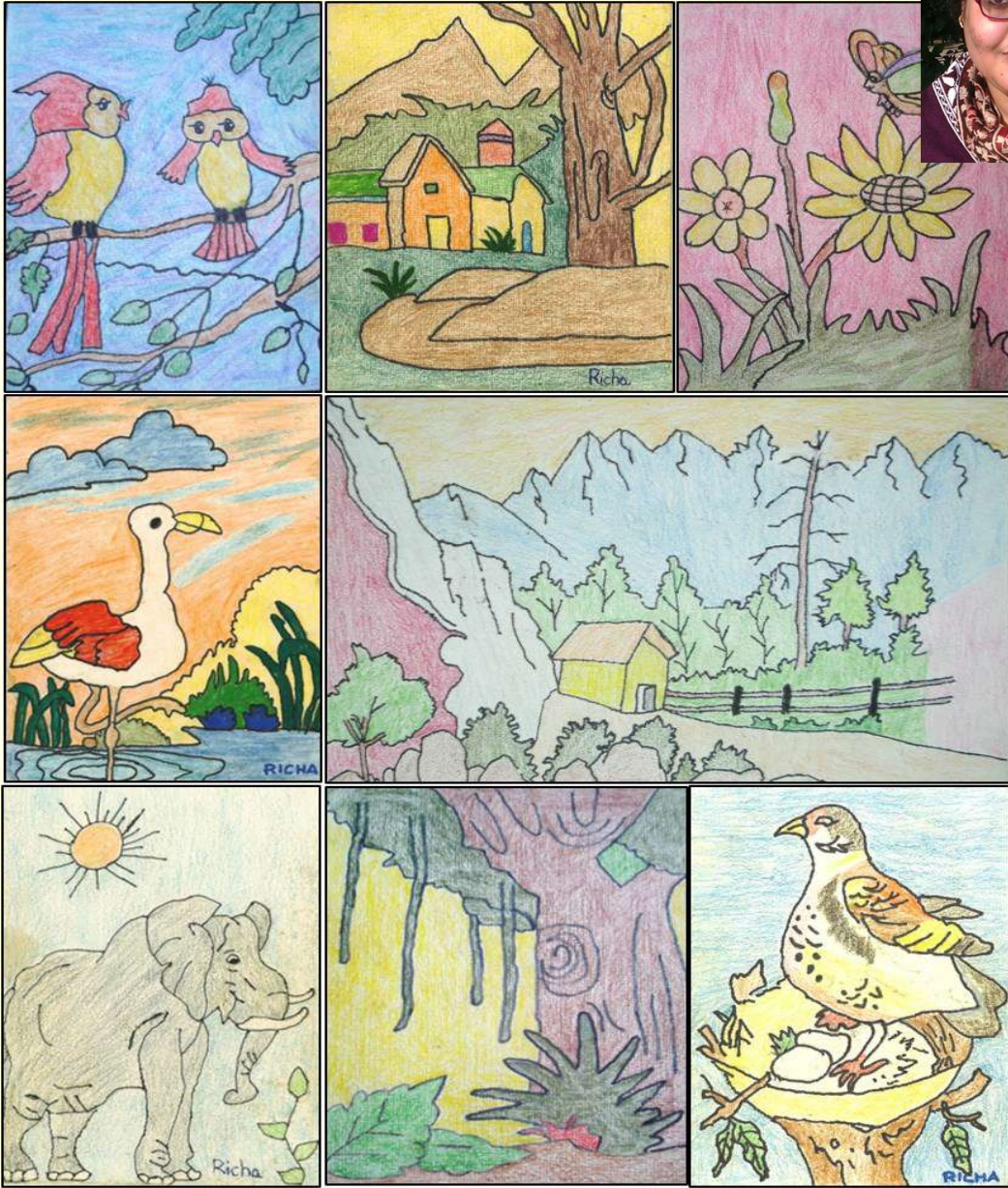
दीप्ति सक्सेना, सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र
सक्सेना (सेवानिवृत्त), एनआरएससी,
हैदराबाद

राजभाषा समारोह -2020 के अवसर पर मेरा बगीचा शीर्षक के अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई पेंटिंग्स



धनन्जय रेड्डी

ऋचा त्रिवेदी, बहन श्रीमती शिवम त्रिवेदी
क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, दक्षिण



राजभाषा समारोह -2020 के अवसर पर मेरा बगीचा शीर्षक के अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई पेंटिंग्स





देवी प्रसाद
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, हैदराबाद

मैं कौन हूं

मैं कौन हूं, क्या है मूल मेरा
क्यों आती है कभी खुशियां इतनी
क्यों आते इतने गम नए
इतने में शक इतने में हर्ष लिए
उलझ गया मैं बंधन के इस चक्र में
मैं निकल पड़ा ढूंढने इस दुख का कारण
मिली ज मेरी गुरू माँ
दिखाया इस कष्ट का निवारण
दिया जीवन को एक नया मोड़
जिंदगी के सफर में मिल गया नया रोड
मैंने ये जाना वेद उपनिषदों से
तन का मूल है पांच तत्व
मुझे समझ हुई,
पृथ्वी जैसे धीरज रखना
जल जैसे अनकूलन क्षमता रखना
आग जैसे समान न्याय करना
वायु जैसे केवल स्पर्श रखे रहना
आकाश जैसे प्रेम फैलाना

निवेदिता सिन्हा
आरआरएससी, पूर्व



मेरी हिन्दी

मेरी हिन्दी मेरी बोली
मेरी सखी, वो मेरी सहेली।।
भाव व्यक्त मैं कर पाती हूँ।
आसानी से कह पाती हूँ।
अपने मन के भावों को
दिल की सभी इच्छाओं को
इतनी सरल ये भाषा है।
जिसे समझना आसां है।।
जैसी ये लिखी जाती है
वैसी ही पढ़ी जाती है।
स्वर - व्यंजन है आधार इसका।
हर ध्वनि को व्यक्त कर सकती है।
शब्दों का भंडार भरा है।
हर भाव प्रकट कर सकती है
बैर का इसमें भाव नहीं,
हर भाषा को अपनाती है।
इसीलिए माँ भारती विविधताओं
में भी एक कहलाती है।।

पीएच आदित्य साई
माता-एल रम्या, पिता-पी हरि कुमार
एम वी सत्यभामा, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद



विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम (वी.एस.सी.पी.): अजमेर – एक अविस्मरणीय अनुभव

डॉ. राकेश पालीवाल, क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पश्चिम, जोधपुर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने वर्ष 2019-20 को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई की जन्म शताब्दी के रूप में मनाने का निर्णय लिया। फलस्वरूप, 12 अगस्त को उनकी जन्मतिथि से शुरुआत करते हुए, इसरो ने अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित ज्ञान को विद्यार्थी समुदाय तक पहुंचाने हेतु देश भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन आरंभ किया। इन कार्यक्रमों में प्रदर्शनीयां, स्कूली बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों के व्याख्यान शामिल हैं। यह कार्यक्रम संपूर्ण भारत में 100 चुनिंदा शहरों में संचालित करने का निर्णय लिया गया। डॉ. साराभाई के जन्म स्थल, अहमदाबाद में 12 अगस्त, 2019 को पूर्ववलोकन उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इसरो/अं.वि. तथा प.ऊ.वि. दोनों विभागों के कई महत्वपूर्ण पदाधिकारियों भाग ने लिया।

उपरोक्त के आलोक में, क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (पश्चिम), रा.सु.सं.कें./इसरो,जोधपुर को दिनांक 08-10 जनवरी, 2020 के दौरान राजस्थान के अजमेर शहर में विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम के आयोजन का अवसर मिला। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में अंतरिक्ष प्रदर्शनी, विज्ञान क्लब गतिविधियां, पानी के रॉकेट का प्रमोचन, प्रतियोगिताएँ (प्रश्नोत्तरी/चित्रकला/वाग्मिता) शामिल थी। यह कार्यक्रम सुदूर संवेदन एवं भूसूचना विभागद्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एम.डी.एस.यू.)के परिसर में स्थित डॉ. विक्रम साराभाई भवन में सह-आयोजित किया गया। जिला शिक्षा कार्यालय, अजमेर द्वारा पूरे आयोजन के दौरान विभिन्न विद्यालयोंके साथ समन्वय किया गया।

अजमेर शहर में आयोजित विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम (वी.एस.सी.पी.)के आयोजन दल का हिस्सा होने के कारण इस कार्यक्रम से संबंधित संक्षिप्त जानकारी और विशेष अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। दरअसल, इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए अजमेर शहर को चुनने के पीछे एक विशेष कारण रहा। जैसा कि अजमेर शहर को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के मुख्यालय के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा स्नातक और आगे की शिक्षा के लिए, प्रतिष्ठित महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर शहर में ही स्थित है। इसके अलावा मेयो कॉलेज भी इसी शहर में स्थित है जो भारत के सबसे पुराने सार्वजनिक बोर्डिंग स्कूल में से एक है। अजमेर शहर के उपरोक्त शैक्षिक इतिहास व पृष्ठभूमि के आधार पर तथा कार्यक्रम के सुगम और कुशल संचालन हेतु हमारे केंद्र के वैज्ञानिकों की टीम ने 21-22 अक्टूबर, 2019 के दौरान अजमेर शहर का दौरा किया। विभिन्न स्कूलों और एम.डी.एस. विश्वविद्यालय के प्रशासन से भेंट की एवं जिला शिक्षा अधिकारी से भी मुलाकात की। जिला शिक्षा अधिकारी ने इस आयोजन को लेकर बहुत सकारात्मक और उत्साही रवैया दिखाया और पूरे आयोजन में समन्वय हेतु सहमति प्रदान की। उन्होंने विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों एवं अजमेर की जलवायु परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए 08-10 जनवरी के दौरान के समय को इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु आदर्श बताया। इसके बाद हमारे केंद्र के वैज्ञानिक दल ने महर्षि दयानंद सरस्वती विद्यालय, अजमेर में स्थित डॉ. विक्रम साराभाई भवन का दौरा किया और विश्वविद्यालय के कुलपति एवं सुदूर संवेदन एवं भूसूचना विभाग के प्रधान से मुलाकात के पश्चात् अजमेर में इस कार्यक्रम के आयोजन को लेकर हम पूरी तरह से आश्वस्त एवं तैयार हो गए और इस प्रकार कार्यक्रम को सुदूर संवेदन एवं भूसूचना विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर द्वारा एम.डी.एस.यू. के परिसर में स्थित डॉ. विक्रम साराभाई भवन में सह-आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस कार्यक्रम हेतु विद्यालयों के साथ समन्वय की जिम्मेदारी जिला शिक्षा कार्यालय, अजमेर ने ली।

अजमेर शहर में आयोजन स्थल के चयन के पश्चात्, अगला चरण था – कार्यक्रम नियोजन, समय-सारणी निर्धारण एवं निमंत्रण प्रेषण आदि से संबंधित गतिविधियां। सबसे पहले, सरकारी एवं निजी विद्यालयों के लिए दिन-वार एवं सत्र-वार कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। तीन दिवसीय कार्यक्रम को अंतरिक्ष एवं विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन, वी.एस.सी.पी. उद्घाटन एवं समापन समारोह के साथ छः सत्रों में विभाजित किया गया। प्रत्येक दो घंटे के सत्र में विज्ञान एवं अंतरिक्ष क्लब गतिविधियाँ, त्वरित प्रश्नोत्तरी (प्रश्न और उत्तर), वाग्मित प्रतियोगिता, पानी के रॉकेट के प्रक्षेपण को शामिल किया गया। जिससे आने वाले सभी विद्यार्थियों को समान अवसर एवं सहभागिता मिले।

जिला शिक्षा कार्यालय द्वारा प्रत्येक विद्यालय के डाक पते, दूरभाष संपर्क संख्या एवं ई-मेल आदि के साथ विद्यालयों का डेटाबेस तैयार किया गया जो कि कार्यक्रम से संबंधी पत्राचार एवं अन्य जानकारियों के वितरण के लिए अत्यधिक उपयोगी रहा। इसके उपरांत, जिला शिक्षा कार्यालय, अजमेर द्वारा चयनित विद्यालयों को निमंत्रण-पत्र के साथ कार्यक्रम की विवरणिका ई-मेल एवं डाक द्वारा भेजी गई। इसके अलावा, 14 महाविद्यालय के विद्यार्थियों को भी इस कार्यक्रम हेतु निमंत्रण भेजा गया। साथ ही, समानांतर रूप से आयोजन हेतु अन्य आवश्यक कार्यों को अंतिम रूप दिया गया।

आयोजन के दिन अर्थात् 08 जनवरी, 2020 को प्रातःमहाप्रबंधक, क्षे.सु.सं.के.-प. एवं प्रधान, सुदूर संवेदन एवं भूसूचना विभाग, एम.डी.एस.यू., अजमेर द्वारा अंतरिक्ष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

इसके पश्चात् विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती एवं डॉ. विक्रम साराभाई के छायाचित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस कार्यक्रम की शोभा, गणमान्य व्यक्तियों यथा डॉ. शक्ति सिंह शेखावत, अतिरिक्त जिला न्यायाधीश, अजमेर (मुख्य अतिथि), प्रो. आर.पी.सिंह, माननीय कुलपति, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (अध्यक्ष), श्री सुरेश सिंधी, ए.डी.एम. सिटी, अजमेर; श्री देवी सिंह कच्छावा, जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मुख्यालय, अजमेर; कार्यक्रम के मेजबान प्रो. सुब्रतो दत्ता और आयोजक डॉ. एस. श्रीनिवास राव ने बढ़ाई। सभागार में मौजूद सभी द्वारा विश्वविद्यालय का 'कुलगीत' गान किया गया। तत्पश्चात् सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। इसके उपरांत मैनें कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी सभी के समक्ष प्रस्तुत की। इसके बाद, कार्यक्रम के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथि ने सभा को संबोधित किया। इसके उपरांत, डॉ. एस. श्रीनिवास राव, महाप्रबंधक, क्षे.सु.सं.के.-प. द्वारा डॉ. विक्रम साराभाई स्मारक व्याख्यान दिया गया।



अंतरिक्ष प्रदर्शनी एवं विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम के शुभारंभ कार्यक्रम की झलकियाँ

इस कार्यक्रम में कुल 65 विद्यालयों, 4 महाविद्यालयों और सरकारी / निजी विद्यालयों / महाविद्यालयों के लगभग 2500 विद्यार्थियों ने भाग लिया। 24 सरकारी विद्यालयों एवं कुछ निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को लाने और वापस छोड़ने हेतु एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर द्वारा 15 सीटों की क्षमता वाले 12 वाहनों की व्यवस्था की गई। हमारे कार्यालय द्वारा शुभारंभ कार्यक्रम के उपरांत सभी उपस्थित विद्यार्थियों को अल्पाहार वितरित किया गया।

इस आयोजन के दौरान इसरो अंतरिक्ष प्रदर्शनी, विज्ञान और अंतरिक्ष क्लब गतिविधियाँ, आयोजित की गईं। वास्तव में, कक्षा 06 से 08 के विद्यार्थियों (जूनियर वर्ग) एवं कक्षा 09 से 12 के विद्यार्थियों (सिनियर वर्ग) हेतु दिनांक 03.01.2020 से 06.01.2020 के दौरान विद्यालय स्तर पर **अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में इसरो की भूमिका** विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रत्येक विद्यालय से तीन सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियाँ पुरस्कार चयन हेतु मंगवाई गईं। तदनुसार, हमें लगभग 150 चित्रकलाएँ प्राप्त हुईं। जिनका मूल्यांकन कर प्रत्येक समूह के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय एवं सातवना पुरस्कार की घोषणा की गई। किंतु, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि कुछ प्रतिभावान एवं मेधावी छात्र राजकीय प्रशासनिक परीक्षाओं एवं शीतकालीन सत्र विस्तार के कारण 03 से 06 जनवरी के दौरान विद्यालय स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में सहभागिता नहीं कर पाएँ हो, अतः सभी को समान अवसर देने के उद्देश्य से दिनांक 08 जनवरी, 2020 को आयोजन स्थल पर अपराह्न 1:00 से 3:00 बजे के दौरान जूनियर एवं सीनियर वर्ग के उपस्थित विद्यार्थियों हेतु एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से कुल 33 विद्यार्थियों ने भाग लिया और इस प्रतियोगिता के जूनियर एवं सिनियर वर्ग के प्रतिभागी विद्यार्थियों हेतु।



शुभारंभ एवं समापन कार्यक्रम की झलकियाँ

विद्यार्थियों को अल्पाहार वितरण



विद्यार्थियों द्वारा अंतरिक्ष प्रदर्शनी का अवलोकन

अलग से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की घोषणा की गई तथा सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। वी.एस.सी.पी. सामग्री विवेकपूर्ण तरीके से विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के दौरान विद्यार्थियों में वितरित की गई। प्रत्येक सत्र में पानी के रॉकेट का प्रक्षेपण किया गया। भवन में उपलब्ध क्षमता के आधार पर विद्यार्थियों के आगमन, कार्यक्रम में रुकने और प्रस्थान तक की नियोजित समय-सारणी के कारण विद्यार्थियों और टीम सदस्यों के मध्य संवादात्मक सत्र रहा और विद्यार्थियों को प्रदर्शनी अवलोकन एवं प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता हेतु पर्याप्त समय और अवसर मिला। सुदूर संवेदन एवं भूसूचना विभाग, एम.डी.एस.यू., अजमेर के लगभग 22 छात्रों और 2 संकाय सदस्यों ने स्वयं सेवी के रूप में सेवाएं देकर सहयोग प्रदान किया। इस आयोजन की मीडिया कवरेज की जिम्मेदारी डॉ. राजू शर्मा, जनसंपर्क अधिकारी, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ने बेखूबी निभाई।



महाप्रबंधक महोदय, क्षे.सु.सं.के.-प., जोधपुर के नेतृत्व में हमारी टीम में मेरे साथ श्री आशीष कुमार जैन, श्री सागर एस.सालुंखे, श्री शशिकांत शर्मा, श्री मनीष कुमार वर्मा और शम्भू सिंह टाक शामिल थे।

इस कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी विद्यार्थियों से फीडबैक देने हेतु अनुरोध किया गया। बच्चों द्वारा लिखित प्रतिक्रियाओं एवं उनके द्वारा बनाई गई चित्रकलाएँ इसरो के प्रति आम जन की आदर भावनाएँ परिलक्षित होती है, जो

पानी के रॉकेट का प्रक्षेपण

निश्चित तौर पर हमारे लिए प्रेरणा और ऊर्जा का स्रोत है। इस कार्यक्रम में पधारे स्थानीय नागरिकों, अध्यापकगणों एवं स्कूली छात्रों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि सराहना की। इस कार्यक्रम के दौरान अन्य विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से आयोजित कर संपन्न करवाना हमारे लिए हर्ष का विषय तो था ही, साथ ही हमारे लिए भारत की भावी पीढ़ी के साथ संवाद स्थापित कर इसरो/अंतरिक्ष विभाग की गतिविधियों एवं अंतरिक्ष विज्ञान से उन्हें अवगत कराना हमारे लिए परम आनंद एवं संतोष देने वाला अद्भुत अनुभव रहा।



वाग्मिता प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी को पुरस्कार वितरण

आयोजन के महत्वपूर्ण आयाम :

1. इस आयोजन के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि सरकारी व निजी विद्यालय के प्रतिभागी विद्यार्थियों

को इस कार्यक्रम में सम्मिलित की गई सभी गतिविधियों में सहभागिता करने का अवसर मिले। इसलिए, प्रत्येक सत्र में सभी गतिविधियों जैसे कि अंतरिक्ष प्रदर्शनी, विज्ञान और अंतरिक्ष क्लब गतिविधियाँ, त्वरित प्रश्नोत्तरी (प्रश्न और उत्तर), भाषण प्रतियोगिता के साथ-साथ आयोजन का मुख्य आकर्षण पानी के रॉकेट का प्रक्षेपण आदि की व्यवस्था की गई।



2. क्षे.सु.सं.के.-प. की हमारी टीम एवं एम.डी.एस.यू., अजमेर के स्वयं सेवी सदस्य, अंतरिक्ष प्रदर्शनी में प्रदर्शित अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधी बुनियादी एवं उन्नत विषय-सामग्री से विद्यार्थियों को परिचित कराने एवं सरल भाषा में समझाने हेतु सभी सत्रों के दौरान मौजूद रहें।
3. आयोजन स्थल की क्षमता को मद्देनजर रखते हुए प्रतिभागी स्कूली छात्रों की संख्या को विभिन्न सत्रों में इस प्रकार विभाजित किया गया कि सभी छात्रों को प्रदर्शनी देखने एवं अन्य गतिविधियों में सहभागिता करने का उचित समय मिले; साथ ही इस बात को भी सुनिश्चित किया गया कि किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके।
4. विद्यार्थियों एवं अन्य दर्शकों की सुरक्षा एवं रॉकेट से आकस्मिक दुर्घटना से बचाव के लिए पानी के रॉकेट प्रक्षेपण स्थल के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाया गया।

जानिए अदरक के पानी के लाभ, जानकर रह जाएंगे हैरान

अदरक की चाय पीने से सेहत को कई फायदे होते हैं ये तो अधिकतर लोग जानते हैं, लेकिन क्या आपको ये पता है कि अदरक का पानी पीना भी बहुत ही फायदेमंद होता है और ये पानी कई सेहत समस्याओं को दूर करने में सहायक होता है। आइए, जानते हैं अदरक का पानी पीने के सेहत लाभ -



प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है: अदरक का पानी पीने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, साथ ही ये सर्दी-खांसी और वायरल इंफेक्शन जैसी बीमारियों की आशंका कम कर देता है।

खाना पाचन में फायदेमंद: इसे पीने से आपका पाचन तंत्र सही काम करता है और खाना आसानी से पचने में मदद मिलती है।

वजन कम करने में सहायक: इसे नियमित पीने से शरीर का अतिरिक्त फैट खत्म होते जाता है, जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है।

कैंसर से रक्षा: अदरक में ऐसे तत्व भी पाए जाते हैं जो कैंसर जैसी बीमारी से लड़ने में असरदार होते हैं। इसलिए ये कैंसर होने की आशंका को कम करने में सहायक होता है।

त्वचा के लिए फायदेमंद: अदरक का पानी पीने से खून साफ रहता है, जिसका असर त्वचा पर बढ़ती चमक के रूप में दिखई देता है। साथ ही ये पिंपल्स और स्किन इंफेक्शन जैसी परेशानियां से भी बचाता है।

विनोद एम बोथले, उप-निदेशक, डीपीए



भारत की महान संस्कृति की एक छोटी सी झलक

✍ जया सक्सेना, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

हमारे देश भारत के अति महत्वपूर्ण आविष्कार "शून्य"(0) से तो हम सब भली भांति परिचित हैं और इस आविष्कार का महत्त्व भी जानते हैं। आइये, जानें हमारी भारतीय संस्कृति की विश्व को कुछ और महत्वपूर्ण सौगातें :

विश्व का सबसे बड़ा और वैज्ञानिक समय गणना तन्त्र

- क्रति = सैकन्ड का 34000 वाँ भाग
- 1 त्रुति = सैकन्ड का 300 वाँ भाग
- 2 त्रुति = 1 लव
- 1 लव = 1 क्षण
- 30 क्षण = 1 विपल
- 60 विपल = 1 पल
- 60 पल = 1 घड़ी (24 मिनट)
- 2.5 घड़ी = 1 होरा (घन्टा)
- 24 होरा = 1 दिवस (दिन या वार)
- 7 दिवस = 1 सप्ताह
- 4 सप्ताह = 1 माह
- 2 माह = 1 ऋतू
- 6 ऋतू = 1 वर्ष
- 100 वर्ष = 1 शताब्दी
- 10 शताब्दी = 1 सहस्राब्दी
- 432 सहस्राब्दी = 1 युग
- 2 युग = 1 द्वापर युग
- 3 युग = 1 त्रैता युग
- 4 युग = सतयुग
- सतयुग + त्रैतायुग + द्वापरयुग + कलियुग = 1 महायुग
- 76 महायुग = मनवन्तर
- 1000 महायुग = 1 कल्प
- 1 नित्य प्रलय = 1 महायुग (धरती पर जीवन अन्त और फिर आरम्भ)
- 1 नैमित्तिका प्रलय = 1 कल्प।(देवों का अन्त और जन्म)
- महाकाल = 730 कल्प।(ब्राह्मा का अन्त और जन्म)

सम्पूर्ण विश्व का सबसे बड़ा और वैज्ञानिक समय गणना तन्त्र यही है। जो हमारे देश भारत में बना, जिस पर हमको गर्व है।

संख्याओं का महत्त्व:

दो की महत्ता

दो लिंग : नर और नारी ।

दो पक्ष : शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।

दो पूजा : वैदिकी और तांत्रिकी (पुराणोक्त)।

दो अयन : उत्तरायन और दक्षिणायन।

"संवाद"- एनआरएससी गृह-पत्रिका

तीन की महत्ता

तीन देव : ब्रह्मा, विष्णु, शंकर।
तीन देवियाँ : महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, महा गौरी।
तीन लोक : पृथ्वी, आकाश, पाताल।
तीन गुण : सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण।
तीन स्थिति : ठोस, द्रव, वायु।
तीन स्तर : प्रारंभ, मध्य, अंत।
तीन पड़ाव : बचपन, जवानी, बुढ़ापा।
तीन रचनाएँ : देव, दानव, मानव।
तीन अवस्था : जागृत, मृत, बेहोशी।
तीन काल : भूत, भविष्य, वर्तमान।
तीन नाड़ी : इडा, पिंगला, सुषुम्ना।
तीन संध्या : प्रातः, मध्याह्न, सायं।
तीन शक्ति : इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति।

चार की महत्ता

चार धाम : बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम्, द्वारका।
चार मुनि : सनत, सनातन, सनंद, सनत कुमार।
चार वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
चार निति : साम, दाम, दंड, भेद।
चार वेद : सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।
चार स्त्री : माता, पत्नी, बहन, पुत्री।
चार युग : सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलयुग।
चार समय : सुबह, शाम, दिन, रात।
चार अप्सरा : उर्वशी, रंभा, मेनका, तिलोत्तमा।
चार गुरु : माता, पिता, शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु।
चार प्राणी : जलचर, थलचर, नभचर, उभयचर।
चार जीव : अण्डज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज।
चार वाणी : ओम्कार, अकार, उकार, मकार।
चार आश्रम : ब्रह्मचर्य, ग्राहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास।
चार भोज्य : खाद्य, पेय, लेहा, चोष्य।
चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
चार वाद्य : तत्, सुषिर, अवनद्व, घन।

पाँच की महत्ता

पाँच तत्व : पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल, वायु।
पाँच देवता : गणेश, दुर्गा, विष्णु, शंकर, सुर्य।
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ : आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
पाँच कर्म : रस, रूप, गंध, स्पर्श, ध्वनि।
पाँच उंगलियाँ : अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।
पाँच पूजा उपचार : गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।
पाँच अमृत : दूध, दही, घी, शहद, शक्कर।
पाँच प्रेत : भूत, पिशाच, वैताल, कुष्मांड, ब्रह्मराक्षस।
पाँच स्वाद : मीठा, चर्खा, खट्टा, खारा, कड़वा।
पाँच वायु : प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।
पाँच इन्द्रियाँ : आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा, मन।
पाँच वटवृक्ष : सिद्धवट (उज्जैन), अक्षयवट (Prayagraj), बोधिवट (बोधगया), वंशीवट (वृंदावन), साक्षीवट (गया)।
पाँच पत्ते : आम, पीपल, बरगद, गुलर, अशोक।
पाँच कन्या : अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती, द्रौपदी।

छः की महत्ता

छः ऋतु : शीत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, बसंत, शिशिर।
छः ज्ञान के अंग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।
छः कर्म : देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान।
छः दोष : काम, क्रोध, मद (धमंड), लोभ (लालच), मोह, आलस्य।

सात की महत्ता

सात छंद : गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती।
सात स्वर : सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
सात सुर : षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद।
सात चक्र : सहस्त्रार, आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान, मुलाधार।
सात वार : रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।
सात मिट्टी : गौशाला, घुड़साल, हाथीसाल, राजद्वार, बाम्बी की मिट्टी, नदी संगम, तालाब।
सात महाद्वीप : जम्बुद्वीप (एशिया), प्लक्षद्वीप, शात्मलीद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप, पुष्करद्वीप।
सात ऋषि : वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, अत्रि, वामदेव, शौनक।
सात ऋषि : वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, भारद्वाज।
सात धातु (शारीरिक) : रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य।
सात रंग : बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल।
सात पाताल : अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल।
सात पुरी : मथुरा, हरिद्वार, काशी, अयोध्या, उज्जैन, द्वारका, काञ्ची।
सात धान्य : उड़द, गेहूँ, चना, चावल, जौ, मूँग, बाजरा।

आठ की महत्ता

आठ मातृका : ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, वाराही, नारसिंही, चामुंडा।
आठ लक्ष्मी : आदिलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी।
आठ वसु : अप (अहः/अयज), ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास।
आठ सिद्धि : अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।
आठ धातु : सोना, चांदी, ताम्बा, सीसा जस्ता, टिन, लोहा, पारा।

नौ की महत्ता

नवदुर्गा : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री।
नवग्रह : सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।
नवरत्न : हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, मूंगा, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनिया।
नवनिधि : पद्मनिधि, महापद्मनिधि, नीलनिधि, मुकुंदनिधि, नंदनिधि, मकरनिधि, कच्छपनिधि, शंखनिधि, खर्व/मिश्र निधि।

दस की महत्ता

दस महाविद्या : काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्तिका, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला।
दस दिशाएँ : पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, ऊपर, नीचे।
दस दिक्पाल : इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैऋति, वरुण, वायुदेव, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनंत।
दस अवतार (विष्णुजी) : मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।
दस सति : सावित्री, अनुसुइया, मंदोदरी, तुलसी, द्रौपदी, गांधारी, सीता, दमयन्ती, सुलक्षणा, अरुंधती।

उक्त जानकारी शास्त्रोक्त आधार पर है, यह हमारे ज्ञानी ऋषि मुनियों के अनुसंधान का परिणाम है एवं संस्कार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारी अनमोल निधि है जिस पर हम सब भारतवासियों को गर्व है।

बेसन के लड्डू बनाने की विधि

✍ श्रीमती संतोष शर्मा, पत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा क्षे.सु.सं.कें.-प., जोधपुर

आवश्यक सामग्री

बेसन – 2 कप (200 ग्राम)

देशी शक्कर – 1.5 कप (225 ग्राम)

घी – 1 कप (200 ग्राम)

बादाम – 25 (40 ग्राम)

काजू – 25 (40 ग्राम)

इलायची पाउडर – ½ छोटी चम्मच

पिस्ता – गार्निश के लिए



पाक-विधि:-

कड़ाही में घी डाल दीजिए। घी के पिघलने (मेल्ट होने) पर बेसन डाल कर कलछी से लगातार चलाते हुए बेसन को धीमी आँच पर भूजिये, जब बेसन का रंग हल्का ब्राउन होने लगे और बेसन से अच्छी सुगन्ध आने लगे तो उसमें एक टेबलस्पून पानी के छींटे लगा दीजिये (इससे बेसन में झाग आयेंगे और उसमें दाने बन जायेंगे, जो कि लड्डू का स्वाद बहुत अच्छा कर देंगे)। बेसन को तब तक भूनें जब तक की इसमें से झाग खतम न हो जाए। झाग खतम होने पर बेसन भून कर तैयार है, गैस बन्द कर दीजिये, भूनें हुए बेसन को ठंडा करने के लिये अलग से प्लेट में निकाल लीजिए।

काजू और बादाम को बारीक काट कर तैयार कर लीजिए। पिस्तों को भीपतला पतला कतर लीजिए। बेसन के हल्का ठंडा होने पर इसमें कटे हुए काजू बादाम डाल कर मिक्स कर लीजिए, इलायची पाउडर और शक्कर डाल कर अच्छे से मिक्स कर लीजिए। लड्डू बनाने के लिए मिश्रण तैयार है। मिश्रण में से थोड़ा सा मिश्रण लेकर गोल-गोल लड्डू बना लीजिए। लड्डू के ऊपर कतरे हुए पिस्ता सजा दीजिए। बेसन के लड्डू तैयार है। बेसन के लड्डू को 6-7 घंटे तक हवा में ही रहने दीजिए। लड्डू खुश्क हो जाएंगे, फिर लड्डूओं को एयरटाइटकन्टेनर में भरकर रख लीजिए और 2-3 महिने भर तक कभी भी खाइए।



कभी सोचा ना था...

✍ वेदिका शर्मा, सुपुत्री श्री ओम प्रकाश शर्मा, क्षे.सु.सं.कें.-प., जोधपुर

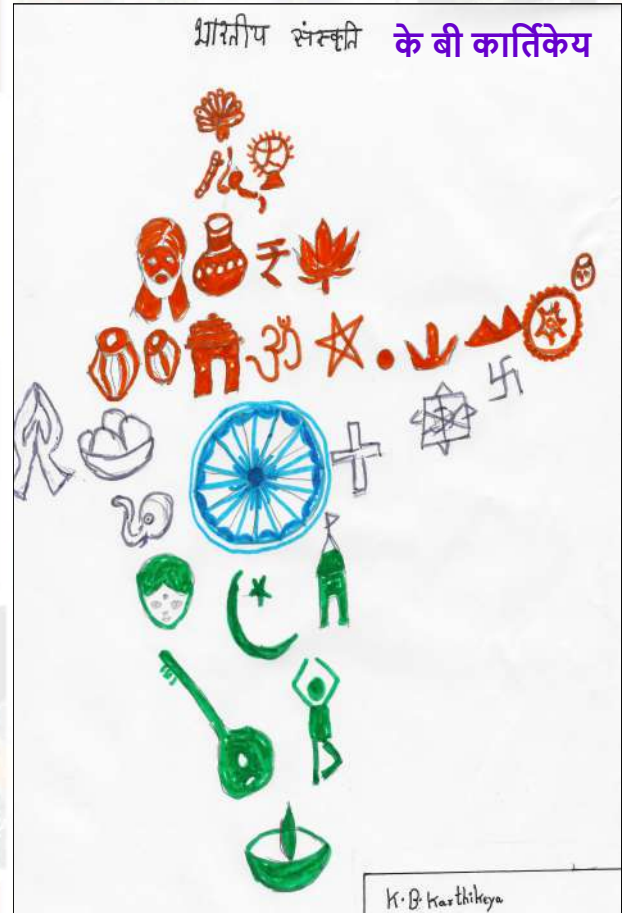
कभी सोचा ना था...
ऐसा वक्त भी आयेगा!

माँ बोले – फोन पर बातें करती रहना,
वीडियोकॉल करके शक्ल देख लेना,
पर पीहर की तरफ कदम मत बढ़ाना...

सासुजी बोले – दो चार काम कम कर लेना,
कहा-सुनी हो तो दो बातें तुम भी कह लेना,
पर पर्स उठाकर चल मत देना...

बच्चों को है दादी की सीख,
घर में चाहे तुम खेलों झगड़ो,
पर बाहर जाने की जिद्द न करना...

कभी सोचा ना था...
ऐसा वक्त भी आयेगा!



पूर्णिमा का महत्व

मीना सक्सेना, पत्नी श्री सुभाष चन्द्र सक्सेना (सेवानिवृत्त)

पूर्णिमा पंचांग के अनुसार महीने की 15वीं और शुक्लपक्ष की अंतिम तिथि है जिस दिन चंद्रमा आकाश में पूरा होता है। इस दिन का भारतीय जन जीवन में अत्यधिक महत्व है। हर माह की पूर्णिमा को कोई न कोई पर्व अथवा व्रत अवश्य मनाया जाता है।



चैत्र की पूर्णिमा के दिन हनुमान जयंती मनाई जाती है।
वैशाख की पूर्णिमा के दिन बुद्ध जयंती मनाई जाती है।
ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन वट सावित्री मनाया जाता है।
आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरू पाजन का विधान है।
श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है।
भादों की पूर्णिमा को उमा माहेश्वर व्रत किया जाता है।
अश्र की पूर्णिमा के दिन शरद पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है।
कार्तिक की पूर्णिमा के दिन पुष्कर मेला और गुरूनानक जयंती पर्व मनाए जाते हैं।
मार्गशीर्ष की पूर्णिमा के दिन श्री दत्तात्रेय जयंती मनाई जाती है।
पौष की पूर्णिमा के दिन शाकंभरी जयंती मनाई जाती है।
माघ की पूर्णिमा के दिन संत रविदास जयंती, श्री ललित और श्री भैरव जयंती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा के दिन संगम पर माघ मेले में जाने और स्नान करने का विशेष महत्व है।
फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन होली का पर्व मनाया जाता है।

इस दिन का भारतीय हिन्दू धर्म में पूर्णिमा का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक वर्ष 12 पूर्णिमाएं आती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 13 हो जाती है। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा या गंगा स्नान के नाम से भी जाना जाता है। इस पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा की संज्ञा दी गई है क्योंकि आज के दिन ही भगवान भोलेनाथ ने त्रिपुरासुर नामक महाभयानक असुर का अंत किया था और वे त्रिपुरारी के रूप में पूजित हुए थे। ऐसी मान्यता है कि इस दिन कृतिका में शिव शंकर के दर्शन करने से सात जन्म तक व्यक्ति ज्ञानी और धनवान होता है। इस दिन चन्द्र जब आकाश में उदित हो रहा हो उस समय शिवा, सभूति, संतति, प्रीति, अनुसूया और क्षमा इन छः कृतिकाओं का पूजन करने से शिव जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। इस दिन गंगा नदी में स्नान करने से भी पूरे वर्ष स्नान करने का फल मिलता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन तमिलनाडु में अरूणाचलम पर्वत की 13 कि.मी. की परिक्रमा होती है। सब पूर्णिमा में से ये सबसे बड़ी परिक्रमा कहलाती है। लाखों लोग यहां आकर परिक्रमा करके पुण्य कमाते हैं। अरूणाचलम पर्वत पर कार्तिक स्वामी का आश्रम है वहां उन्होंने स्कंदपुराण लिखा था।

पुराणों के अनुसार इसी दिन भगवान विष्णु ने प्रलय काल में वेदों की रक्षा के लिए तथा सृष्टि को बचाने के लिए मत्स्य अवतार धारण किया था। महाभारत काल में हुए 15 दिनों के विनाशकारी युद्ध में योद्धाओं और सगे संबंधियों को देखकर जब युधिष्ठिर कुछ विचलित हुए तो भगवान श्री कृष्ण पांडवों के साथ गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान पर आए। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को पांडवों ने स्नान किया और कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक गंगा किनारे यज्ञ किया। इसके बाद रात में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दीपदान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इसलिए इस दिन गंगा स्नान का और विशेष रूप से गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ नगरी में आकर स्नान करने का विशेष महत्व है।

मान्यता यह भी है कि इस दिन पूरे दिन व्रत रखकर रात्रि में वृषदान यानि बछड़ा दान करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति इस दिन उपवास करके भगवान भोलेनाथ का भजन और गुणगान करता है उसे अग्निष्टोम नामक यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इस पूर्णिमा को शैव मत में जितनी मान्यता मिली है उतनी ही वैष्णव मत में भी।

कार्तिक पूर्णिमा को गोलोक के रासमण्डल में श्री कृष्ण ने श्री राधा का पूजन किया था। हमारे तथा अन्य सभी ब्रह्मांडों से परे जो सर्वोच्च गोलोक है वहां इस दिन राधा उत्सव मनाया जाता है तथा रासमण्डल का आयोजन होते है। कार्तिक पूर्णिमा को श्री हरि के बैकुण्ठ धाम में देवी तुलसी का मंगलमय प्रकट्य हुआ था। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी का मंगलमय पराकाट्य हुआ था। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। कार्तिक पूर्णिमा को राधिका जी शुभ प्रतिमा का दर्शन और वन्दन करके मनुष्य जन्म के बंधन से मुक्त हो जाती है। इस दिन

वैकुण्ठ के स्वामी श्री हरि को तुलसी पत्र अर्पण करते हैं। कार्तिक मास में विशेषतः श्री राधा और श्री कृष्ण की मूर्ति का पूजन करना चाहिए। जो कार्तिक में तुलसी वृक्ष के नीचे बैठकर पूजा कर सकते हैं। कार्तिक मास में पराये अन्न, गाजर, दाल, चावल, मूली, बैंगन, घीया, तेल लाना, तेल खाना, मदिरा, कांजी का त्याग करें। कार्तिक मास में अन्न का दान अवश्य करें। कार्तिक पूर्णिमा को बहुत अधिक मान्यता मिली है। इस पूर्णिमा को महाकार्तिकी भी कहा गया है। यदि इस पूर्णिमा के दिन भरणी नक्षत्र हो तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। अगर रोहिणी नक्षत्र हो तो इस पूर्णिमा का महत्व कई गुणा बढ़ जाता है। इस दिन कृतिका नक्षत्र में चन्द्रमा और बृहस्पति हो तो यह महापूर्णिमा कहलाती है। कृतिका नक्षत्र पर चन्द्रमा और विशाखा पर सूर्य हो तो पद्मक योग बनता है जिसमें गंगा स्नान करने से पुष्कर से भी अधिक उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान, दीप दान, हवन, यज्ञ आदि करने से सांसारिक पाप और ताप का शमन होता है। इस दिन किये जाने वाले अन्न, धन एवं वस्त्र दान का भी बहुत महत्व बताया गया है। इस दिन जो भी दान किया जाता है उसका कई गुणा लाभ मिलता है। मान्यता यह भी है कि इस दिन व्यक्ति जो कुछ दान करता है वह उसके लिए स्वर्ग में संरक्षित रहता है जो मृत्यु लोक त्यागने के बाद स्वर्ग में उसे पुनः प्राप्त होता है। शास्त्रों में वर्णित है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन पवित्र नदी व सरोवर एवं धर्म स्थान में जैसे, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, कुरूक्षेत्र, अयोध्या, काशी में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। कार्तिक माह की पूर्णिमा तिथि पर व्यक्ति को बिना स्नान किए नहीं रहना चाहिए।

श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन हिमानी शिवलिंग 10 से 12 फीट की ऊंचाई तक स्वयं ही बनता है। हर साल यह शिवलिंग इस महीने अपनी अधिकतम ऊंचाई पाता है और इस दिन संसार भर के श्रद्धालु गुफा में स्थित मंदिर में इकट्ठा होते हैं। हिमानी शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध यह अमरनाथ की गुफा में हिम से अपने आप बनने वाला शिवलिंग है। यह शिवलिंग मौसम में बदलाव के अनुसार चंद्रमा की कलाओं के रूप में घटता बढ़ता रहता है। बाबा अमरनाथ का तीर्थ सभी भारतीयों के लिए बहुत महत्व रखता है। यूं तो सभी वृद्ध अपनी उम्र के इस पड़ाव पर पहुंचते ही तीर्थ यात्राओं के बारे में विचार करना आरंभ कर देते हैं। चारधाम की यात्रा हो या फिर कोई भी तीर्थ यात्रा हो, सभी का महत्व रहता है।

भारतीय संस्कृति को त्योहारों की संस्कृति कहा जाता है। जहां हर माह किसी न किसी पर्व से अपने आप में विशेष बनता जाता है। हमारी हिंदू संस्कृति में त्योहारों के साथ-साथ हर महीने आने वाली पूर्णिमा का भी विशेष महत्व है। अपनी परंपराओं को बनाए रखने के लिए जरूरी है कि हम अपनी बहू-बेटियों को पौराणिक कथाएं उनके धर्म-कर्म के प्रति आस्था जगाएं।

राजभाषा समारोह -2020 के अवसर पर मेरा बगीचा शीर्षक के अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई पेंटिंग्स



तेजांशी कृष्णा



श्रेयान सक्सेना

भारत-चीन द्विपक्षीय संबंध—भारत की सुरक्षा परिषद

रमेश के, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

परिचय: ऐतिहासिक संदर्भ: प्राचीन सभ्यताओं के साथ भारत और चीन दो बहुत आबादी वाले देश हैं; दोनों देशों के बीच दोस्ती का समय सम्मानित इतिहास है, जिसे 2,000 साल तक का माना जा सकता है। चीन और भारत के बीच संपर्क का पहला रिकॉर्ड दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान लिखा गया था। पहली शताब्दी में भारत से चीन में बौद्ध धर्म का संचार हुआ था। सिल्क रोड के माध्यम से व्यापार संबंधों ने दोनों क्षेत्रों के बीच आर्थिक संपर्क के रूप में काम किया। बौद्ध धर्म के प्रसारण से पहले चीन और भारत का भी कुछ संपर्क रहा है। चिनस नामक लोगों के संदर्भ प्राचीन भारतीय साहित्य में पाए जाते हैं। भारतीय महाकाव्य महाभारत (5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व) में "चीन" के संदर्भ हैं, जो कि किन राज्य का उल्लेख कर सकते हैं, जो बाद में किन राजवंश बन गया। चाणक्य (350-283 ईसा पूर्व), मौर्य साम्राज्य के प्रधान मंत्री ने अपने अर्थशास्त्र में चीनी रेशम को "सिनामसुका" (चीनी रेशम की पोशाक) और "सिनपत्ता" (चीनी रेशम बंडल) के रूप में संदर्भित किया है।



आधुनिक संबंध: भारत और चीन ने 1 अप्रैल 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित किए। भारत चीन के पीपुल्स रिपब्लिक के साथ संबंध स्थापित करने वाला पहला गैर-समाजवादी देश था और कैचफ्रेज़ 'हिंदी चीनी भाई भाई' प्रसिद्ध हुआ। चीन और भारत एशिया की प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों में से दो हैं, और दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले देश और तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से दो हैं। राजनयिक और आर्थिक प्रभाव में वृद्धि ने उनके द्विपक्षीय संबंधों के महत्व को बढ़ा दिया है। बढ़ते आर्थिक और सामरिक संबंधों के बावजूद, भारत और पीआरसी के लिए कई बाधाएं हैं। भारत चीन के पक्ष में व्यापार असंतुलन का सामना करता है। दोनों देश अपने सीमा विवाद को हल करने में विफल रहे और भारतीय मीडिया आउटलेट्स ने बार-बार भारतीय क्षेत्र में चीनी सैन्य घुसपैठ की सूचना दी। दोनों देशों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में लगातार सैन्य बुनियादी ढांचे की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त, भारत पाकिस्तान के साथ चीन के मजबूत रणनीतिक द्विपक्षीय संबंधों के बारे में सावधान रहता है, जबकि चीन ने विवादित दक्षिण चीन सागर में भारतीय सैन्य और आर्थिक गतिविधियों के बारे में चिंता व्यक्त की है।

भौगोलिक पृथक्करण और सुरक्षा / भू राजनीतिक चिंताएं:

- चीन और भारत हिमालय से अलग हुए हैं।
- चीन और भारत आज बफर राज्यों के रूप में नेपाल और भूटान के साथ एक सीमा साझा करते हैं।
- भारत द्वारा दावा किए गए विवादित कश्मीर क्षेत्र के कुछ हिस्सों का दावा और प्रशासन पाकिस्तान (आजाद कश्मीर और गिलगित और बाल्टिस्तान) या पीआरसी (अक्साई चिन) द्वारा किया जाता है।
- पाकिस्तान सरकार अपने मानचित्रों पर अक्साई चिन क्षेत्र को ज्यादातर चीन के भीतर दिखाती है और सीमा को "फ्रंटियर अनिर्धारित" लेबल करती है जबकि भारत का मानना है कि अक्साई चिन पर पीआरसी का अवैध कब्जा है।
- चीन और भारत ने भी अरुणाचल प्रदेश में सबसे ज्यादा विवाद किया। हालांकि, दोनों देश वास्तविक नियंत्रण रेखा का सम्मान करने के लिए सहमत हुए हैं।

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद के हालिया प्रकरण: 2020 चीन-भारत झड़पें चीन और भारत के बीच जारी सैन्य गतिरोध का हिस्सा हैं। 5 मई 2020 से, चीनी और भारतीय सैनिकों ने आक्रामक हाथापाई, चीन-भारतीय सीमा के साथ स्थानों पर झड़पों में शामिल किया है, जिसमें लद्दाख में विवादित पैगॉन्ग झील और तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और सिक्किम के बीच की सीमा के पास और तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र। वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के साथ पूर्वी लद्दाख के स्थानों पर अतिरिक्त झड़पें भी हुईं।

मई के अंत में, गैल्वेन नदी घाटी में भारतीय सड़क निर्माण पर चीनी सेना ने आपत्ति जताई। भारतीय सूत्रों के अनुसार, 15/16 जून 2020 को हाथापाई की वजह से 20 भारतीय सैनिकों की मौत हुई (एक अधिकारी सहित) और 43 चीनी सैनिकों की मौत (एक अधिकारी की मृत्यु सहित)

भारत की लगातार सुरक्षा चिंताएं: क. चीन के साथ अनसुलझा सीमा विवाद; 1962 के युद्ध का मनोवैज्ञानिक सामान; भारतीय क्षेत्रों में चीनी सैनिकों द्वारा बार-बार की जाने वाली घुसपैठ; पाकिस्तान के साथ चीन के घनिष्ठ संबंध;

और भारत और चीन के बीच कथित शक्ति प्रतिद्वंद्विता ने दोनों देशों के बीच एक भरोसेमंद विश्वास घाटा पैदा किया है। इसलिए भारत बीजिंग द्वारा प्रस्तावित किसी भी परियोजना के बारे में सतर्क रहने के लिए बाध्य है जिसमें पाकिस्तान या भारत के अन्य पड़ोसी शामिल हैं।

ख. चीन के नेतृत्व वाले OBOR को गले लगाने में भारत की झिझक चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) की प्रमुख परियोजना के रूप में है। CPEC के चीन के काशी प्रांत के काशगर को पाकिस्तान के अस्थिर बलूचिस्तान प्रांत में ग्वादर बंदरगाह से जोड़ने की उम्मीद है। यह पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) और गिलगित-बाल्टिस्तान से होकर गुजरेगा - दोनों भारतीय क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में हैं। इसके सहयोग की चीन की ईमानदारी के बारे में भारत के संदेह के मूल में यह है।

ग. दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में बीजिंग की बढ़ती उपस्थिति और प्रभाव। पिछले दशक में, चीन ने भारत के पड़ोस में नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों के साथ व्यवस्थित रूप से आर्थिक और सैन्य सहायता के माध्यम से काम किया है। हालाँकि भारत की खराब-निष्पादित पड़ोस नीति आंशिक रूप से ज़िम्मेदार हो सकती है, फिर भी भारत इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती प्रोफाइल को "घेरा" के रूप में देखता है। OBOR, भारत के पड़ोस में और उसके आसपास चीन प्रायोजित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के अपने नेटवर्क के साथ, चीन के वास्तविक इरादों के बारे में भारत की चिंता को बढ़ाता है।

भारत के लिए आगे का रास्ता:

1. आर्थिक और सुरक्षा क्षमताओं का निर्माण करने और चीन के साथ सत्ता के अंतर को बंद करने के लिए आवश्यक।
2. चीन और पाकिस्तान पर भारत की विदेश नीति के फॉर्मूले को अब एक हाइफ्रन की गई सामरिक इकाई के बजाय अलग-अलग मानने की ज़रूरत नहीं है।
3. भारत के लिए चीनी आर्थिक शोषण के विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए जापान, अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ हाथ मिलाने का समय।
4. भारत को हिंद महासागर के रिम में देशों के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए Route कॉटन रूट, प्रोजेक्ट मौसम और स्पाइस रूट को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाना चाहिए।
5. जापान की मदद से योजनाबद्ध रणनीतिक एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर को अमल में लाएं।

इसके अधिकांश पड़ोसी भारत के कथित "आधिपत्य" के खिलाफ "चीन कार्ड" खेलने में माहिर हैं, और चीन को इसका फायदा उठाने की जल्दी है। इसकी रणनीति उपमहाद्वीप में भारत को पटखनी देने की रही है, लेकिन भारत चीन की इस रणनीति को पड़ोसियों के साथ बाड़ लगाकर और उन्हें यह समझाकर पराजित कर सकता है कि उसकी कोई विषम महत्वाकांक्षा नहीं है।

निष्कर्ष:

भारत-चीन संबंधों की आज की उपलब्धियों ने कई पीढ़ियों के महान प्रयासों को मूर्त रूप दिया। दोनों राष्ट्रों को निम्नलिखित की चार कुंजी में महारत हासिल करने की आवश्यकता है:

1. अग्रणी: इसका अर्थ है आम सहमति तक पहुंचना और दोनों देशों के नेताओं के मार्गदर्शन में द्विपक्षीय संबंधों के विकास की दिशा का मार्गदर्शन करना।
2. संप्रेषण: इसका अर्थ है नेताओं की सर्वसम्मति को सभी स्तरों पर प्रसारित करना और इसे मूर्त सहयोग और परिणामों में बदलना।
3. शॉपिंग: इसका मतलब है कि अंतर के प्रबंधन के तरीके से परे जाना, द्विपक्षीय संबंधों को सक्रिय रूप से आकार देना और सकारात्मक गति प्राप्त करना।
4. एकीकरण: इसका मतलब है कि आदान-प्रदान और सहयोग को मजबूत करना, हितों के अभिसरण को बढ़ावा देना और सामान्य विकास प्राप्त करना।

इस समय, 70 साल पहले राजनयिक संबंध स्थापित करने की मूल आकांक्षा को फिर से जागृत करना और अच्छे पड़ोसी और दोस्ती, एकता और सहयोग की भावना को आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

अनुभव – कुछ खट्टे, कुछ मीठे

डॉ. राजश्री विनोद बोथले, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

मनुष्य के जीवन में कई तरह के अनुभव आते हैं। कुछ खट्टे, कुछ मीठे, कुछ कड़वे तो कुछ हर्सी भरे। ऐसे ही कुछ अनुभवों को यहाँ प्रस्तुत किया है।



बात कई वर्षों पूर्व की है। मेरे मुंह बोले भाई की बहन का ब्याह उत्तर प्रदेश के एक छोटे से शहर में था। शादी में जाना आवश्यक था तो कर दिया ट्रेन का आरक्षण। उन दिनों स्लीपर क्लास में ही जाने का चलन था। हर ट्रेन में एसी डब्बा होता नहीं था और हुआ भी तो जेब की सीमा से बाहर रहता था। दिसंबर की कड़ाके की ठंड में सबेरे साढ़े तीन बजे स्टेशन आने वाला था। रात के समय यह पता नहीं चल पा रहा था की ट्रेन कहाँ से गुजर रही है। जैसे ही ट्रेन रुकती, खिड़की ऊपर कर चिल्ला कर पूछने का प्रयास करते तब तक ट्रेन चल देती। तब मोबाइल, गूगल मॅप ये सब नहीं हुआ करते थे। जैसे तैसे पता चला कि ट्रेन सही समय पर न चल कर आधे घंटे देरी से चल रही है और चार बजे गंतव्य स्टेशन आएगा। जैसे ही स्टेशन आया, मैं समान लेकर उतरी। छोटा सा स्टेशन था। उतरने वाले तीन चार लोग थे। स्टेशन पर घुप्प अंधेरा था। पता चला कि सभी जगहों पर पावर कट है जो पूरी रात चलेगा। स्टेशन मास्टर के कमरे में एक लालटेन जल रही थी, जो ट्रेन जाने के बाद बंद कर दी गई। दरवाजा भी चर चर आवाज कर रहा था। हिन्दी सिनेमा का डरावना दृश्य याद आ गया। स्टेशन पर एक बरगद का पेड़ था, जिसके नीचे बैठने के लिए सीमेंट के चबूतरे बने थे। मुझे और आगे जाना था जहाँ के लिए छह बजे बस थी। रज़ाई लेकर मैं चबूतरे पर बैठ गई। भगवान का नाम ले रही थी कि कहाँ फस गई। उतने में वहाँ बैठे एक साधू बाबा ने भजन की तान मिलाई और कपकपाती ठंड में भजन गाने लगे। मुझे तो मानो एक सहारा मिल गया। वो करीबन घंटे भर गाते रहे और तुनतुना बजाते रहे। करीबन साढ़े पाँच बजे मैं निकल पड़ी बस स्टॉप पर जाने के लिए। सवारी का तो कोई प्रश्न नहीं था। पैदल ही जाना था। वहाँ जाकर देखा तो दो तीन लोग खड़े थे। एक जगह थोड़ी टिमटिमाहट दिखी तो पैर वहीं खिंच गए। एक बूढ़ी अम्मा लकड़ी के चूल्हे के पास बैठी चाय बना रही थी। उस बूढ़ी अम्मा को देख कर मेरी जान में जान आई और मैं धीरे से जाकर अम्मा के पीछे बैठ कर बातें करने लगी। साढ़े छह पर बस आई और उसमें सवार होकर मैं आगे जाने के लिए निकल पड़ी। वो साधु बाबा और वो चाय वाली बूढ़ी अम्मा मानो भगवान बनकर मुझे मिले। अभी भी ठंड की रात का वह मंजर मैं भूल नहीं सकती।

घर के खाने की कीमत वही जान सकते हैं जो घर के बाहर रहते हैं। मैं एक प्रसंग कभी भूल नहीं सकती। बात उन दिनों की है जब मैं रुड़की में पढ़ रही थी। वैसे तो हॉस्टल का खाना बहुत बढ़िया था। हर हफ्ते का नया नया मेनू रहता था जो हम सब मिलकर बनाते थे। लेकिन फिर भी खाने में माँ के हाथ का स्वाद नहीं रहने के कारण घर के खाने को मन ललचाता था। ऐसा नहीं था कि बाहर रहने का यह मेरा पहला प्रसंग था। बीई करते समय घर और कॉलेज के बीच की चालीस किलोमीटर की दूरी करीबन हर सप्ताहांत मिट जाती थी। जब भी कोई रायपुर आता तो माँ के हाथ की बनी चीजें मुझ तक पहुँच जाती। कुल मिला कर यह, कि घर के खाने का अभाव कभी महसूस नहीं हुआ। लेकिन रुड़की जाने पर सब बदल गया। घर के खाने के लिए तरस गए। उस समय न तो खाना बनाना आता था और न तो कोई ऐसी सहूलियत थी जहाँ पर जाकर खाना बना सके। तो बात उस दिन की है जब मैं रुड़की से दिल्ली जाने के लिए बस से निकली। बाजू कीसीट पर एक आंटी बैठी थी और उनकी सहेली उसके बाजू की सीट पर थी। सफर की परंपरा के अनुसार उन्होंने मुझे मेरे बारे में पूछा और फिर आपस में बातों में लग गई। दो घंटों के सफर के बाद ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी और बीस मिनट का ब्रेक दिया। मैंने बैग से रुड़की का प्रसिद्ध बन निकाला और खाने का सोचने लगी। उतने में मेरी नाक ने मुझे कुछ बताया। देखा तो पाया कि आंटी ने बैग में से खाना निकाला था और दोनों मिलकर खाने की तयारी कर रहे थे। मेरी तरफ देखते साथ वो मेरे चेहरे के भावों को समझ गई। बैग में से एक प्लेट निकाली, उस पर दो पराठे रखे, साथ में आलू गोभी कि सब्जी और आम का अचार डालकर प्लेट मुझ तक बढ़ा दी। बचपन से "बाहर किसी के हाथ से कुछ नहीं लेना" सीख के साथ बड़ी हुई मैं, सब भूल कर उन पराठों पर टूट पड़ी। सच कहती हूँ, आज भी उस खाने का स्वाद मेरी जिह्वा पर है। घर के बने खाने की कीमत जानने के कारण शायद आज भी मैं घर का बना खाना पसंद करती हूँ।

एक और प्रसंग है जो हमें हमेशा याद रहता है। बात उस समय की है जब हम बर्लिन घूमने गए थे। उन दिनों वहाँ पर एक मैराथन चलने के कारण बहुत भीड़ थी। बरसात भी बहुत हो रही थी। बर्लिन घूमने के बाद हम करीबन 30 किलोमीटर दूर एक शहर पोट्सडैम गए। वहाँ के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद एक छोटी सी दुकान पर कुछ पीने

के लिए गए। दुकानदार बड़ा बातुनी था तो हम सब से बातें करने लगा। कुछ हमारी सुनता और कुछ अपनी बताता। पेय पदार्थ की बॉटल को खोलने के मेरे असफल प्रयास को देख कर उस दुकानदार ने मुझ से बॉटल ली और कहा, कि इसे खोलने कि एक ट्रिक है जिससे यह तुरंत खुल जाती है, इतनी मेहनत नहीं लगाना पड़ती। उसके बाद उसने पूरी जी जान लगा दी पर बॉटल का ढक्कन टस से मस नहीं हुआ। आखिर उसने कहा "Whenever you want to show something to someone, it never happens", यानि जब आप किसी को कुछ खास कर के दिखाना चाहते हैं, वह कभी नहीं होता। आज भी जब ऐसी किसी परिस्थिति से दो चार होते हैं, हम वह प्रसंग याद करते हैं।

दुबई प्रवास का एक किस्सा मैं और बेटा याद हमेशा करते हैं। दुबई का एक मुख्य आकर्षण डेसर्ट सफारी है जिसकी हमने पहले से बुकिंग कर रखी थी। नियत दिन और समय पर हम होटल के स्वागत कक्ष में आकर बैठ गए और ड्राइवर की प्रतीक्षा करने लगे। देर होने लगी थी इसलिए हम कुछ चिंता में भी आ गए थे। इतने में एक अथेड सज्जन ने आकर हमारा नाम पूछा और हम उनके साथ बाहर आ गए। कार में हमें बैठाने के बाद भी वो कुछ उद्वेलित लग रहे थे। फोन पर बता रहे थे, तीन को उठा लिया, दो को उठाना है। तीन को उठा लिया, दो को उठाना है। एक खलास हो गया और एक करना है। हमें उनका बड़बड़ाना सुन डर भी लग रहा था और मजा भी आ रहा था। शहर से बाहर निकलने पर मोबाइल की रेंज न आने पर खिड़की से बाहर हाथ निकाल कर एन्टेना जैसे ऊपर किया और बातें बदस्तूर चालू रखी। बाद में उनका उद्वेग कम होने पर पता किया तो पता चला, कि तीन सवारी हम थे और हमारे साथ दो और सवारी लेना थी जो उन्हें नहीं मिल पाई। हमें लेने का एक काम पूरा हो गया था और दूसरा नहीं हुआ। अभी भी इस घटना की याद आती है तो हमारे चेहरे पर मुस्कान अवश्य आ जाती है।

जीवन में आए ये पल कभी सीख दे जाते हैं, तो कभी हंसी और कभी-कभी ये चिंताओं को भी जन्म देते हैं। कभी कभी न हुई घटना भी सोच सोच कर चिंता का कारण बन जाती है। ऐसी ही एक घटना हमेशा रौंगटे खड़े कर देती है। बंबई में हुये आतंकवादी हमले के बारे में तो सभी को पता है कि कैसे होटल ताज और ट्राईडेंट में इस हमले में कई लोग मारे गए थे। ताज और ट्राईडेंट से एक मानसिक जुड़ाव था। मेरा बेटा आदित्य बिरला छात्रवृत्तिधारी है। इन चुने विद्यार्थियों को होटल ताज और ट्राईडेंट में रुकवाया जाता है और ताज के बॉल रूम में छात्रवृत्ति देने का कार्यक्रम हर वर्ष होता है। पकड़े हुये आतंकवादी से पूछताछ चलने के बाद एक दिन अखबार में पढ़ा कि मूलतः यह हमला नवंबर में नहीं वरन सितंबर में होने वाला था और उस तारीख का भी वर्णन था जब यह हमला करने का तय किया था। उस तारीख को पढ़ते साथ हम सब के शरीर पर रौंगटे खड़े हो गए। यह वही तारीख थी जिस दिन बेटा ट्राईडेंट में रुका था और हमले के संभावित समय पर ताज के उसी बॉल रूम में आदित्य बिरला का कार्यक्रम चल रहा था। न हुई घटना के बारे में सोच सोच कर ही आज भी दिल दहल जाता है।

ट्रेन के सफर के कई अनुभव हैं जो हमेशा याद आते हैं। दिल्ली से बंगलुरु तक का एक सफर जिसमें मुझे बहुत अच्छे दोस्त मिले, जिनसे अभी भी संपर्क है या दूसरा बिना आरक्षण के किया हुआ सफर जिसमें सभी की सहायता मिली। कुछ कड़वे अनुभव भी रहे जब मेरी छटी इंद्रिय ने मुझे अनहोनी से बचा लिया। सफर में हमेशा आँख और कान खुले रखना चाहिए। सही समय पर नया निर्णय लेने की क्षमता ही अनहोनी से बचा सकती है।

हरेक का रहन सहन और शारीरिक क्षमता अलग अलग होती है। भारतीय अधिक चलने में विश्वास नहीं करते और बाहर के देशों में घूमना मतलब चलना ही होता है। दो ऐसे ही प्रसंग याद आ रहे हैं। फ्लोरेंस में लीनिंग टावर ऑफ पीसा (पीसा की झुकती मीनार) देखने के लिए हम उसके समीप के स्टेशन पर उतरे। भारतीय जब कहीं भी घूमने जाते हैं तो कम समय में अधिक देखने की चाह रहती है। हम एक स्थान पर घंटों लगाने के बजाय, उतनी समय में कई स्थान देखना पसंद करते हैं। तो हमारे पास भी अधिक समय नहीं था। स्टेशन से बाहर आकर पूछताछ खिड़की पर जाकर मीनार जाने के लिए उचित तरीके / साधन के बारे में पूछा। "Which is the best way to go to leaning tower of Pisa?" तुरंत जवाब आया "By walk." हमने हमारे विकल्प में पैदल चल कर जाना तो सोचा ही नहीं था। बड़े पशोपेश में पड़ गए। फिर भी अनुभव से एक बात हमेशा ध्यान रहती है कि केवल एक से पूछ कर कुछ भी तय नहीं करना चाहिए। एक दो और लोगों से पूछा तो पता चला हर दस मिनट में बस जाती है जिसका कोई टिकट नहीं लगता और कोई भी उसका उपयोग कर सकता है। जान में जान आई। ऐसा ही एक और अनुभव था। जब भी हम किसी होटल की बुकिंग करते हैं तो वे अपने होटल के बारे में अच्छी अच्छी बातें बताकर हमें लुभाने का प्रयास करते हैं। आगरा में बताएँगे कि खिड़की से ताजमहल दिखता है और दार्जिलिंग में कहेंगे कि सूर्यास्त देखने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं, बाल्कनी से ही दिख जाएगा। पेरिस में जब हमने होटल की बुकिंग की तो उन्होंने कहा कि एफिलटॉवर वॉकिंग डिस्टन्स यानि पैदल दूरी पर है। खुश होकर हमने बुकिंग कर ली। वहाँ पहुँच कर जब हम पैदल निकले तो आधा घंटे चलने पर भी एफिलटॉवर नहीं आया। करीबन 45 मिनट चलने पर टॉवर दिखने लगा। उस दिन पता चला कि पैदल दूरी की परिभाषा हरेक के लिए अलग अलग होती है।

हम सभी को "नेकी कर दरिया में डाल" मुहावरे के बारे में पता है। भलाई का काम करना चाहिए पर उससे कोई अपेक्षा नहीं करना चाहिए। गीता में भी उपदेश है " कर्मण्ये वाधिकारस्ते माँ फलेषू कदाचन " "कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर रे इंसान"। मुझे यहाँ पर एक प्रसंग याद आ रहा है। जोधपुर की बात है। मई का महिना था और तापमान 45 डिग्री के ऊपर चल रहा था। ऑफिस से घर कुछ चार किलोमीटर था। शनिवार के दिन कुछ काम होने के कारण मैं ऑफिस आई थी और काम समाप्त करके तीन बजे के आसपास ऑफिस से निकली। रोड पूरे सुनसान पड़े थे और गर्मी के कारण रोड का डामर पिघलने लगा था। गेट के बाहर मेरी दो चक्कों वाली गाड़ी पहुंची और मुख्य रोड पर गाड़ी डाली तो मेरी नज़र एक महिला पर पड़ी जो इस धूप में पैदल जा रही थी। उसे देख कर मैं एकदम द्रवित हो गई और मैंने गाड़ी उसके पास ले जाकर रोक दी। वह कोरोना समय नहीं था इसलिये डरने की कोई बात नहीं थी। मैंने उसे गाड़ी में बैठने के लिए कहा और उसे कहाँ जाना है यह पूछा। मेरे घर के रास्ते की ओर ही उसका घर था। मैंने दूसरा छोटा रास्ता लेकर उसे उसके घर छोड़ा, महिला ने मुझे आशीष दिये और मैं उन आशीषों से भीगी हुई अपने रास्ते पर वापस गाड़ी ले आई। थोड़ी दूर जाने पर गाड़ी एकदम बंद हो गई। देखा तो पता चला कि गाड़ी का पेट्रोल समाप्त हो गया है। उस चिलचिलाती धूप में गाड़ी खींचते हुये मैं आगे बढ़ने लगी। कोई भी आ जा नहीं रहा था जिससे सहायता की उम्मीद हो। उतने में एक गाड़ी वाला वहाँ आया और उसने मुझे पैदल जाने का कारण पूछा। मेरे बताने पर उसने तुरंत पेट्रोल देने की पेशकश की। लेकिन पेट्रोल एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी में जाये कैसे? वह व्यक्ति रोड के बाजू में कचरे के ढेर के पास गया और दूढ़ कर एक बॉटल निकली। खुद की गाड़ी का पेट्रोल पाइप निकाल कर बोटल में इतना पेट्रोल डाला कि मैं 2 किलोमीटर दूर पेट्रोल पम्प तक पहुँच सकूँ। फिर जब तक मैं उससे उसके बारे में पूछती, वह अपनी गाड़ी लेकर चला गया। मैंने गाड़ी मोड़ी और पेट्रोल पम्प की तरफ चल दी। पूरे रास्ते केवल एक बात याद आ रही थी। क्या भगवान ने मेरी नेकी का मुझे तुरंत फल दिया? यदि मैंने उस महिला की मदत नहीं की होती तो भी क्या उस दिन मुझे अंजान व्यक्ति की सहायता मिलती।

कई बार ऐसा भी होता है कि सामने वाले की सहायता करने की इच्छा नहीं होती। ऐसा ही अनुभव मेरी सखी को हुआ था जो उसने मेरे साथ साझा किया। ऐसी ही गर्मी की दोपहरी में मेरी मित्र के मुख्य दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोल कर बाहर देखा तो एक ग्रामीण महिला खड़ी थी। उसे प्यास लगी थी इसलिए उसने पानी मांगा। मेरी मित्र बाहर पानी लेकर गई और उसे देने लगी। पानी लेने के पहले उस महिला के द्वारा पूछे प्रश्न ने मेरी मित्र के दिमाग का फ्यूज गुल कर दिया। उस महिला ने पूछा कि मेरी मित्र को लड़का है या लड़की? वह ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रही है पूछने पर उस महिला ने कहा कि यदि लड़का नहीं है तो वह मेरी मित्र के हाथ का पानी नहीं पीएगी। मेरी मित्र को लड़का होने के बावजूद उसने उस महिला को भगा दिया और कहा कि वह उसे पानी नहीं देगी। ऐसे अनुभव बड़े कटु होते हैं जिनकी कसक पूरे जीवन भर रहती है। देश के कई भागों में इस तरह की घटनाएँ और प्रसंग सुनने और देखने मिलते हैं। ऐसे ही एक महिला ने मेरी डॉक्टर मित्र को बताया कि उसके दो बच्चे हैं जबकि उसके दो लड़के और दो लड़कियाँ हैं। मेरी मित्र ने उससे जब इसका जवाब मांगा तो वह कहती है कि लड़के तो दो हैं, बाकी दो तो लड़कियाँ हैं। ये थे कुछ अनुभव जो हमें कुछ न कुछ सीख दे जाते हैं।

राजभाषा समारोह -2020 के अवसर पर मेरा बगीचा शीर्षक के अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई पेंटिंग्स



दक्षिता के.



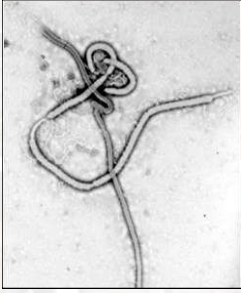
वेदाश्री



अनन्या

दुनिया के 10 खतरनाक वायरस

✍ रामराज रेड्डी, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद



इबोला वायरस

इबोला वायरस एक विषाणु है। 2013 से 2016 के बीच पश्चिमी अफ्रीका में इबोला संक्रमण के फैलने से ग्यारह हजार से ज्यादा लोगों की जान गई। यह वर्तमान में एक गंभीर बीमारी का रूप धारण कर चुका है। इस बीमारी में शरीर में नसों से खून बाहर आना शुरू हो जाता है, जिससे अंदरूनी रक्तस्राव प्रारंभ हो जाता है। यह एक अत्यंत घातक रोग है। इसमें 90% रोगियों की मृत्यु हो जाती है। इबोला की कई किस्में होती हैं।

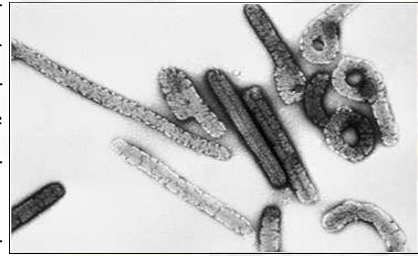


मारबुर्ग वायरस

साल 1967 में इसके सबसे ज्यादा मामले देखे गए थे। इस वायरस के बारे में ये कहा जाता था कि यदि इसकी चपेट में कोई आ गया तो उसकी मौत निश्चित है। उस दौरान इस वायरस का शिकार हुए 90 फीसदी लोगों की मौत हो गई है।

रेबीज

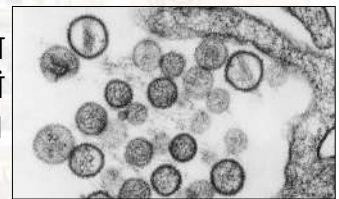
रेबीज एक ऐसा वायरस है, जो आमतौर पर जानवरों के काटने से फैलता है। ये एक जानलेवा रोग है क्योंकि इसके लक्षण बहुत देर में दिखने शुरू होते हैं। इसी कारण जब किसी व्यक्ति में रेबीज के वायरस होते हैं, तो लक्षण दिखने तक इलाज का समय आमतौर पर निकल चुका होता है। आमतौर पर लोग मानते हैं कि रेबीज केवल कुत्तों के काटने से होता है मगर ऐसा नहीं है। कुत्ते, बिल्ली, बंदर आदि कई जानवरों के काटने से



इस बीमारी के वायरस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इसके अलावा कई बार पालतू जानवर के चाटने या खून का जानवर के लार से सीधे संपर्क से भी ये रोग फैलता है। हालांकि पालतू कुत्तों को हमेशा रेबीज का टीका लगाया जाता है लेकिन भारत में यह आज भी समस्या बना हुआ है। एक बार वायरस शरीर में पहुंच जाए तो मौत पक्की है। वर्ल्ड रेबीज डे यानी विश्व रेबीज दिवस हर साल 28 सितंबर को मनाया जाता है।

हंटा वायरस

दुनियाभर में इस नए कोरोना वायरस ने सबकी नींद उड़ा दी है। कोरोना के बाद इन दिनों चीन में हंटा वायरस के कारण एक व्यक्ति की जान जाने की खबर ने खूब सुर्खियां बटोरी हैं। चीन में हंटा वायरस से 23 मार्च को एक व्यक्ति की मृत्यु की खबर आई है। इस वायरस के लक्षणों में फेफड़ों के रोग, बुखार और गुर्दा खराब होना शामिल हैं।



चेचक

चेचक (शीतला, बड़ी माता, स्मालपोक्स) एक विषाणु जनित रोग है। यह एक संक्रामक बीमारी इंसानों ने हजारों सालों तक इस वायरस से जंग लड़ी। यह रोग अत्यंत संक्रामक है। जब तब रोग की महामारी फैला करती है। कोई भी जाति और आयु इससे नहीं बची है। टीके के आविष्कार से पूर्व इस रोग से बहुत अधिक मृत्यु होती थी।

इन्फ्लुएंजा

दुनिया भर में सालाना हजारों लोग इन्फ्लुएंजा का शिकार होते हैं। इन्फ्लुएंजा या श्लैष्मिक ज्वर एक विशेष समूह के वायरस के कारण मानव समुदाय में होनेवाला एक संक्रामक रोग है। इसमें ज्वर और अति दुर्बलता विशेष लक्षण हैं। इसे फ्लू भी कहते हैं। 1918 में जब इसकी महामारी फैली तो दुनिया की 40% आबादी संक्रमित हुई और पांच करोड़ लोगों की जान गई। इसे स्पेनिश फ्लू का नाम दिया गया।



डेंगू

डेंगू बुखार एक संक्रमण है जो डेंगू वायरस के कारण होता है। डेंगू का इलाज समय पर करना बहुत जरूरी होता है। यह मच्छर के काटने से फैलता है। डेंगू बुखार को "हड्डीतोड़ बुखार" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इससे पीड़ित लोगों को इतना अधिक दर्द हो सकता है कि जैसे उनकी हड्डियां टूट गयी हों। अन्य वायरस के मुकाबले इसका मृत्यु दर काफी कम है। लेकिन इसमें इबोला जैसे लक्षण हो सकते हैं। 2019 में अमेरिका ने डेंगू के टीके को अनुमति दी।

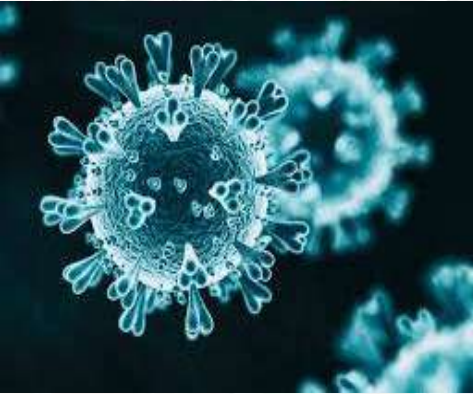
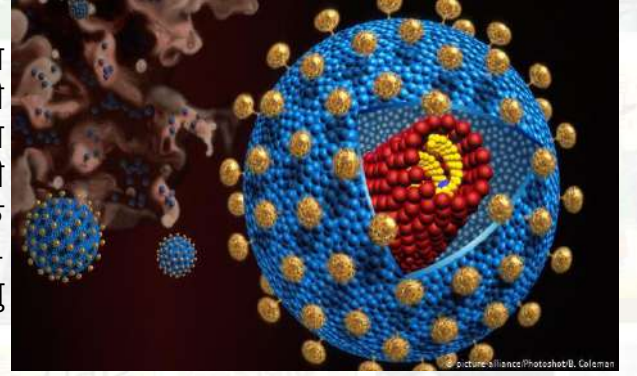


रोटा

यह वायरस नवजात शिशुओं और छोटे बच्चों के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक होता है। 2008 में रोट्टा वायरस के कारण दुनिया भर में पांच साल से कम उम्र के लगभग पांच लाख बच्चों की जान गई।

एड्स(एचआईवी)

अस्सी के दशक में एचआईवी की पहचान के बाद से अब तक तीन करोड़ से ज्यादा लोग इस वायरस के कारण अपनी जान गंवा चुके हैं। एचआईवी के कारण एड्स होता है जिसका आज भी पूरा इलाज संभव नहीं है। एड्स वर्तमान युग की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है यानी कि यह एक महामारी है। एड्स के संक्रमण के तीन मुख्य कारण हैं - असुरक्षित यौन संबंधो, रक्त के आदान-प्रदान तथा माँ से शिशु में संक्रमण द्वारा।



कोरोना वायरस

कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक, हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छीकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड

और फ्लू के लक्षण हों उनसे दूरी बनाकर रखें। इस वायरस की 1300 किस्में हैं। यह वायरस 26 देशों तक पहुंचा गया है। www.worldometers.info के अनुसार अब तक इसके कारण 861,900 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचने के लिए सबसे अच्छा उपाय अपने शरीर को स्वस्थ रखना है। यदि हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तो हम किसी प्रकार के वायरस के संक्रमण से अपने शरीर की रक्षा कर सकते हैं। यदि हमारे शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता सशक्त है तो किसी भी वायरस से शरीर लड़ सकता है।

स्रोत: डीडब्ल्यू दैनिक जागरण, विकिपीडिया, www.worldometers.info, Economic times.

राजभाषा समारोह -2020 के अवसर पर मेरा बगीचा शीर्षक के अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई पेंटिंग्स



कीर्तना



शरण्या



रचना



अक्षरा



के. कल्याण



सुहास



हसिनी

कोविड-19 के चलते कार्यालयों में प्रत्येक गतिविधि के संचालन का तरीका बदल गया है। अधिकांश कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किए गए। परिवार के सदस्यों एवं बच्चों के लिए आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम के अंतर्गत हमने ऑफलाइन मोड में बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की।

मां का दूध

दुर्गा रेड्डी, बहन रामराज रेड्डी, एनआरएससी

मां का पहला दूध बच्चे के लिए अमृत समान होता है, जो उसे पोषण प्रदान करता है। दुनिया में केवल माँ के दूध की तुलना ही अमृत से की जा सकती है। माँ का दूध बच्चे के लिए सिर्फ आहार ही नहीं, बल्कि जीवन रक्षक वरदान है। मां द्वारा अपने शिशु को अपने स्तनों से आने वाला प्राकृतिक दूध पिलाने की क्रिया को स्तनपान कहते हैं। यह सभी स्तनपाइयों में आम क्रिया होती है। स्तनपान शिशु के लिए संरक्षण और संवर्धन का काम करता है। नवजात शिशु में रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति नहीं होती। मां के दूध से यह शक्ति शिशु को प्राप्त होती है। मां के दूध में लेक्टोफोर्मिन नामक तत्व होता है, जो बच्चे की आंत में लौह तत्व को बांध लेता है और लौह तत्व के अभाव में शिशु की आंत में रोगाणु पनप नहीं पाते। वहीं मां के लिए भी स्तनपान कराना दुनिया का सबसे बड़ा सुख होता है। एक अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया है कि इंसान के दूध से युक्त स्टेम सेल में ऐसा गुण मौजूद रहता है जिससे अल्जाइमर से लेकर कैंसर तक को मात दिया जा सकता है। इस दूध में स्टेम सेल समृद्ध रहता है, जिसमें केमिलियोन पाया जाता है। इसमें ठीक ऐसा ही गुण पाया जाता है जैसे भ्रूण से निकाले गए स्टेम सेल में पाया जाता है। यह दूध स्टेम सेल का नैतिक स्रोत प्रदान कर सकता है, जो बड़े पैमाने पर रिपेयर किट की तरह देखा जा सकता है। इस दूध में ऐसा गुण है कि यह शरीर में किसी भी प्रकार की कोशिका को बदल कर रख देता है।



वैज्ञानिकों के मुताबिक कैंसर, अंधापन, मधुमेह, अल्जाइमर, पार्किंसन और लकवा जैसी बीमारी इस मास्टर सेल से ठीक हो सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया के प्रोफेसर फोटिनी हासियातो ने बताया कि ब्रेस्ट मिलक स्टेम सेल थिरेपी के लिए रोमांचक अवसर जगाता है।

वहीं दूसरी ओर यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन के प्रोफेसर क्रिस मेसॉन ने बताया कि अभी इस अध्ययन में ज्यादा प्रमाण की जरूरत है। अगर सच में यह एब्रांयोनिक है तो स्टेम सेल निकालने के लिए हमें अलग तरीके की जरूरत होगी जिससे किसी तरह का नैतिक बवाल न हो।

न्यूकैसल यूनिवर्सिटी के लिली आर्मस्ट्रॉंग ने बताया कि महिलाएं अपने दूध से अब स्टेम सेल की बैंक हो गई हैं और इसका इस्तेमाल वह बाद के जीवन में डायबिटीज के इलाज के लिए कर सकती हैं।

प्राकृतिक रूप से दूध बढ़ाने के कुछ विशेष उपाय -

1. पौष्टिक भोजन - पौष्टिक भोजन करने से मां के स्तन में दूध की मात्रा बढ़ने लगती है। शरीर में दूध उत्पादन के लिए अच्छे और पौष्टिक खानपान की बहुत आवश्यकता होती है। जौ, दलिया और दूध से भी काफी लाभ मिलता है।
2. सूखे मेवे - मां बनने के बाद जितना हो सके सूखे मेवों का सेवन करना चाहिए। काजू, बादाम, पिस्ता जैसे मेवे स्तनों में दूध की मात्रा को बढ़ाते हैं। साथ ही ये विटामिन, मिनरल और प्रोटीन से भी भरपूर होते हैं।
3. तुलसी और करेला - तुलसी को सूप या शहद के साथ खाया जा सकता है, या फिर आप इसे चाय में डाल कर भी ले सकती हैं। करेला महिलाओं में लैक्टेशन सही करता है। करेला बनाते वक्त हल्के मसालों का ही प्रयोग करें ताकि यह आसानी से हजम हो सके।
4. सौंफ - आयुर्वेद के अनुसार सौंफ का सेवन स्तनों में दूध की कमी को दूर करने में मदद करता है। इसलिए आप स्तनों में दूध की मात्रा को ठीक करने के लिए सौंफ का सेवन कर सकती हैं।
5. लहसुन - लहसुन खाने से भी दूध बनाने की क्षमता बढ़ती है। लहसुन को कच्चा खाने की बजाए उसे पकाकर खाना अधिक लाभप्रद होगा। अगर आप लहसुन को नियमित खाती हैं तो आपको लाभ अवश्य होगा।
6. शिशु को स्तनपान कराते समय स्तन को बदलते रहना चाहिए। इससे शरीर में दूध उत्पादन बढ़ेगा। साथ ही ऐसा करने से आपका बच्चा भी आराम से स्तनपान कर सकेगा।
7. जन्म के बाद एक घंटे तक नवजात शिशु में स्तनपान करने की तीव्र इच्छा होती है। इसलिए जन्म के बाद जितनी जल्दी मां, बच्चे को दूध पिलाना शुरू कर दे, उतना अच्छा है। आमतौर पर जन्म के 45 मिनट के अन्दर स्वस्थ बच्चों को स्तनपान शुरू करवा देना चाहिए।

स्रोत: विकिपीडिया, वेबदुनिया।

अंडमान-एक अद्भुत यात्रा

मीनाक्षी सक्सेना, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

हमारे कई सहकर्मी साल के अंत में एलटीसी का लाभ उठाने के लिए परिवार के साथ द्वीपों के समूह अंडमान निकोबार जाने की योजना बना रहे थे। मेरी एक सहेली ने मुझे इसकी खबर दी और इस सामूहिक यात्रा का हिस्सा बनने का अवसर दिया। मैं यू तो हर साल कहीं न कहीं अपने बेटे को घुमाने ले जाने की योजना बनाती ही हूँ तो सोचा कि चलो अंडमान निकोबार घूमने का यह अच्छा अवसर है और इसे गंवाए बिना इसका लाभ उठाती हूँ। समूह के साथ मैंने भी जाने की हामी भरते हुए अंडमान जाने की योजना बनानी शुरू कर दी। हांलाकि इस समूह में सभी वित्त प्रभाग के अधिकारी व कर्मचारी शामिल थे और मैं बिल्कुल उस समूह से हटकर थी। बहरहाल ऐसे मनोरम स्थल की यात्रा सामूहिक रूप में हो तो उसका आनंद ही कुछ और रहता है। मैंने समूह का हिस्सा बनते हुए अपने बेटे को इस अद्भुत यात्रा की खबर दी



हमने टिकट बुकिंग के साथ-साथ वहां आवास एवं यातायात संबंधित सभी अन्य प्रबंधों के लिए अपनी ओर से योगदान राशि जमा करा दी और यात्रा की तैयारी करने लगे। मेरा बेटा यह जानकर अधिक प्रफुल्लित था कि हम अंडमान घूमने जा रहे हैं। सागर किनारे का प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए मैंने अपने साथ अपनी बड़ी दीदी को भी इस यात्रा में शामिल किया। हम सभी ने अपने अपने घरों से टैक्सी बुक की और एयरपोर्ट की ओर इस अद्भुत यात्रा के शुभारंभ के लिए निकल पड़े। रास्ते भर हम यात्रा के बारे में बातें करते गए। जैसा कि आप जानते हैं अंडमान निकोबार समूह कई छोटे-छोटे द्वीपों की नगरी है जहां पर चारों ओर सागर और सागर के तट यानि कि प्राकृतिक सौंदर्य ही नजर आता है। एयरपोर्ट पर हम सभी मिले और अपनी बोर्डिंग की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद फ्लाइट में बैठ गए। जैसे ही हम अंडमान के ऊपर पहुंचे, नजारा देखने लायक था। एयरपोर्ट पर पहुंचते ही हमने अपना सामान उठाया और गंतव्य की ओर पहुंचाने के लिए बाहर तैयार एक बस में बैठकर गेस्ट हाउस की ओर पहुंचे। दिन भर की लंबी यात्रा के बाद ऐसा लग रहा था कि बस आराम करने को मिल जाए। तटीय

इलाका होने के कारण वहां अजीब सा मौसम था गर्मी और उसके साथ-साथ लगातार बहता पसीना। दिसंबर के महीने में गर्मी का एहसास हमें बेहाल कर रहा था।

बहरहाल हम अपने गेस्ट हाउस पहुंचे और तरोताजा होकर हल्के-फुल्के नाश्ते के साथ अंडमान में यात्रा का पहला दिन शुरू हुआ। हम सबसे पहले वहां बने एक संग्रहालय की ओर निकल पड़े जहां सागर के भीतर मछलियों कि किस्में, शैवाल, घोंघे आदि दर्शाये गए। इतना ही नहीं वहां पर विशालतम मछलियों के कंकाल, जहाज आदि के मॉडल भी रखे गए हैं। संग्रहालय के भीतर मोबाइल फोन ले जाना वर्जित था अतः हम अपनी यादों के लिए कुछ बाहर की तस्वीरें ही कैद कर पाए। इसके बाद हम गए वहां की सुप्रसिद्ध सेल्यूलर जेल की ओर। कालापानी की सजा के नाम से प्रसिद्ध यह जेल आजादी की लड़ाई के दिनों में लोगों के दिलों में दहशत पैदा करती थी क्योंकि यहां हमारे सेनानियों को बहुत ही कष्टदायक जीवन जीना पड़ता था।



यह वह स्थान है जहां पर हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों का खून पसीना रचा बसा है। कैदियों को रखने के लिए जेल में छोटे-छोटे कमरों को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो वे सभी सेनानी अभी भी वहीं हों। इसके अलावा वहां पर आर्गंतुकों का ज्ञानवर्धन करने के लिए कुछ छोटे-छोटे मॉडलों के द्वारा जेल में सजा काटने वाले सेनानियों को दी जाने वाली यातनाओं के बारे में बताया गया। रोंगटे खड़े कर देने वाली सजा उन सेनानियों ने कितनी शिद्दत से सही और देश को आजादी दिलाई। शाम होते-होते वहां पर एक लाइट एंड साउंड शो के जरिए लोगों को सेल्यूलर जेल से जुड़ी कहानी सुनाई गई। ये कोई कहानी नहीं बल्कि वो सच्चाई थी जिससे हम सभी अंजान थे, सुनने वाले श्रोताओं में शायद ही कोई ऐसा होगा जिसकी आंखें नम न हो जाएं।



सेल्यूलर जेल का लाइट एवं साउंड शो देखते-देखते रात हो गई थी लिहाजा हम सभी अपने गेस्ट हाउस में वापिस पहुंचे और सभी ने साथ में रात्रि भोजन करने के बाद अगले दिन की योजना भी बना ली। हमारे अगले दिन की यात्रा एक नए द्वीप पर पहुंच कर आरंभ होने वाली थी। लगभग 572 छोटे-छोटे द्वीपों के समूह में से 37 तो केलव निर्जन हैं। निकोबार द्वीप समूह में जाने के लिए पर्यटकों को विशेष अनुमति की आवश्यकता होती है क्योंकि माना जाता है कि वहां की जनजातियां बाहरी दुनिया के लोगों को अपना शत्रु मानते हुए उन्हें मार देती हैं जिनमें से कई तो आदमखोर भी होते हैं लेकिन निकोबार के ये



द्वीप प्रकृति की नायाब देन माने जाते हैं। यहां पर कई ऐसे द्वीप हैं जिनके सागर तट पर सफेद रंग की रेत बिछी दिखाई देती है और इनका पानी नीलवर्ण दिखाई देता है। बहरहाल हम वहां के सरकारी जहाज में बैठकर राधानगर द्वीप पर पहुंचे जहां सागर तट देखते ही हम सभी मोहित हो गई नीले रंग का पानी और सफेद बिछी रेत जिस पर धीमी गति में रेंगते हुए घोघे और अन्य कई छोटे-छोटे जीव दिखाई दे रहे थे। इन रेंगते जीवों को देखते ही बच्चों को जैसे उनका लक्ष्य मिल गया था और वे सभी इनके पीछे भागने में व्यस्त हो गए थे। सभी बड़े वहां पर पर्यटकों के लिए आकर्षण के रूप में रखे गए कई वाटरस्पोर्ट्स की जानकारी हासिल करने में जुट गए।

वहां पर स्नॉर्कलिंग के बारे में पता चला तो मेरा बेटा और उस समूह में शामिल हमारे लेखा अधिकारी के बेटे ने आपस में बातचीत कर उस वक्त स्नॉर्कलिंग का आनंद उठाने का निर्णय लिया। इतनी दूर आए हैं तो बच्चों को उनके मजे करने से नहीं रोकना चाहिए। हमने स्नॉर्कलिंग के बारे में जानकारी हासिल की और बच्चों को उसका आनंद उठाने के लिए उन्हें भेज दिया।

किसी भी तरह के वाटरस्पोर्ट्स के लिए पहले आपको उनके द्वारा दी जाने वाली विशेष पोशाक पहनना जरूरी होता है फिर उसके बाद उनके द्वारा कुछ उपकरणों का इस्तेमाल करने के संबंध में प्रशिक्षण भी दया जाता है। पहले तो हम भयभीत हुए लेकिन उनके प्रशिक्षकों ने हमें भरोसा दिलाया कि पानी के अंदर जाने के बाद हर एक बच्चे के साथ एक गोताखोर अवश्य रहता है। हमने सोचा कि बार-बार तो हम अंडमान नहीं आएंगे यदि बच्चे साहस दिखा रहे हैं तो हम अपने डर के कारण उन्हें क्यों रोके।

बच्चे उत्सुकता के साथ तैयार होकर उनकी पोशाक पहन कर चल दिए। जब तक बच्चे वापिस नहीं आए हमारी तो सांसें ही अटकी रहीं लेकिन जब वे वापिस आए तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने वहां पानी के अंदर वे मछलियां देखी जिन्हें अब तक केवल मछलीघर या अक्वेरियम में ही देखा करते थे। वहां किनारे पर बैठे-बैठे हम यही सोच रहे थे कि प्रकृति कितनी खूबसूरत है और इंसान इस प्रकृति को अपने स्वार्थ के लिए धीरे-धीरे नष्ट करता जा रहा है। उस द्वीप पर लगभग हमारा आधा दिन बीत गया था। उसके बाद हमें वापिस अपने गंतव्य तक पहुंचना था। क्योंकि फिर से सरकारी जहाज में बैठ कर उसी द्वीप तक पहुंचना था जहां से हम आए थे।



अगले दिन हम सभी रॉस आइलैंड और नॉर्थ बे तक गए। यह वह द्वीप है जहां पर अंग्रेजों के शासनकाल के समय उनके परिवार के सदस्य वहां पर रहते थे। उनको हिरन का मांस खाने का बड़ा शौक था अतः द्वीप पर हिरन पाले गए थे। आज भी उस द्वीप पर हिरन देखने को मिल जाते हैं। जब हम द्वीप पर पहुंचे तो नीले रंग का पानी और विशाल पेड़ों की जड़ों से भरा-पूरा जंगल, अंग्रेजों के समय खड़े किए गए भवन जिन्हें पेड़ों ने चारों तरफ से घेर लिया था, देखकर लगा जैसे हम किसी हॉरर शो के सेट पर हों। वहां पर अंग्रेजों के लिए पीने का पानी तैयार करने मशीनें, उनका क्लब हाउस, उनका चर्च, बच्चों के लिए पार्क और मृत लोगों को दफनाने के लिए शमशान सभी दिखाई दिए। हमने कुछ लोगों को आपस में बात करते सुना कि यह एक हॉन्टेड द्वीप है अतः शाम होने के पहले यहां से सभी चले जाते हैं। पूरा द्वीप घूमने में लगभग 3-4 घंटे लगे। गर्मी और धूप से हम सभी बेहाल हो रहे थे लेकिन वहां पर नारियल पानी के अलावा कुछ भी नहीं था। इतना मीठा नारियल पानी कि क्या कहें। एक नारियल का पानी पिया तो समझो भूख भी मिट गई और प्यास भी। ये सभी द्वीप पर्यटकों के लिए थे लेकिन काफी साफ-सुथरे थे। हमने देखा कि वहां सख्त नियमों का पालन किया जाता है वहां पर कोई खाकर प्लास्टिक या पॉलिथीन का कचरा ऐसे ही कहीं भी नहीं फेंक सकता है। वहां के निवासी भी इस बात का विशेष खयाल रखते के पर्यटक किसी भी स्थान को गंदा न कर सकें। रॉस आइलैंड से निकलकर हम सभी घूमते घूमते एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां बच्चों के लिए एक विशेष पार्क था। बच्चों ने वहां काफी अच्छा समय बिताया और हम सभी वहां पर घूमते घूमते उस स्थान का आनंद लेते हुए कुछ सुस्ताने लगे। कुछ समय वहां बिताते-बिताते शाम हो गई और हम सभी अपने गेस्ट हाउस की ओर वापिस चल दिए। दिन भर की गर्मी और थकान के कारण वापिस पहुंचने पर सभी काफी थके हुए होते और अपने-अपने कमरों में नहा धोकर आराम करने में लग जाते। ऐसी यात्राओं में विशेष बात यह होती है कि आपको खाना पकाने की आवश्यकता नहीं, वो तो बना बनाया मिलता है।



रात के भोजन के समय हमारी अगले दिन की योजना बनती थी। अगले दिन प्रातः 5 बजे ही सभी को तैयार होकर निकलना था क्योंकि हमारी यात्रा एक ऐसे जंगल से होकर लाइमस्टोन गुफाओं की ओर थी जहां पहुंचना चुनौतीपूर्ण था। इन सभी स्थानों पर यात्रा करते हुए हमें कहीं भी दोपहर का खाना खाने का अवसर नहीं मिलता था अतः नारियल पानी या अपने साथ रखे हुए कुछ स्नैक्स पर ही हमें गुजारा करना पड़ता था। सुबह प्रातः निकलने



पर हम सभी को नाशते की चिंता हुई क्योंकि हमारे साथ बच्चे भी थे। वे तो भूख बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। फिर हमें बताया गया कि प्रातः 6 बजे के आसपास हमें जंगल के बाहर जाकर लाइन में लगना होता है और वहां के स्थानीय निवासी पर्यटकों के लिए नाश्ता बनाकर बेचते हैं जो कि 7 या साढ़े सात बजे तक खतम करके फिर हमें जंगल में आगे जाने का रास्ता मिल पाता है। हम सभी को निर्देश दिया गया कि जंगल में प्रवेश करते ही हमें अपने फोन व कैमरे बंद रखने होंगे क्योंकि अगर वहां की जनजाति के लोग हमें उनका फोटो खींचते देख लेते हैं तो भड़क जाते हैं और यात्रियों की बस पर हमला कर बैठते हैं। यहां तक कि अपनी बस के शीशे हटा कर उनकी ओर देखते हुए इशारे करना या उन्हें देखकर हंसने की भी मनाही थी।

यह सब सुनकर किसी फिल्म की कहानी सामने आने लगी जिसमें जंगल से गुजरने वाली बस पर हमला करने वाले जनजाति के लोग उन्हें बंदी बना कर ले जाते हैं और फिर उन्हें पका कर खाने के लिए उनके सामने नाचते हैं। एक भय के साथ हम सभी खामोशी से बस में बैठे रहे और किस्मत का कमाल यह हुआ कि हमारी बस रास्ते में खराब सी होती नजर आई। चलते-चलते अचानक बस में कुछ आवाज होने लगी तो ड्राइवर ने उतर कर देखा मगर कुछ बताया नहीं कि हम लोग डर जाएंगे। लेकिन हम समझ गए थे और हम सभी भयभीत हो गए कि अगर बस रास्ते में रुक गई और स्थानीय जनजाति के लोग आ गए तो हमारा क्या होगा। लेकिन वह एक रोमांचक पल भी था, हमारे बस ड्राइवर ने बताया कि हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, छोटी सी समस्या है जिसे वह संभाल लेगा और हम सभी को अपना ध्यान जंगल की ओर रखना होगा ताकि इधर-उधर घूमते जनजाति के लोग हमें नजर आ जाएं। इन्हें जारवा कहा जाता है।



हमें जारवा प्रजाति के कुछ लोग नजर अवश्य आए लेकिन समय के साथ उनमें भी थोड़े से परिवर्तन दिखे। फिलहाल एक से डेढ़ घंटे का सफर तब खतम हुआ जब हम जंगल के अंतिम छोर पर पहुंचे जहां से हमें एक जेट्टी के द्वारा अगले द्वीप पर जाना था। हम सभी उतर कर यह देख हैरान थे कि लगभग 10 हजार लोग होंगे और सभी उस ओर जेट्टी के द्वारा लाइमस्टोन गुफाएं देखने के लिए जा रहे थे, क्या जहाज इतना बड़ा होगा? जब जहाज आया तो पहले उस तरफ से आने वाले लोग उसमें से उतरे, कई कारें व सामान की गाड़ियां और लोगों के उतरने के बाद इस ओर से लोगों का चढ़ना शुरू हुआ। न जाने हमारे देश में लोग क्यों हर समय जल्द बाजी में रहते हैं। जहाज पर पहले पहुंचे की दौड़ में अचानक धक्का मुक्की शुरू हुई तो मेरी चिंता मेरे 9 वर्षीय बेटे और 64 वर्षीय दीदी की ओर थी कि इस धक्का मुक्की में उन्हें कैसे संभालेंगे। ऐसे में मेरा साथ दिया मेरी सहेली शैलजा ने, उसने और उसकी बेटी ने मेरा हाथ पकड़ कर एक तरह से एक घेरा बनाया और उसके बीच में मेरे बेटे और दीदी को रखते हुए लोगों की धक्कामुक्की से उनके बचाते हुए संघर्ष कर हमने जहाज में पहुंचते ही चैन की सांस ली। लेकिन इस सबके बीच मेरी दीदी के कंधे से उनकी शॉल कहीं गिर गई जिसे उन्होंने सुबह-सुबह की ठेड से बचने के लिए हाथ में लिया था। सभी एक दूसरे को देखकर यह सुनिश्चित कर रहे थे कि हमारे समूह के सभी लोग आ गए हैं या नहीं। खैर हम जब दूसरी ओर जहाज से उतरे तो पता चला कि अब हमें एक छोटी नाव में बैठ कर जाना है जिसके लिए टिकट लेना होता है। लाइन में टिकट लेने के लिए मैं अपने लेखा अधिकारी के साथ वहां पर पहुंची और टिकट एवं टोकन लेकर वापिस आई तब तक पता चला कि सभी लोगों को 2 समूहों में बांट दिया गया है जिसमें मेरा बेटा मेरे साथ नहीं है। वह बड़ा चंचल स्वभाव का है अतः मुझे चिंता होने लगी कि ऐसे कैसे मेरे बेटे को किसी और नाव में और मुझे किसी और नाव में ले जाया जाएगा। किस्मत से मेरे लेखा अधिकारी के बच्चे यानि उसके



दोस्त और मेरी सहेली शैलजा उसकी बेटी के साथ उसी उसी नाव में थे तो मैंने उसकी बेटी से बात करते हुए श्रेयान का ध्यान रखने को कहा, उसे यह भी हिदायत दे दी कि किसी भी कीमत पर श्रेयान का हाथ नहीं छोड़ेगी क्योंकि वह इधर-उधर भागता रहता है। बहरहाल जब तक हम दूसरी ओर नहीं पहुंचे मेरी तो सांसे थम से गई थीं क्योंकि एक तो मेरा बेटा मेरे साथ नहीं और दूसरा पानी से भय के कारण दीदी के भयभीत चेहरे को देख मैं परेशान थी कि कहीं उन्हें कुछ न हो जाए। नाविक बड़ी तेजी



से नाव को चलाता था, मोटरबोट कभी बाएं तो कभी दाएं झुकती थी, मेरी दीदी आंखें बंद करके भगवान का नाम ले रही थी और मेरा ध्यान उस दूसरी नाव पर था जिसमें मेरा बेटा बैठा था। अब हम बारतांग द्वीप पर थे जो गरानों से भरा हुआ होता है। नाव गरानों के बीच पहुंची तो लगा कि न



जाने अब क्या होगा। कहीं किसी पेड़ से लटकता सांप हमारी नाव पर आकर गिरा या कहीं से कोई घड़ियाल आ गया तो, अचानक ही कई अंग्रेजी फिल्मों से दृश्य सामने नजर आने लगे। नाविकों ने हमें यह कह कर सावधान किया कि यहां पर घड़ियाल हो सकते हैं अतः खाने-पीने की चीजें या पॉलिथिन के पैकेटों को पानी में न फेंके। जो भी खाया जाए उसे आप संभाल कर वापिस ले जाएं तथा किनारे पर जाने के बाद वहां रखे गए कचरे के डिब्बों में ही चीजें फेंके। हम सभी डर के मारे अपने बैग पकड़ कर बैठे थे लेकिन खाने पीने का सामान निकाल ही नहीं रहे थे।



नाव से उतर कर गरानों के बीच बने लकड़ी के पुल पर चल कर आगे जाते हैं तो आता है लाइमस्टोन गुफाएं। हम सभी थकान से सराबोर धीरे-धीरे चलते हुए एक गांव के इलाके में पहुंचे। पुराने पेड़ों की फैली हुई विशाल जड़े, ऊबड़ खाबड़ रास्ता जिसमें हम सभी आगे चलते जा रहे थे। कहीं मन में मेरे मुझे अपने बेटे को लेकर चिंता था क्योंकि जिस नाव में मेरा बेटा था वह पहले ही वहां पहुंच चुकी थी और वे सभी लोग आगे बढ़ चले थे। हर थोड़ी दूर पर चलते-चलते मैं अपने बेटे का नाम पुकारती तो मेरे साथ के लोग मुझसे कहते चिंता मत करो वह साथ में ही है। लेकिन मैं कैसे चिंता न करती। वहां पर बिल्कुल सिग्नल भी नहीं थे जो वह इधर उधर हो जाए तो किसी के फोन से मुझसे संपर्क कर सके।

गुफा के पास पहुंचने पर मेरे कानों में उसकी आवाज़ पड़ी तो मेरे मन को शांति मिली। हमारे साथ एक गाईड था, हमारे ही शहर बरेली का रहने वाला वह व्यक्ति रोजी रोटी के चक्कर में अंडमान तक पहुंच गया था। उसने हमें उन गुफाओं के बारे में पूरी जानकारी दी और यह भी बताया कि सुनामी के दौरान इन गुफाओं की हालत और अधिक खराब हो गई। इसके शीर्ष में एक छेद हो गया जिसके कारण गुफाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।



गुफाओं से निकल कर वापिस हम अपने गेस्ट हाउस पहुंचे और अगले दिन हमारी यात्रा आरंभ हुई काला पत्थर बीच और हैवलॉक आइलैंड की ओर जहां पर सागर के किनारे सफेद रेत में खेलते हुए बच्चों ने खूब मस्ती की, जहां पर बड़े भी बच्चे बन गए थे। कुछ घंटे यहां पर बिताने के बाद हम गए हैवलॉक आइलैंड पहुंचे जो स्कूबा डाइविंग के लिए प्रसिद्ध है। मेरे बेटे और उसके मित्र ने पहले ही सोच लिया था कि वे दोनों स्कूबा डाइविंग करेंगे। मैंने अपने बेटे से कई बार पूछा क्या सचमुच वह डाइव करना चाहता है लेकिन वह अडिग था और मुझसे बोला कि चिंता मत करो कुछ नहीं होगा, मेरा दोस्त भी मेरे साथ जा रहा है। मेरे लिए यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं थी। सागर की गहराई में मेरा नन्हा शैतान जो कभी किसी भी निर्देश को ध्यान से नहीं सुनता है, वह इनके प्रशिक्षण निर्देश भला क्या ध्यान से सुनेगा और क्या करेगा। यह तीन घंटे की लंबी प्रक्रिया थी जिसमें सागर के भीतर जाने वाले को डिस्कलेमर देने के साथ-साथ यह भी घोषित करना होता है कि अगर डाइविंग के दौरान कुछ हो जाता है तो यह हमारी ही जिम्मेदारी है। लेकिन, मैं अपने बेटे के साहस के बीच आना नहीं चाहती थी। बस उसके कोच को उसके चंचल स्वभाव से अवगत कराया और अपने बेटे को समझाया कि जो ट्रेनिंग दी जाएगी उस पर ध्यान देना।

मुझे गर्व है कि मेरा बेटा 9 वर्ष की आयु में स्कूबा डाइविंग करके आया और वापिस आने के बाद उसके चेहरे की खुशी का ठिकाना नहीं था। हमारे पूरे खानदान में इतनी कम उम्र में पानी के भीतर जाकर वहां की दुनिया देखने वाला पहला बच्चा। उसने पानी के अंदर का जीवन देखा लेकिन वहां भी अपनी शरारतों से बाज नहीं आया। मृत शैवाल के छेद में अपनी उंगली फंसा दी। मुझे उसके कोच ने बताया कि वह बहुत ही अनुशासित रहा इस पूरे डाइव के दौरान बस एक मृत शैवाल में अपनी उंगली फंसा ली थी।

हमारा यात्रा का यह अंतिम पड़ाव था जिसके बाद हम सभी अपने अपने कमरों में पहुंचे तरोताज़ा होने के बाद हम सभी ने कुछ समय नाच गा कर बिताया क्योंकि वह हमारी इस सुहाने सफर या कहे कि अद्भुत यात्रा का अंतिम दिन था अतः हम सभी महिलाएं एवं बच्चे एक जगह एकत्र होकर नाचे और गाने गाए। अगली ही सुबह पोर्ट ब्लेयर से हैदराबाद की हमारी फ्लाइट थी। हमने अपना सामान रखा और वापिस हैदराबाद के लिए निकल पड़े। मेरी दीदी जिन्हें नाव में बैठने से बड़ा डर लगता है, उन्होंने मोटरबोट, नाव, जहाज सभी में बैठकर अपने डर के आगे जीत हासिल की। साहस, चुनौती, धैर्य और डर के आगे जीत वाले फलसफे के साथ अंडमान की हमारी यह यात्रा बड़ी ही यादगार रही।

मेरा शौक

पद्मा वेंकटेश्वरटन, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

आजकल के तनाव ग्रस्त दिनों में एक जरिया या तरीका होना चाहिए जिससे आप अपने आप को डी-स्ट्रेस कर सकें या तनावमुक्त रख सकें। कोई खेलता है, तो कोई किताबें पढ़ता है या फिर कोई टीवी देखता है। कोई लिखना पसंद करता है तो कई चित्र बनाना पसंद करता है। सबका अपने अपने तरीके से अपनी थकान दूर करने का तरीका होता है। अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करना या उसे एक नया अंदाज देना एक शौक बन सकता है।



कला की कोई उम्र नहीं होती। कला के रूप अलग है। आप कलाकार हो न हो आप चित्र बना सकते हैं। हम कई बार यहीं सोचते हैं कि यह सब बच्चों का काम है और हो सकता है बचपन में हमने किया हो और पसंद भी आया हो, पर अपने काम में इतना व्यस्त रहते हैं कि हमें अपने बारे में सोचने का वक्त नहीं मिलता। पहले हम अपने परिवार वालों के बारे में सोचते हैं और फिर अपने बारे में सोचते हैं। पर अपने लिए भी वक्त निकालना जरूरी है।



मेरा शौक है चित्रकारी या पेंटिंग करना। मुझे जब भी वक्त मिलता है मैं पेंटिंग करती हूँ। इससे मेरी थकान दूर हो जाती है और मुझे सुकून मिलता है। फिर मुझे कुंदन रंगोली बनाने का शौक है। बाजार में कुंदन रंगोली के अर्केलिक आकार मिलते हैं, उस पर कुंदन के बीड़ लगाकर उसे सजावट के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मेरे घर पे एक पुराना चकला था जिसे मैं इस्तेमाल नहीं कर रही थी। उसपर मैंने पेंटिंग किया और उसे एक सजावट की वस्तु का रूप दिया। तो कहिए क्या आप ऐसा ही कुछ करने के लिए प्रेरित हुए क्या?



डॉ. पूंपावै

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, दक्षिण

सपनों का मूल्य

निधि मिश्रा, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद

शायद कोई स्टेशन आने वाला था। चलते चलते ट्रेन की रफ्तार कुछ धीमी हो गयी थी। ट्रेन पर बैठी दिशा ने खिड़की से बाहर देखा शायद कोई कस्बा सा लगता था। नई दिल्ली से चली थी वो देहरादून शताब्दी में। मसूरी जा रही थी, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन में आई ए एस ट्रेनिंग करने के लिए। ट्रेन चलते—चलते रूक गयी। दिशा ने सोचा कि थोड़ा बाहर निकल कर स्टेशन से कुछ खाने के लिए ले लूं। वैसे तो ट्रेन में खाना मिला था पर इसी बहाने वो बाहर देख कर खुश हो जाएगी। अकेले बैठे रहने से तो अच्छा ही है। देखा तो ट्रेन हरिद्वार जंक्शन के पास थी और बाहर काफी हलचल थी। चाय, नाश्ते, कोल्ड ड्रिंक और कई तरह के स्टाल के बीच अचानक ही उसकी निगाह एक छोटे से बच्चे पर आकर ठहर गयी जो अपनी माँ के साथ भुट्टे के ठेले पर खड़े होकर जोर-जोर से बोल रहा था, पांच का एक, पांच का एक, आइए आइए भुना हुआ भी खाइये बीस रूपए में। और उसकी माँ आने वाले ग्राहकों को भट्टी में से भुने भुट्टे निकाल कर दे रही थी।



अचानक ही दिशा न जाने क्यों मुस्करा दी। उस बच्चे को 20 का नोट देकर भुना हुआ भुट्टा खरीदा और ट्रेन में अंदर आकर अपनी सीट पर बैठ गयी। ट्रेन चल दी और शताब्दी ट्रेन की तेज गति के साथ उसका दिमाग भी आखिर इंसान की असली कीमत—भी तो परिस्थितियों की आग में तप कर ही पता चलती है। ऐसा ही कुछ उसके साथ भी तो हुआ था। चलती ट्रेन के साथ वह अपने भूतकाल में लौट गयी। जहां वह अपने पापा की साइकिल पर बैठ कर उनके साथ अपने स्कूल जाया करती थी। अचानक इतनी यादें एक पके हुए भुट्टे के साथ.....उसे याद आयी बचपन की वो सुनहरी यादें जो उसने आईएएस की तैयारी के समय, समय के डब्बे में बंद कर दी थी, आज अचानक से वो सब खुल गया। जीवन के संघर्षों में वो इतनी आगे चली आयी कि लगा अभी तो ये सब बीता ही है।

दिशा एक साधारण परिवार की लड़की थी। माता-पिता दोनों ही बहुत सज्जन स्वभाव के थे। पिताजी साधारण सी नौकरी करते थे और आय बस इतनी कि कुछ भी भविष्य के लिए बच नहीं पाता था। फिर भी दिशा को अच्छे स्कूल में दाखिला कराया। अकेली लड़की थी वो अपना माँ पिता की आंख का तारा बन कर रहती थी। माँ घर संभालती और दिशा की परवरिश में अपना समय व्यतीत करती। पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। पिताजी नहीं रहे। माँ को पिताजी का स्थान लेना पड़ा। सरकारी कोटे से उनको नौकरी मिल गयी पर दिशा को उनका सहारा बनना पड़ा। स्कूल से आकर सारा काम अपने आप करना। घर पर माँ का ध्यान रखना, 10 साल की छोटी दिशा के लिए कितना कठिन रहा होगा। रात को जब माँ थक कर सोती तो वो अपने टेबिल लैम्प में किताब के आगे सारी रात निकाल देती। पढ़ाई में अच्छी दिशा को कक्षा आठ में जब स्कॉलरशिप मिली तो उसे लगा शायद इसी तरह वो अपनी माँ की आर्थिक सहायता कर सकती है। दसवीं और बारहवीं तक अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के बाद आगे की पढ़ाई की समस्या आयी। भगवान भी कितनी परीक्षा लेता है, डॉक्टर बनना चाहती थी और पहले प्रयास में सीपीएमटी की परीक्षा पास नहीं कर पायी। तैयारी कैसे करेगी, फीस कैसे देगी कॉलेज की। अचानक ही उसे ख्याल आया कि छोटे बच्चों को पढ़ा कर अपनी किताबों का इंतजाम कर पाएगी। फिर रही मेडिकल कॉलेज की फीस तो बैंक लोन के लिए कोशिश करेगी। देखते ही देखते एक साल बीत गया दुबारा प्रयास में वह परीक्षा उत्तीर्ण हो गयी। ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में दाखिला मिला और देखते ही देखते पांच साल जाने कहां चले गए। माँ नौकरी से रिटायर हो गयी। वह दिल्ली में इंटरशिप कर रही थी। माँ को गांव से अपने पास ले आयी। पढ़ाई पूरी करने के बाद मेडिकल कॉलेज में उसकी नौकरी लग गयी। फिर भी मन जाने क्यों बेचैन रहता था। शायद उसे अपने जीवन के लक्ष्य नहीं मिले थे। नौकरी के साथ सिविल सर्विस की तैयारी की जो बहुत ही मुश्किल था। पर पहले प्रयास में ही उसने परीक्षा पास कर ली थी। उसे काफी मेहनत और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा पर इन कठिनाइयों की आग ने उसे पका दिया था।

आज ट्रेन पर बैठ कर जैसे यादों का पिटारा खुल गया था। अचानक उसका ध्यान टूटा ट्रेन में की जाने वाली घोषणा से कि नैनीताल आने वाला है। यहीं अंतिम स्टेशन था। वो अपना बैग उतारने लगी, आगे आने वाली चुनौतियों के पास जाने के लिए उस भुट्टे से याद आयी जिन्दगी की चुनौतियां जिन यादों को कैद करके वो बढ़ गयी। आने वाले सुनहरे भविष्य की खोज में.....

पाठकों के पत्र.....

केन्द्रीय विद्यालय बोवैनपल्ली
KENDRIYA VIDYALAYA BOWENPALLY
Date: 09/03/2020

विषय : विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिता में सहभागिता देने के लिए धन्यवाद ।

उपरोक्त विषय के अनुसार केन्द्रीय विद्यालय बोवैनपल्ली के छात्रों ने इससे द्वारा आयोजित दिनांक 10.12.2019 को विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर विभिन्न प्रतियोगिता में सहभाग लिया। इस प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय के छात्रों को जो आपने अवसर दिया उसके लिए मैं तहे दिल से चुनिंदा आभार करना चाहता हूँ।

साथ ही साथ आपने के.वी. बोवैनपल्ली के छात्रों को विज्ञान परदरती का दर्शन करवाया इसके कारण छात्रों में वैज्ञानिक कोशिल का विकास हुआ, इस अवसर के लिए भी मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ।

"संवाद" नामक तकनीकी पत्रिका का अंक भी हमें भेजा। आपने जो अवसर हमारे विद्यालय के छात्रों को दिया निश्चित रूप से विद्यालय के छात्र उससे लाभान्वित होंगे।

भविष्य में ऐसी प्रतियोगिताओं आयोजन होगा तो विद्यालय के छात्र उसमें बड़ी उत्सुक के साथ भाग लेंगे।

पुनः एक बार मैं विद्यालय की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूँ ।

सधन्यवाद ।

अवधीय
एन. अंजुमोली
(एन. अंजुमोली)
केन्द्रीय विद्यालय बोवैनपल्ली
विद्यालय Secunderabad-500 011

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
अंबावाड़ी विस्तार इकाई
अहमदाबाद - 380015 (भारत)
ई-मेल: neelu@ac.isro.gov.in

Government of India
Department of Space
Space Applications Center
Ambawadi Vistar Post Office
Ahmedabad - 380 015 (India)
फोन: 079-26913280

सं.अंतरिक्षिका/7.4/20
दिनांक 20, 2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
बालानगर, हैदराबाद-500 037

विषय: एनआरएससी गृह पत्रिका संवाद के तकनीकी अंक-2020 की प्रतिलि. कें संबंध में

महोदया,

आपके दिनांक 28 फरवरी, 2020 के पत्र सं.एनआरएससी-ए.5.9 (विधिव) के साथ आपके कार्यालय से एनआरएससी गृह पत्रिका संवाद के तकनीकी अंक-2020 की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सजजा बहुत सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी तकनीकी लेख उपयोगी एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेख काफी उच्च कोटि के हैं। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक माह की अवधि के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना करने के लिए अभिनंदन।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

धन्यवाद,

नीलमोली
(नीलमोली)
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
द्रव मोदन प्रणाली केंद्र
80 फीट रोड, एन.ए.ए. स्टेज, एच.पी.ओ.
बेंगलूर - 560 008, भारत

Government of India
Department of Space
Liquid Propulsion Systems Centre
80 Feet Road, H.A.L. Ind Stage, H.P.O.,
Bangalore - 560 008, INDIA

दिनांक: 12/52-35/2020-भावसाप्र
दिनांक: मार्च 16, 2020

सेवा में:
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना
हिंदी अधिकारी
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
बालानगर, हैदराबाद

महोदया,

एनआरएससी की हिंदी गृह-पत्रिका "संवाद" के तकनीकी अंक-2020 की प्रति प्राप्त हुई। इसमें प्रकाशित तकनीकी लेख काफी सराहनीय हैं। नए अंक के लिए आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

सादर ।

भवदीया,
अमणि शर्मा
(अमणि शर्मा)
वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
इसरो लिमिटेड
Indian Space Research Organisation

26016

एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड
ANTRIX CORPORATION LIMITED
(A Government of India Company Under Department of Space)
सं.अंतरिक्ष/10/13(हि)
13 मार्च 2020

सेवा में,
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना
हिंदी अधिकारी
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
बालानगर
हैदराबाद - 500 037

विषय: "संवाद के तकनीकी अंक 2020" की प्रतिलि ।

महोदया,

कृपया दिनांक 28 फरवरी, 2020 के अपने पत्र सं. एनआरएससी-ए.5.9 (विधिव) का संदर्भ लें।

- आपके कार्यालय द्वारा भेजित गृह पत्रिका "संवाद के तकनीकी अंक 2020" की दो प्रतियां हमें मिली हैं।
- संवाद के इस अंक में हिन्दी में लिखे गए समस्त तकनीकी लेख सुव्यवस्थित एवं उपयोगी हैं। साथ ही, पत्रिका पृष्ठ अत्यंत विश्व हिन्दी दिवस पर समर्पित दिवस के अतिरिक्त पृष्ठ भी राजभाषा के प्रचार-व्यार के लिए किए जा रहे सराहनीय प्रयास की बखानी हैं।
- गृह पत्रिका राजभाषा को समर्पित है। हम आशा करते हैं कि संवाद का अगला अंक भी इसी तरह सुव्यवस्थित एवं उपयोगी होगा।
- संपादकमंडल के समस्त सदस्यों एवं रचनाकारों को उनके सहयोगी योगदान के लिए धन्यवाद।

सादर ।

अवधीय,
एन. अंजुमोली
(एन. अंजुमोली)
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सं. अंतरिक्ष/2019/हि
भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

अंतरिक्ष सचिव,
यू.पी.ई.ए.ए. रोड,
बेंगलूर - 560 094
10 मार्च 2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र,
हैदराबाद-500 037

महोदया,

विषय: एनआरएससी की गृह पत्रिका "संवाद" के तकनीकी अंक - 2020 के प्रेषण संबंधी पाठकी

उपरोक्त विषय पर दिनांक: 28/02/2020 के पत्रांक सं.एन.आर.एस.सी.-ए.5.9 (विधिव) द्वारा भेजित "संवाद" के तकनीकी अंक - 2020 की प्रति कार्यालय को प्राप्त हुई है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

"संवाद" के इस अंक में प्रकाशित सामग्री को "कलम" - एक आदर्श वाक्य अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और चुनिंदा बचत रही है। भारतीय-एन आरएससी द्वारा प्रकाशित सभी तकनीकी विषयों पर पत्रिका में अधिकतम विषयों को समाहित करने का भारतीय प्रयास किया गया है और यह सभी लेख सामग्री में संवाद के अंक में ही प्रकाशित करने का सुव्यवस्थापन किया गया है।

इस पत्रिका को सुध में सुध रूप प्रदान करने वाले सभी कर्मियों का अभिनंदन जाता है कि भविष्य में भी अपने उच्च स्तरी के साहस में "संवाद" पत्रिका उपरोक्त प्रगति करती रहेगी।

सुप्रसन्नताओं सहित।

अवधीय,
(अ. अंजुमोली)
हिंदी अधिकारी

हमारे पाठकों द्वारा प्रेषित पत्रों में से कुछ चुनिंदा पत्र जो संवाद के प्रकाशन का संवर्धन करने में हमारा उत्साह बढ़ाते हैं.....



राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद - 500037

www.nrsc.gov.in